₹ 20

www.kewalsach.com

निर्भीकता हमारी पहचान

मार्च 2020

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

RNI NO.- BIHHIN/2006/18131, DAVP NO.-129888, POSTAL REG. NO. :- PT.-35

कोरोना वायरस विकराल दुनियां में आपातकाल

कार्यालय नगर परिषद् दानापुर निजामत

की ओर से नगरवासियों को होली एवं रामनवमी की हार्दिक शुभकामनाएँ।

अपील

- वर्तमान वर्ष (2019-20) एवं बकाया होल्डिंग टैक्स (संपत्ति कर) का भुगतान 31 मार्च 2020 से पूर्व निश्चित रूप से करें।
- नगर परिषद् दानापुर द्वारा नक्शा पास होने के बाद ही मकान का निर्माण करें।
- सड़क के किनारे/सार्वजनिक स्थल पर बालु/मिट्टी जमा नहीं करें।
- घर का कूड़ा-कचड़ा निर्धारित स्थल पर ही डालें।
- प्लास्टिक बैग/पोलिथिन का उपयोग न करें।
- दानापुर शहर को स्वच्छ सुन्दर एवं स्वस्थ्य बनाने में सहयोग करें।

डॉ. अनु कुमारी
मुख्य पार्षद
नगर परिषद् दानापुर निजामत

राजकिशोर सिंह
उपमुख्य पार्षद
नगर परिषद् दानापुर निजामत

संजीव कुमार
कार्यपालक पदाधिकारी
नगर परिषद् दानापुर निजामत

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

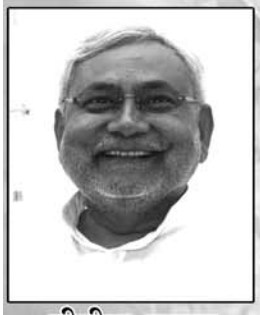

नीतीश कुमार
01 मार्च 1951

मेरी कॉम
01 मार्च 1983

शंकर महादेवन
03 मार्च 1967

शिवराज सिंह चौहान
05 मार्च 1959

अनुपम खेर
07 मार्च 1955

नवीन जिंदल
09 मार्च 1970

उमर अब्दुल्लाह
10 मार्च 1970

श्रेया घोषाल
12 मार्च 1984

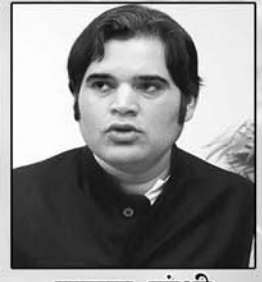

वरूण गांधी
13 मार्च 1980

अमीर खान
14 मार्च 1965

हनी सिंह
15 मार्च 1984

राजपाल यादव
16 मार्च 1971

सानिया नेहवाल
17 मार्च 1990

रानी मुखर्जी
21 मार्च 1978

स्मृति जुबैद ईरानी
23 मार्च 1976

इमरान हाशमी
24 मार्च 1979

मधु
26 मार्च 1972

प्रकाश राज
26 मार्च 1965

शीला दीक्षित
31 मार्च 1938

मीरा कुमार
31 मार्च 1945

निर्भीकता हमारी पहचान

www.kewalsach.com

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

Regd. Office :-
East Ashok, Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar) Mob.-09431073769,
E-mail :- kewalsach@gmail.com

Corporate Office:-
Riya Plaza, Flat No.-303, Kokar Chowk, Ranchi-834001 (Jharkhand)
Mob.- 09955077308,
E-mail:-
editor.kstimes@rediffmail.com

Delhi Office :-
Sanjay Kumar Sinha
A-68, 1st Floor, Nageshwar talla, Shastri Nagar, New Delhi-110052
Mob.- 09868700991, 09955077308
kewalsach_times@rediffmail.com

Kolkata Office :-
Ajeet Kumar Dube,
131 Chitranjan Avenue, Near- md. Ali Park, Kolkata- 700073 (West Bengal)
Mob.- 09433567880, 09339740757

Advertisement Rates Per Issue

COLOUR

AREA	FULL PAGE	HALF PAGE	Qr. PAGE
Cover Page	5,00,000/-	N/A	N/A
Back Page	1,60,000/-	N/A	N/A
Back Inside	1, 00000/-	60,000/-	35000
Back Inner	90,000/-	50,000/-	30000
Middle	1,50,000/-	N/A	N/A
Front Inside	1, 00000/-	60,000/-	40000
Front Inner	90,000/-	50,000/-	30000

B & W

AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
Inner Page	60,000/-	35,000/-

1. एक साल के नियमित विज्ञापन पर पत्रिका के वेवसाइट **www.kewalsach.com** के फ्रंट पर भी विज्ञापन निःशुल्क तथा आपका वेवसाइट से सीधा लिंक हो सकता है।
2. एक साल के नियमित विज्ञापन पर 10 प्रतिशत की रियायत।
3. आपके प्रोडक्ट या संगठन के प्रचार-प्रसार हेतु आलेख को उचित स्थान।
4. पत्रिका द्वारा सामाजिक कार्य में आपके संगठन/प्रोडक्ट का बैनर/फ्लैक्स को उचित स्थान देकर आपके संगठन का व्यापक प्रचार-प्रसार।
5. विज्ञापन का भुगतान चेक या आर.टी.जी.एस. से ही मान्य होगा।

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

फाँसी, तब भी नहीं रुकता गैंगरेप

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

कोख की सुरक्षा करने के बाद ही भगवान का आशीर्वाद से किसी के घर में किलकारी गूंजती है लेकिन वही बेटी का गैंगरेप हो तो वह किलकारी चीख में बदल जाती है। स्त्री एवं पुरूष का अद्भुत व्यक्तित्व को कुछेक दरींदों एवं राजनीतिक, प्रशासनिक गंदी राजनीति की वजह से आज देश एवं किसी भी प्रदेश में बेटियां सुरक्षित नहीं दिखती। पुलिस की तमाम चौकसी एवं महिला सशक्तिकरण के बाद भी भारत की बेटी की अस्मत खतरे में हैं और न्यायालय में गैंगरेप और दर्दनाक हत्या का भी राजनीति इसी देश में हो रहा है, जैसा कभी भगवान श्रीकृष्ण के कार्यकाल द्वापर में हुआ था और उसके बाद के महाभारत की कहानी सभी जानते हैं। देश की राजधानी देशवासियों के विकास एवं सुरक्षा के लिए नित्य नये कानून बनाकर उसपर काम करना चाहता है परन्तु गैंगरेप एवं उससे बचने के लिए दरिन्दों के द्वारा पीड़िता की दर्दनाक हत्या देश के कानून व्यवस्था पर से विश्वास उठ जाता है जैसा वातावरण बन चुका है। वर्ष 2012 में पूरा देश निर्भया गैंगरेप एवं उसकी दर्दनाक मौत का मातम मनाता रहा है और उसको न्याय दिलाने के लिए देश के सभी प्रदेशों में आन्दोलन हुए एवं बलात्कार करने वाले दोषियों को फाँसी की सजा सुनाने का कानून बनने की कोशिश की गयी। अनादि काल से महिलाओं की अबला कहकर नारी सम्मान की बात करने से महिला दिवस की सार्थकता नहीं सिद्ध होगी बल्कि घटना के बाद त्वरित न्याय इस दिवस के महत्व को बरकरार रख सकती है। 2012 दिल्ली सामूहिक बलात्कार मामला भारत की राजधानी दिल्ली में 16 दिसम्बर 2012 को हुई एक गैंगरेप तथा दर्दनाक हत्या की घटना जो संचार माध्यम के त्वरित हस्तक्षेप के कारण मजबूती से प्रकाश में आयी। 30 दिसम्बर 2012 को पीड़िता का शव दिल्ली पुलिस की सुरक्षा में जला दिया गया। पूरी घटना सोशल मीडिया में ट्वीटर, फेसबुक आदि पर काफी कुछ लिखा गया। इस घटना के विरोध में पूरे देश में उग्र व शान्तिपूर्ण प्रदर्शन हुए जिसमें नई दिल्ली, कलकत्ता और बंगलौर में हुए प्रदर्शनों उल्लेखनीय हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि नई दिल्ली में यौन अपराधों की दर अन्य मैट्रोपॉलिटन शहरों के मुकाबले सर्वाधिक (प्रति 18 घण्टे पर लगभग एक बलात्कार) है। इससे पूर्व भारत की एक मात्र महिला राष्ट्पति प्रतिभा पाटिल सुप्रीम कोर्ट द्वारा बलात्कार के पाँच मामलों में दी गयी फाँसी की सजा को माफ करके उम्रकैद में बदल चुकी हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इसकी घोर निन्दा हुई। ऐसे में महिला दिवस का जश्न मनाने का क्या मतलब? क्या महिलाएं सिर्फ भोग की वस्तु बनकर रह गयी हैं, इस देश में? गैंगरेप एक अलग समस्या हैं लेकिन गैंगरेप के बाद पीड़िता को जिस प्रकार का दर्दनाक मौत देकर साक्ष्य मिटाने का जघन्य अपराध होना दूसरी मानसिकता है। आखिरकार गैंगरेप या रेप जैसे कृत्य करने वालों के भीतर कानून का भय क्यों नहीं है? 14 सितम्बर 2013 को इस मामले के लिये विशेष तौर पर गठित त्वरित अदालत ने चारो वयस्क दोषियों को फाँसी की सजा सुनायी। 2020 का प्रथम माह भी समाप्त हो गया और वह दरिन्दे सरकारी दामाद बने बैठे हैं क्योंकि कुछ उनके (ससुर) गंदी राजनीति करने वाले नेताओं की मेहरबानी है। वहीं 27 नवम्बर 2019 में तेलागना राज्य में पशु चिकित्सक प्रियंका रेड्डी के साथ भी निर्भया की तरह गैंगरेप हुआ और जिन्दा जलाया दिया गया। तेलांगना के हैदराबाद शादनगर में पुलिस ने इस गैंगरेप एवं दर्दनाक मौत का तांडव करने वाले 05 हैवानों को 06 दिसम्बर 2019 को इनकाउंटर में मार गिराकर त्वरित न्याय का नयी मिसाल पेश की जिसकी सोशल मीडिया पर जमकर तारिफ हुई तो दूसरी तरफ ऑफ द रिकार्ड में न्याय के पंडित भी उचित ठहरा रहे थे। काफी प्रचारित एवं निर्भया एवं प्रियंका रेड्डी की तरह हुए बलात्कार जिसमें बदायू में, उन्नाव में, झारखण्ड में, बिहार के बक्सर में, पटना के पाटलीपुत्रा कॉलोनी में गैंगरेप की घटना की वजह से जहां पुलिस एवं न्यायपालिका से विश्वास उठ रहा है वहीं तेलागना पुलिस की गैंगरेप करने वालों का इंकाउंटर जैसी कार्रवाई को महत्व देने पर जोर दिया जा रहा है। आरोपी की पुष्टि होते ही उनको सरकारी दामाद बनाकर मुफ्त की जेल मैनुअल जैसी सुविधा देकर उनका हौसला बढ़ाने के बजाय त्वरित समय में न्याय मिलने के बाद ही ऐसे हैवानों में डर बनेगा अन्यथा कानून का कितना सममान एवं उसमें आस्था है, एक के बाद एक घटनाओं ने साबित कर दिया है। देश एवं राज्य की सरकार को आदर्श कारा का नाम बदलकर दंड कारा रखना होगा जहां जेल मैनुअल के हिसाब से उसको दंड भी मिले जिसका भय उसको सदैव याद रहे अन्यथा जेल मैनुअल में बंद कैदियों को सप्ताह के हिसाब से खाने की समुचित व्यवस्था है जिसकी वजह से इनको इनकी करनी का दंड का एहसास नहीं होता। महिला दिवस को वास्तव में एक पर्व की तरह मनाना है तो हमारी सरकारों एवं पुलिस एवं न्याय व्यवस्था को ठोस कदम उठाना होगा जिससे ऐसे दुष्टों को कानून से भय लगे अन्यथा गाजर-मूली की तरह गैंगरेप एवं दर्दनाक मौत का खेल यूं ही चलता रहेगा भले ही पीड़िता का नाम व चेहरा बदल जाये और आप महिला दिवस मनाते रह जायेंगे।

फाँसी की सजा गैंगरेप के मामले में सुनाने का कानून बनने के बाद भी देश में गैंगरेप और उसके बाद पीड़िता की दर्दनाक हत्या का दौर थमने का नाम ही नहीं लेता लेकिन 08 मार्च को महिला सशक्तिकरण पर सरकार के मद्द से करोड़ों-करोड़ रूपये खर्च हो जायेंगे क्योंकि 08 मार्च को महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। बड़े से बड़े राजनेता, पदाधिकारी एवं समाजिक विचारक एवं पत्रकार लम्बी-लम्बी दलील देकर महिलाओं को खुश कर देते हैं लेकिन जब गैंगरेप की घटना के आरोपी को फाँसी की सुप्रीम कोर्ट की सजा पर भी राजनीति होने लगे तो कानून खुद मजाक बन जाता है और निर्भया के मामले में ऐसा ही होता अब तक दिख रहा है। जब देश का सर्वोच्च न्यायालय ने फाँसी का फैसला ही नहीं तिथि की घोषणा तक कर दी फिर दिल्ली की सरकार ने दया याचिका का हवाला दे दिया। क्या ऐसे होगा न्याय? या जिस प्रकार तेलांगना में प्रियंका रेड्डी गैंगरेप के दुष्टों का वध करके किया गया? महिला दिवस सिर्फ चंद घंटों का पुरूषों के द्वारा सम्मान और फिर वही आतंक, ऐसे में महिला दिवस की गंदी राजनीति से कुछ नहीं होने वाला है। देश की राजधानी दिल्ली द्वापरयुग में इंद्रप्रस्थ की राजधानी थी जहां 05 बलशाली पति के सामने द्रौपदी का चिरहरण हुआ था और अत्याचार करने वाले का सर्वनाश हुआ था लेकिन महाभारत के समय में भी राजा मूकदर्शक था सत्ता के लिए और आज भी। जिस दिल्ली में महिलाओं का चीरहरण होता रहे और संसद एवं दिल्ली विधानसभा में महिला सशक्तिकरण का बिल पास हो और उनके सम्मान में राजनीति होती रहे परन्तु गैंगरेप की घटना महिला दिवस के अवसर को.....

अनिश मिश्र

फरवरी 2020

आपको केवल सच पत्रिका कैसी लगी तथा इसमें कौन-कौन सी खामियाँ हैं, अपने सुझाव के साथ हमारा मार्गदर्शन करें। आपका पत्र ही हमारा बल है। हम आपके सलाह को संजीवनी बूटी समझेंगे।

केवल सच

हमारा पता है :-

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
द्वारा:- ब्रजेश मिश्र
पूर्वी अशोक नगर, रोड़ नं.- 14, मकान संख्या- 14/28
कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
फोन:- 9431073769, 9955077308
kewalsach@gmail.com,
editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

हमारा ई-मेल

कोरोना का कहर

संपादक जी,

चीन हमेशा समस्या ही उत्पन्न करता है जैसा माहौल ''कोरोना का कहर'' आलेख में ललन कुमार प्रसाद ने पूरी समस्या को पूर्णरूपेण बेबाकी के साथ लिखा है और ऐसे ज्वलंत समस्या पर केवल सच पत्रिका सही में मुल्यांकन करते हुए इस खबर में इस बीमारी का उचित ईलाज को भी फोकस किया गया है। ललन कुमार प्रसाद की कोई भी खबर समाज के लिए मील का पत्थर साबित होगा। मुझे यह खबर बहुत उचित एवं जानकारीप्रद लगा।

✦ **संतोष साह, लहेरियासराय चौक, दरभंगा**

केजरीवाल

ब्रजेश जी,

फरवरी 2020 अंक में संजय कुमार सिन्हा ने दिल्ली विधानसभा चुनाव पर ''तीसरी बार शपथ लेने वाले दूसरे मुख्यमंत्री बने केजरीवाल'' सटीक खबर लगी। दिल्ली चुनाव में राजनीतिक बयानबाजी से लेकर दिल्ली सरकार के प्रयास को भी बखूबी लिखा गया है। इसी अंक में जेएनयू की भी खबर मुझे अच्छी लगी। ''जेएनयू देश को कब तक गलत दिशा देगी'' खबर में भी शिक्षण संस्थान के हालात पर तलख टिप्पणी भरा खबर पढ़ने योग्य है।

✦ **गोपाल कृष्ण, लक्ष्मी नगर, नई दिल्ली**

साक्षात्कार

मिश्रा जी,

फरवरी 2020 अंक में पत्रकार अमित कुमार, श्रीधर पाण्डेय एवं अविनाश कुमार सहित पूनम जयसवाल का साक्षात्कार पढ़ा और पदाधिकारियों का उत्तर को भी पढ़ा, बहुत उत्साहवर्द्धन करने वाला खबर है। साक्षात्कार से पत्रिका का वजूद भी कायम होता है तथा प्रश्नों की सूची भी पत्रकारिता के मिजाज को भी बताता है। इस प्रकार का खबर एवं साक्षात्कार से पत्रिका का बाजार बहुत मजबूत होता है और पदाधिकारी, राजनेता एवं शिक्षा से जुड़े लोगों का साक्षात्कार वास्तव में युवाओं में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है। सभी साक्षात्कार सटीक लगे।

✦ **कुलदीप शर्मा, श्याम बाजार, कोलकाता**

अब कैसी आजादी!

संपादक जी,

मैं केवल सच पत्रिका का स्थायी पाठक हूं और सभी अंक का अध्ययन करता हूं। फरवरी 2020 अंक में प्रकाशित संपादकीय ''अब कैसी आजादी!'' शीर्षक में आपने वर्त्तमान समय में चल रहे राजनीति के साथ हो रहे प्रचार पर सटीक कटाक्ष भरा खबर पाठकों के समक्ष रखा है। आरक्षण एवं एससी/एसटी एक्ट पर भी अपने आलेख में सही चित्रण किया है तथा आजादी मांगने वाले राजनेताओं को आलेख में बहुत ही बेबाकी से लिखा है। यह संपादकीय सही मायने में पाठकों को आंख खोलने वाला है और एक एक शब्द केवल सच है।

✦ **प्रेमशंकर सिंह, अशोक नगर, राँची**

निर्भया

ब्रजेश जी,

दिल्ली का निर्भया गैंगरेप की घटना ने पूरे देश को हिल्लाकर रख दिया था। फांसी की सजा होने के बाद भी कई वर्ष बीत गये लेकिन मामला इधर से उधर भटकता जा रहा है जिसकी वजह से आरोपियों का मनोबल बढ़ता जा रहा है। तेलागना का प्रियंका का गैंगरेप के बाद की कार्रवाई का आमलोगों का सपोर्ट मिलना यह साबित करता है की न्यायपालिका कहीं न कहीं मामले को विवाद के घेरे में डालती है। निर्भया का मामला पर अमित की खबर वास्तव में समाज को कई विषयों पर सोचने पर मजबूर करती है। ऐसी घटनाओं ने कानून को कटघरे में करता है।

✦ **जितेन्द्र कौशिक, पालम हवाई अड्डा दिल्ली**

कश्मीर

मिश्रा जी,

फरवरी 2020 अंक के केवल सच पत्रिका में ललन कुमार प्रसाद की खबर ''भारत में एक नहीं कई कश्मीर'' में शाहीनबाग का मामला से लेकर अन्य कई गंभीर मामले पर प्रकाश डालने का काम किया है। ललन कुमार की यह खबर वास्तव में सरकार एवं समाज के लिए चुनौतीपूर्ण है तथा ऐसे ही मामले को उजागर करना पत्रकारिता का मूल सिद्धांन्त है। यह खबर पढ़ने के बाद डर भी लगता है की पूरे देश में क्या माहौल व्याप्त है और जिस प्रकार राजनीतिक वातावरण कायम है उससे चिन्ता भी बढ़ता है। इस खबर में सरकार को भी सावधान करता है। सटीक है।

✦ **दिलीप सिंह, टावर चौक, दरभंगा**

अन्दर के पन्नों में

RNI No.- BIHHIN/2006/18181, DAVP No.- 129888

समृद्ध भारत खुशहाल भारत

निर्भीकता हमारी पहचान

केवल सच

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष:- 14 अंक:- 167 माह:- मार्च 2020, मूल्य:- 20/- रू

फाउंडर

गोपाल मिश्र **0612/2362784**

संपादक

ब्रजेश मिश्र

09431073769

09955077308 08340360961

editor.kstimes@rediffmail.com

kewalsach@gmail.com

प्रधान संपादक

सच्चिदानन्द मिश्र 09431878843

संपादकीय सलाहकार

अमिताभ रंजन मिश्र 09430888060, 08873004350

अमोद कुमार 09431075402

महाप्रबंधक

त्रिलोकी नाथ प्रसाद 09308815605, 09122003000

triloki.kewalsach@gmail.com

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

पूनम जयसवाल 9430000482, 9798874154

रीता सिंह 7004100454, 9308729879

मनीष कुमार कमलिया 9934964551, 8809888819

उपसंपादक

शिवचन्द्र झा 7488742471, 8521329144

अरबिन्द मिश्रा 9934227532, 9576438501

अजित कुमार त्रिपाठी 9430826676, 9294942868

संयुक्त संपादक

अमित कुमार 'गुड्डू' 9905244479, 7979075212

amit.kewalsach@gmail.com

राजीव कुमार शुक्ला 9430049782, 7488290565

प्रदीप कुमार सिन्हा 9472589853, 6204674225

सहायक संपादक

शशि रंजन सिंह 8210772610, 9431253179

मिथिलेश कुमार 9934021022, 9431410833

रामपाल प्रसाद वर्मा 9939086809, 7079501106

संजीव रंजन तिवारी 9430915909

कृष्ण कुमार चंचल 9430520291, 7870421678

संदीप स्नेह 9971679857, 9667977987

रविन्द्र कुमार सिंह 7004238997, 9576084702

समाचार प्रबंधक

सुधीर कुमार मिश्र 09608010907

ब्यूरो-इन-चीफ

संकेत कुमार झा 9386901616, 7762089203

ललन कुमार 9430243587, 9334813587

बिनय भूषण झा 9473035808, 8229070426

विधि सलाहकार

शिवानन्द गिरि 09308454485

रणविजय सिंह यादव 09334612716, 09801111138

रवि कुमार पाण्डेय 09507712014

चीफ क्राइम ब्यूरो

प्रिया सिंह मौर्य 7764062233

गगन कुमार मिश्र 8210810032, 9835585560

साज-सज्जा प्रबंधक

अमित कुमार 09905244479

कार्यालय संवाददाता

सोनू यादव 08002647553, 09060359115

प्रसार प्रतिनिधि

कुणाल कुमार 09905203164

झारखण्ड सहायक संपादक

ब्रजेश मिश्रा 7654122344, 7979769647

अभिजीत दीप 7004274675, 9430192929

झारखण्ड स्टेट ब्यूरो चीफ

ब्रजेश कुमार मिश्र 9431950636, 9631490205

झारखण्ड प्रदेश जिला ब्यूरो

राँची	:-	अभिषेक मिश्र	09431732481
साहेबगंज	:-	अनंत मोहन यादव	09546624444
खूँटी	:-		
जमशेदपुर	:-		
हजारीबाग	:-	शैलेश मेहता	09973027485
जामताड़ा	:-		
दुमका	:-		
देवघर	:-		
धनबाद	:-		
बोकारो	:-	विनय कुमार सिंह	07903166519
रामगढ़	:-	दिव्य प्रकाश सिंह	08227979999
चाईबासा	:-		
कोडरमा	:-		
गिरीडीह	:-		
चतरा	:-	धीरज ठाकुर	09430353639
लातेहार	:-	रविकांत पासवान	09801637947
गोड्डा	:-		
गुमला	:-		
पलामू	:-		
गढ़वा	:-		
पाकुड़	:-		
सरायकेला	:-		
सिमडेगा	:-		
लोहरदगा	:-		

बिहार प्रदेश जिला ब्यूरो

पटना (श०)	:-	श्रीधर पाण्डेय	09470709185
(म०)	:-		
(ग्रा०)	:-		
भोजपुर	:-		
बक्सर	:-	बिन्ध्याचल सिंह	8935909034
कैमूर	:-		
रोहतास	:-	अशोक कुमार सिंह	7739706506
	:-		
गया (श०)	:-		
(ग्रा०)	:-		
औरंगाबाद	:-	मयंक कुमार	9852569398
जहानाबाद	:-	नवीन कुमार रौशन	9934039939
अरवल	:-	संतोष कुमार मिश्रा	9934248543
नालन्दा	:-	ललन प्रसाद	6299793069
	:-		
नवादा	:-	अमित कुमार	9934706928
	:-		
मुंगेर	:-		
लखीसराय	:-		
शेखपुरा	:-	रवि शंकर कुमार	6204758273
बेगूसराय	:-	निलेश कुमार	9113384406
	:-		
खगड़िया	:-		
समस्तीपुर	:-		
जमुई	:-	अजय कुमार	09430030594
वैशाली	:-		
	:-		
छपरा	:-		
सिवान	:-	सनोज कुमार	9955672241
	:-		
गोपालगंज	:-		
	:-		
मुजफ्फरपुर	:-	अविनाश कुमार	9470659050
सीतामढ़ी	:-		
शिवहर	:-		
बेतिया	:-		
बगहा	:-		
मोतिहारी	:-		
दरभंगा	:-		
	:-		
मधुबनी	:-	सुरेश प्रसाद गुप्ता	9939817141
	:-		
सहरसा	:-		
मधेपुरा	:-		
सुपौल	:-		
किशनगंज	:-		
	:-		
अररिया	:-	अब्दुल कय्यूम	9934276870
पूर्णिया	:-		
कटिहार	:-		
भागलपुर,	:-		
(ग्रा०)	:-		
नवगछिया	:-		
बांका	:-		

दिल्ली कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
A-68, 1st Floor,
नागेश्वर तला, शास्त्रीनगर, न्यू
दिल्ली-110052
मो०-09868700991, 9431073769

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
मो०-09433567880, 09339740757

झारखण्ड कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
रिया प्लाजा, फ्लैट नं0-303,
कोकर चौक, राँची-834001
मो०- 9955077308, 9431073769

मध्य प्रदेश कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

छत्तीसगढ़ कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- नूर आलम
हाउस नं.-74, अटल आवास,
बेलभाँटा, अभनपुर, रायपुर
(छत्तीसगढ़)
मो०-09835845781,
08602674503

दिल्ली हेड
संजय कुमार सिन्हा 09868700991

झारखण्ड हेड
ब्रजेश कुमार मिश्रा 07992327070
09631400205

पश्चिम बंगाल हेड
अजीत दुबे 09433567880
09339740757

उत्तर प्रदेश हेड
गदाधर नाथ मिश्रा 09452127278

महाराष्ट्र हेड
कमोद कुमार कंचन 07783822144

महाराष्ट्र कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- कमोद कुमार कंचन
Swapnapoorti Society,
Phase- 1, Sector - 26,
Nigdi, Pune- 411044
Mob:- 7492868363

उत्तर प्रदेश कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

उत्तराखण्ड कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

गुजरात कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

राजस्थान कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

हरियाणा कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

कर्नाटक कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

उड़ीसा कार्यालय

बहुत जल्द कार्यालय का शुभारंभ

आसाम कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- शम्भू नाथ मिश्र
रेलवे गेट नं.- 02 राजेन्द्र नगर
वार्ड नं.- 08, लंका, पोस्ट- लंका
जिला-नगावँ, दिसपुर (आसाम)
मो०- 08135023285, 07631376135

संदेश

कोरोना जैसे गंभीर वायरस से बचने का सरल और अच्छा उपाय है, हर समय हांथों को अच्छी तरह से साबुन से धोना एवं स्वच्छ रहना तथा ज्यादा से ज्यादा समय घर पर ही बिताना। बेवजह घर से ना निकले। इसलिए हांथों को धोएं और घर पर ही रहे, जिससे संक्रमण पर लगाम लगाया जा सकेगा।

संपादकीय व प्रधान कार्यालयः-

- पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्याः- 28/14, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार) मो०- 9431073769, 9955077308
- .e-mail:- kewalsach@gmail.com, editor.kstimes@rediffmail.com kewalsach_times@rediffmail.com
- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा सांध्य प्रवक्ता खबर वर्क्स, ए-17, वाटिका विहार (आनन्द विहार), अम्बेडकर पथ, पटना 8000 14(बिहार) एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। RNI NO.-BIHHIN/2006/18181
- पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
- सभी प्रकार के वाद-विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।
- आलेख पर कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।
- किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।
- सभी पद अवैतनिक हैं।
- विज्ञापन की सत्यता की जाँच आप अपने स्तर पर कर लें।
- फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)
- कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।
- **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**
- भुगतान Kewal Sach को ही करें। प्रतिनिधियों को नगद न दें।
- A/C No. :- 0600050004768
  BANK :- United Bank Of India
  IFSC Code :- UTBI0KKB463
  PAN No. :- AAJFK0065A

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)
पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स

09431016951, 09334110654

देवब्रत कुमार गणेश

मुख्य संरक्षक सह भावी प्रत्याशी
53 ठाकुरगंज विधानसभा
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
8986196502/9304877184
devbartkumar15@gmail.com

श्री सज्जन कुमार सुरेका

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
डी- 402 राजेन्द्र विहार, फॉरेस्ट पार्क
भुवनेश्वर- 751009
09437029875

श्री आर के झा

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
EX. CGM, (Engg.)
N.B.C.C
08877663300

पत्रिका संरक्षक

श्री जय कुमार सिंह	:- मंत्री, आई. टी. विभाग, बिहार सरकार	9431821104
डॉ० उमाकान्त पाठक	:- जेनरल फिजिशियन, MBBS	9835291966
भगवान सिंह कुशवाहा	:- पूर्व मंत्री, बिहार सरकार	9431821525
श्री ललन पासवान	:- विधायक, चेनारी, रालोसपा	9431483540
डॉ० ए० के० सिंह	:- शिशु रोग विशेषज्ञ MBBS	9431258927
श्रीमती अरूणा सिंह	:- सदस्य, जिला पार्षद, बिक्रमगंज	9931610437

बिहार राज्य प्रमंडल ब्यूरो

पटना		
मगध		
सारण		
तिरहुत		
पूर्णिया	धर्मेन्द्र सिंह	9430230000 7004119966
भागलपुर		
मुंगेर		
दरभंगा		
कोशी		

www.kewalsach.com

विशेष प्रतिनिधि

राजेश कुमार मिश्र	8757834700, 7004296529
लक्ष्मी नारायण सिंह	9204090774
मणिभूषण तिवारी	9693498852
कामोद कुमार कंचन	8971844318, 9110187832
आशुतोष कुमार	9430202335, 9304441800
राजीव रंजन	9431657626
दीपनारायण सिंह	9934292882
आनन्द प्रकाश पाण्डेय	9931202352, 7808496247
अनु कुमारी	9471715038, 7542026482
विवेक कुमार मिश्र	7461803110,
रामजीवन साहू	9430279411, 7250065417
प्रणव कुमार कश्यप	8809903185
सलाम साबरी	9835094832
रंजीत कुमार सिन्हा	9931783240, 7033394824
सुमित राज यादव	9472110940, 8987123161
अजय कुमार	8409103023, 6203723995
राजेश कुमार	7632936806, 7563816708
अवधेश कुमार शर्मा	9304827131, 8789324045
शिव कुमार ओझा	9162841133, 9162746866
राजमंति पाण्डेय	6201672831, 9155794800
वंदना सिंह	7903669215,

छायाकार

त्रिलोकी नाथ प्रसाद	9122003000,	9431096964
मुकेश कुमार	9835054762,	9304377779
जय प्रसाद	9386899670,	
कृष्णा प्रसाद	9608084774,	9835829947

दिल्ली दंगा पूर्व से सुनियोजित

● संजय कुमार सिन्हा

दिल्ली दंगा की शुरुआती बुनियाद मुस्लिम महिलाओं के तीन तलाक को बीजेपी सरकार के द्वारा हलाल कर दिये जाने के बाद से ही बनना शुरु हो गयी थी। 370 धारा, 35-ए और बाद में राम मंदिर का फैसला सुनाया जाना कट्टर सोच वाले मुस्लिम के लिए काफी थी। सरकार ने सोचा कि अभी समय देश के लिए अनुकुल है। तो क्यों न अपने ऐजेंडा या कहे तो चुनाव घोषणा पत्र मे किये गये वादे को एक -एक कर आगे बढ़ाये। उसी का अगला प्रयास के परिणाम स्वरुप सीएए कानून को अमली जामा पहनाना था। सरकार आगे बढ़ती तब तक मुस्लिम समुदाय के लोग भाफ लिया कि आगे सरकार जनसंख्या नियंत्रण कानून, समान नागरिकता जैसे कानून तुरंत ला सकती है।... तो फिर क्या था किसी बहाने बवाल खड़ा करना और देश में अराजकता फैलाना उनके ऐजेंडे का हिस्सा बना । शुरुआत भी दिल्ली से करनी थी, कारण देश भर में मुस्लिम समाज और पुरस्कार वापसी गैंग वाले बुद्विजिवियों का शाहीनबाग माँडल बन चूका था।और इस माँडल को पूरे देश में बेतहाशा समर्थन मिलना माना जा रहा था। लेकिन डेढ़ महिने बाद दिल्ली विधान सभा का चूनाव आने वाला था। अगर दंगा भड़कता तो सीधे तौर पर इसका फायदा बीजेपी को मिल सकती थी। इसको भांफते हुए दंगा को दिल्ली चुनाव और उसके चुनाव परिणाम की तारीख ग्यारह फरवरी के बाद की तारीख तय की गई। परंतु दिल्ली चुनाव परिणाम के आने के समय ही अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दो दिवसीय 24 व 25 फरवरी भारत दौरे के प्रोग्राम की

घोषणा सुन कर प्रायोजित दंगे को दस दिन और रुकने का फरमान जारी किया गया। और इसकी नई तारीख तय हुई 23 फरवरी की देर शाम या सोमवार की सुबह से और अवधी थी एक सप्ताह तक की, जैसा अभी जाँच मे मिल रहे सबूत से पता चल रहा है। कपिल मिश्रा तो एक मात्र संयोग था कि उसने 23 फरवरी को दोपहर में रोड पर धरना प्रदर्शन का घोषणा करना चाह रहे थे, जिसको पूलिस ने समझा बुझा कर वहाँ से हटा दिया। कपिल मिश्रा ने सार्वजनिक घोषणा किया कि अगर पुलिस सीएए के विरोध वाले मुस्लिम समाज के लोगों को रोड से नहीं हटाया गया तो हम भी सड़क पर धरना दे देगें जिससे सीएए विरोधियों को आने जाने मे कष्ट होगी। फिर क्या था ट्रकों ट्रक और बोरे मे भर कर रखे गये पथर ईट से कपिल मिश्रा और उनके सर्मथक को मार कर भगा दिया गया, एक बार इनके सर्मथक भी आगे बढ़ कर उसी ईट पथर से जबाब भी देने का प्रयास किया परंतु चारो तरफ से दंगाईयों को देख कर कपिल मिश्रा और इनके सर्मथकों के पसीने छूट गये और इनलोगों ने वहाँ से जान बचाकर भागना ही मुनासिब समझा और फिर क्या था दंगा शुरु हो गये। दंगा का असल रुप 24 और 25 तारीख की रही जो जहाँ मिला उसे चाकू तलवार पिस्टल डंडा ईट-पत्थर से मारा गया। पेट्रोल बंम को घरों पर फेका गया घर दूकान जलाये गये। दंगाई अपनी योजना के

आम आदमी पार्टी के पार्षद ताहिर हुसैन के बगल वाली बिल्डिंग में रोहित बालियान की बहन की शादी की मिठाई नमकीन बन रही थी उसे 24 फरवरी को आग के हवाले कर दिया और 62 हजार रुपये नगद भी लूट लिया था जबकि शादी 25 फरवरी को थी। बारात बरौट मुजफ्फरनगर से आनी थी 25 फरवरी को वो बारात आई पर जहाँ बारह पन्द्रह सौ बारातीयों की व्यवस्था किया गया था। वहाँ सिर्फ पचास-साठ मेहमान ही आये। शादी भी अलग जाकर गोलडन गार्डेन मैरिज हाउस, सभापुर गाँव से संपन्न हुई।

दंगा सुनियोजित सीमा में

दिल्ली दंगा उत्तर पूर्व दिल्ली के पांच किलोमीटर लंबा और दो किलोमीटर चौड़ा क्षेत्रफल में रहा शास्त्री पार्क से सीलमपुर, जफराबाद, मौजपुर, बाबरपुर, बृजपुरी, पुस्ता, घोण्डा, भजनपुरा, यमुना विहार, खजूरीखास, चांदबाग, शिवपुरी, विजयपार्क, के अगल-बगल सभी जगह 23 फरवरी के. संध्या से 25 फरवरी तक दंगा चलता रहा जो जहाँ मिले वही पिटे गये। मृतक की तदाद गोली मारने तेजधार हथियार से वार करने के कारण हुआ। इस दंगा की खास बात यह रही की इस क्षेत्र के ज्यादा ऐसे हिन्दू मारे गये या उनकी संपत्ती आग लगा दी गई। जो समाज में अपनी पहचान एक सेकूलर हिन्दू की थी। जैसे राजधानी स्कुल जो कि एक मुस्लिम का था उसी के सहारे बगल के स्कुल जो कि घोण्डा से चार बार काँग्रेस से विधायक रहे भीम शर्मा के स्कुल को बिल्कुल भयानक रूप से जला दिया। मैनै भीमशर्मा से उनके घर गया मिलने पर उन्होंने मिलना मुनासिब नहीं समझा। मैने अंकीत शर्मा के घर जाकर उनके परिवार व उनके बड़े भाई अंकुर शर्मा से मुलाकात किया । अंकुर शर्मा अपने भाई अंकित शर्मा से एक वर्ष बड़े है। उन्होंने बताया कि मेरा भाई आँफिस से आते ही लोगों को समझाने निकल गये। खजुरीखास के रोड नाला पार चाँदबाग का ऐरिया ऐसा है जहाँ मुस्लिम समुदाय के लोंग ज्यादा रहते हैं। उनका निशाना था खजुरीखास का इलाका जिसमे मार काट के भय से हिन्दूओं को अपने घर बेचने के लिए मजबूर करना। खजुरी खास के गली नं बारह के रहने वाले अजय कुमार झा जो बिहार के सीतामढ़ी के रहने वाले हैं उन्हें 25 फरवरी को अपने आँफिस से वापिस लौट रहे थे तभी चाँदबाग के तरफ से आई गोली उनके बाजू में लग गई जो अब खतरे से बाहर है। अजय झा ने बताया कि हमसब अपने हिन्दु-मुस्लिम सभी मिलकर बहुत अच्छा से रहा करता था पर अब डर लगता है चाँदबाग के तरफ देखने व मुसलमान के नाम से मैने कुछ भंगी-वाल्मिकि समाज के लोगों से भी बात किया उन्होंने बताया 'साहब हम समाज में जाति पाती मे बटे हुये है कोई अपने को ब्राहमन बोलता है तो कोई बनिया-यादव या हम भीम भीम बोले पर सच्चाई है कि दंगाई सभी को मारते है, जात नहीं पुछते है। हमसब को एक होना चाहिए जैसे मुसलमान होते हैं।' पेट्रोल पंप के मालिक भी सेकूलर माने जाते हैं उनके यहाँ से दंगाईयों ने चार सौ लीटर पेट्रोल खरीद कर ले गये थे। अब वे भी अपना सभी कुछ बेच कर भागने के मुड मे है। एक ठेला पर केला बेचने वाले ने बताया कि न जाने क्या हो गया था उस रविवार-सोमवार को मुसलमानों को जैसे उनके शरीर पर किसी गंदे आत्मा चुरैल का वास हो उनकी कोई हमर्ददी नहीं थी हम हिंन्दूओं से।

सीतामढ़ी बिहार के रहने वाले अजय झा, जिन्हें 25 फरवरी को आँफिस से लौटते वक्त गोली लग गई थी, दंगाईयों के द्वारा।

मेरे भाई को काटकर नाले में फेंक दिया : अंकुर शर्मा

अंकीत शर्मा के भाई अंकुर शर्मा के साथ बातचीत के कुछ अंश :-

☆ आपके भाई अंकित की किसी से समाज में दुश्मनी भी थी?

मेरे भाई की किसी से दुश्मनी नहीं थी, सभी से अच्छे मेल जोल थे। सभी से अच्छे संबंध थे। सभी से खुब बनती थी।

☆ अंकीत शर्मा जो कि आईबी मे थे इस कारण कोई इनको टारगेट किया हो?

हमे लगता है ऐसा क्योंकि मेरा भाई ऑफिस से आया था और तुरंत निकल गया था सभी को समझाने लगा और आप सब शांत रहिये कुछ नहीं होगा उसी समय ताहिर हुसैन के कुछ आदमी आया और मेरे भाई के साथ कुछ और लोंगो को खींच के अपने घर ले गया और वहाँ बुरी तरह से काट कर नाले में फेक दिया।

☆ आपके परिवार के बारे में लोगों का मानना है कि आपका परिवार उदार, सेकूलर हिन्दू और सभी धर्मों में विश्वास रखता है। क्या सही है?

हाँ सही है हमारा परिवार सभी धर्मों में विश्वास रखता है और हम सभी धर्म का सम्मान करते हैं।

☆ ताहिर हुसैन के साथ इतने कौन आदमी थे?

ये तो ताहिर हुसैन बतायेगा, ताहिर हुसैन कह रहा है कि में घर में नहीं था पर वे ही सभी कराया है उसने अपने आदमी को गोली चलाने पेट्रोल फेकने पत्थर फेकने को कह रहा है, ये भी विडीयो वायरल हो चूका है।

ताहीर हुसैन

हिसाब से 23 फरवरी को शाम से सीसीटीवी तोड़ना शुरु कर दिया थे। दंगाइयों की योजना काफी व्यवस्थित थी। सीएए के विरोधी मुस्लिमों ने अपने दूकान पर नो सीएए-नो एनआरसी का बोर्ड लगा लिया था, जिससे ये पता चले कि दूकान मुस्लिम की है, जिससे गलती से उनकी दूकान न जलाई जाये। 24 फरवरी सोमवार को जब स्कुल खुले तो कुछ क्लास के परीक्षा चल रहा था। लेकिन मुस्लिम समुदाय के बच्चों का स्कुल में उपस्थिती न के बराबर रही थी और जो बच्चें गये भी थे उनके अभिभावक अपने बच्चों को तुरंत स्कुल से वापस ले आये। जफराबाद स्थित सीएए विरोध में बैठे धरना प्रदर्शनकारी उठ कर दंगाई के साथ हो लिये थे, क्या महिला क्या प्रौढ़ सभी ने अपना हाथ साफ किया। दंगाईयों की योजना इतना स्पष्ट थी कि बड़े - बड़े गुरदेल, तेजाब की बनाई गई थैली, एक पेट्रोल पंप से 400 लिटर पेट्रोल खरीदी गई, टायर के टुकड़े इक्ठा किया गया था। जगह-जगह स्टेड मोड पर छोटी- छोटी बसे की व्यवस्था रखी गई थी जिससे बाहर से आये हुये दंगाईयों को यूपी बॉडर पार कराया जा सके। इस दंगें में दंगाईयों के साथ भारत समेत पाकिस्तान, बंगलादेश, आईएसआईएस से संबंधित सभी इकाई ने अपने हिसाब से काम बाँटे हुये थे। इस दंगे का मकसद भी दूरगामी थी। जिसमें मुख्य: बातें कट्टरपंथी शक्ति का प्रभाव दिखना , कश्मीर के तरह भारत के किसी भी हिस्से में उथल पुथल कराने का मादा रखना और परंपरागत कभी भी अमेरिकी राष्ट्रपति के भारत दौरे के समय जम्मू-कश्मीर राज्य सहित भारत के किसी भी राज्यों में आराजकता फैलाना, जिससे दुनिया में मैसेज जाये कि भारत के मुसलमान भारत में खुश नहीं है और भारत का माहौल आराजक है इसलिये

निवेश कम भारत को मिले। विदेशी मिडिया में भारत की बदनामी हो, ये मुख्य कारण मानी जाती है। ऐसे सीएए का विरोध का कोई मतलब नहीं है ये सभी भारतीय जानते हैं। भले वो मुस्लिम हो या हिंन्दु। यह सभी जानते हैं कि इस कानून से भरतवंशी का कोई लेना देना नहीं है। भारत के लोगों का दूर दूर से इस सीएए से कोई मतलब नहीं है। मुस्लिम समाज के हो या हिन्दू समाज के साथ ही सभी राजनीतिक दल के नेताओं को इस कानून की सच्चाई मालूम है कि ये कानून किसी भारतीयों से लेना देना नहीं है और ये भी मालूम है कि ये विरोध का फायदा कितना मुस्लिम को है और कितना राजनीतिक दलों को? मुस्लिम समुदाय को मालूम है कि सीएए कानून से उसे क्या नुकसान लगता है? जिसे वे छुपाते है और स्पष्ट नहीं बताते हाँ, इसमें जरुर मुस्लिम की हित नहीं है, मुस्लिम जानते हैं कि इस कानून से आगे चलकर अवैध रूप से करोड़ो- करोड़ की संख्या में भारत में रह रहे बंगलादेशी व रोहिंग्या मुसलमान को भारत से भगाया जा सकता है। जिससे मुस्लिमों की संख्या पर असर पड़ेगा। और

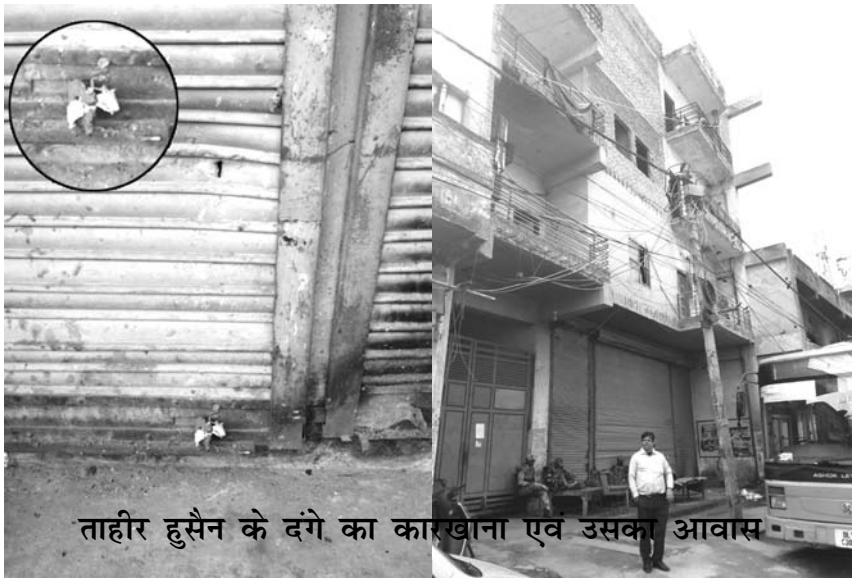

ताहीर हुसैन के दंगे का कारखाना एवं उसका आवास

ऐसे बहुतों लोक सभा और विधानसभा चुनाव में जहाँ इन अवैध निवासी के कारण मुस्लिम उम्मीदवार जीत जाते हैं, जो आगे नहीं जीत पायेंगे और उनका इस्लामिक स्टेट बनाने के सपनो को कुछ और वर्ष लग जायेगा। इसी तरह विपक्ष में बैठे दलों को मालूम है कि इन घुसपैठियों का वोट कभी भी सपने में भी सत्तासीन पार्टी बीजेपी को नहीं मिल सकती। इसलिए रार यहीं पर है। असली बात सभी को मालूम है। पर न कोई इस सच्ची बात को बोलना चाहता और न ही कोई टीवी चैनलों पर दिखाना चाहता और न कोई लिखने का हिम्मत जुटा पाता है। भारत के मुसलमान भी भली भाँती जानते हैं कि सन् 1947 में भारत में उनकी कितनी संख्या थी और हिन्दूओं की कितनी और आज 2020 मे किसकी कितनी संख्या है? और कौन समुदाय की जनसंख्या वृद्धि दर कितनी रही? इसके विपरित बंगलादेश और पाकिस्तान में हिन्दूओं कि कितनी थी सन्-1947 में और आज कितनी है? आज बंगाल, केरल, जम्मू कश्मीर और कुछेक प्रदेश के कुछ जिलें की असल कहानी क्या है ये हिंन्दू बुद्विजिवी से कही अधिक मुस्लिम अनपढ़ को मालूम है। सवाल है कि जहाँ मुस्लिम समाज के लोंग 20 प्रतिशत से कम है वहाँ कोई दिक्कत नहीं है वहाँ से कोई भी उम्मीदवार जीत सकता है। पर जहाँ मुस्लिम समाज के लोंग 25 प्रतिशत से ज्यादा है वहाँ अधिकत्तर बीजेपी जीत हासिल करती हैं। पर जहाँ 35 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम समाज के लोंग है वहाँ सिर्फ मुस्लिम उम्मीदवार ही जीत पाते हैं। दो-चार उदाहरण छोड़ दें तो। ऐसा क्या है? कही न कहीं हमें देश की विकास अपनी विकास से ज्यादा अपनी कौम के विकास से. मतलब है? भले वो मुसलमान हो या फिर हिंन्दू? हाँ थोड़ा फरक जरुर है। जहाँ मुस्लिम की आबादी 20% है वहाँ हिन्दू भी अपने जात को वोट डालने मे विश्वास रखते हैं। जो कि दोनों गलत है। इस पर सभी को सोचना चाहिए। ●

● **ललन कुमार प्रसाद**

भारत में मुसलमानों के दो तबके हैं-एक बहुत ही छोटा और दूसरा बहुत ही बड़ा। जो तबका बहुत ही छोटा है उसमें मौजूद लोग बड़े ही शरीफ हैं, उनमें इंसानियत कूट-कूटकर भरी हुई है। वे सही मायने में धार्मिक है। वे चाहते हैं कि भारत में हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, बौद्ध और जैन सब मिल जुलकर रहे, प्यार-मोहब्बत से रहे, अमन-चैन से रहे और एकजुट रहकर देश के विकास में जी-जान से जुटे रहे। मसलन, भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ० एपीजे कलाम को ही ले लिजिए। उनके ऐसा राष्ट्रपति आज तक देश के नहीं मिला है। उन्हें राष्ट्रपति पद का कोई लालच नहीं था। वे चाहते तो दूसरी बार भी बहुत आसानी से राष्ट्रपति बन सकते थे, लेकिल वे सर्वसम्मत्ति से राष्ट्रपति बनना चाहते थे। एक भी पार्टी उनके विरोध में न हो, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इसलिए उन्होंने राष्ट्रपति पद को ठुकरा दिया। उन्हें मिसाइल मैन के नाम से भी जाना जाता है। देश की सुरक्षा में उनका योगदान अतुलनीय है। वे जीवन की आखिरी सांस तक देश की सेवा में दिन-रात जुटे रहे। देश के एक बहुत बड़े शिक्षण संस्थान में छात्रों के बीच व्याख्यान देते हुए उनकी मौत हो गई। उनके जैसा राष्ट्रपति तो देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद भी नहीं थे। राजेन्द्र प्रसाद के तेज दिमाग के समक्ष एपीजे अब्दुल कलाम काफी बौने थे।

राजेन्द्र प्रसाद की मैट्रिक परीक्षा की कॉपी जांचने वाले एक शिक्षक ने उनकी उत्तर पुस्तिका पर लिख दिया था कि एक्जामिनी इज वेटर दैन इग्जामनर। अर्थात् परीक्षार्थी, परीक्षक से बेहतर है। लेकिन राजेन्द्र प्रसाद को कुर्सी का लालच था, वरना वे दूसरी बार राष्ट्रपति नहीं बन पाते। जबकि उनके जैसा सादा जीवन जीने वाला दूसरा कोई राष्ट्रपति नहीं हुआ है। राष्ट्रपति पद पर बने रहने के लिए उन्हें पंडित जवाहर लाल नहेरू के हांथों कई बार अपमानित भी होना पड़ा है। पंडित नेहरू ने अकेले देश को इस कदर बर्बाद कर दिया कि आज तक देश संभल नहीं पा रहा है और भविष्य में भी नहीं संभल पायेगा। लेकिन देश के मुसलमानों का एक बड़ा तबका पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से प्रेरित है, जिसे हिन्दू फूटली आंख भी नहीं सुहाते हैं। इसलिए 19 जनवरी 1990 को कश्मीर में घटी घटना की तरह 24, 25 और 26 फरवरी को दिल्ली में भी घटी। दंगाइयों ने दिल्ली के दस वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में कश्मीर की तरह हत्या, तोड़फोड़ और आगजनी का विभत्स दृश्य प्रस्तुत कर दिया। मुसलमानों के बड़े तबके ने हिन्दुओं को बुरी तरह तबाह कर दिया।

अक्रांता मुगल शासक बाबर के समय से ही भारत के हिन्दुओं, सिखों, बौद्धों और जैनों पर मुसलमानों द्वारा भारी जुल्म बेशर्मी से किये जाते रहे हैं, अमानवीय यातनाएं दी जाती रही है- चाहे जबरन धर्म परिवर्तन कराकर हिन्दुओं को

मुसलमान बनाया जाना हो, हिन्दुओं के पूजा स्थलों को ध्वस्त किया जाना हो या दूसरे तरह की अमानवीय यातनाएं दी जानी हो। मसलन, अयोध्या के बाबरी मस्जिद को ही ले लिजिए। जिसे बाबर ने भव्य मंदिर को तुड़वाकर उसी के अवशेष पर बाबरी मस्जिद बनवा दिया। मंदिर तोड़ने की यह कोई एक घटना नहीं है। मुगल शासकों द्वारा हजारों हिन्दू मंदिर ध्वस्त कर दिये गये। 9 नवंबर 2019 को सुप्रिम कोर्ट के पांच जजों ने सर्वसम्मत्ति से अपना फैसला सुनाते हुए आदेश जारी किया की अयोध्या श्रीराम की जन्मस्थली है, इसलिए राम मंदिर उसी विवादास्पद जगह पर बनेगा, जहां पर राम मंदिर को तोड़कर मस्जिद बनायी गयी थी। सुप्रिम कोर्ट के इस फैसले से जहां देश के हिन्दुओं में खुशी की लहर दौड़ गई थी, वही देश के मुसलमानों ने भी इस फैसले को माना, शांत रहे। देश के मुसलमानों ने कहा कि सुप्रिम कोर्ट का फैसला सही नहीं है, लेकिन देशहित में हम इसे स्वीकार करते हैं। मतलब बहुत भारी मन से देश के मुसलमानों ने सुप्रिम कोर्ट के इस ऐतिहासिक फैसले को स्वीकार किया, जबकि अयोध्या के म्युजियम में रखे खुदाई से प्राप्त सभी साक्ष्य राम मंदिर के पक्ष में मौजूद है। वहां पर खुदाई ऑर्कोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के सुपरीनटेंडिंग ऑर्केलॉजिस्ट डॉ० के.के. मोहम्मद के निर्देशन में दो सौ मजदूरों द्वारा करायी गयी थी, जिनमें 138 मुस्लिम मजदूर थे। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में लिखा है तथा टीवी पर भी इंटरव्यू के दौरान कहा है कि जिस जगह पर बाबरी मस्जिद थी, वह भव्य राम मंदिर को तोड़कर बनायी गयी थी। उन्होंने यह भी कहा कि टीवी पर सच बोलने के लिए उन्हें बहुत धमकियां भी मिली थी। डॉ० के.के. मोहम्मद मुसलमान हैं और आज जीवित हैं। एक और उदाहरण ले लिजिए-मुगल शासक औरंगजेब अपने शासनकाल में गांव के गांव को घेरवाकर हिन्दुओं, सिखों, बौद्धों और जैनों को बेरहमी से प्रताड़ित कर जबरन धर्म परिवर्तन कराकर मुसलमान बना दिया करता था। औरंगजेब ने कई हिन्दू और सिख धर्म गुरूओं का इसलिए हत्या कर दिया कि वे इस्लाम कबूल करने के लिए राजी नहीं हुए थे। मसलन, सिखों के दसवें और अंतिम गुरू, गुरू गोविंद सिंह को ही ले लिजिए। मुगल शासक औरंगजेब की सेना ने गुरू गोविंद सिंह के दोनो बड़े बेटे अजीत सिंह (उम्र 18 वर्ष) और जुझार सिंह (उम्र 14 वर्ष) की हत्या अपने सेना द्वारा करा दी तथा उनके दोनो छोटे बेटे जोरावर सिंह (उम्र 7 वर्ष) और फतेह सिंह (उम्र 5 वर्ष) को जिंदा दीवार में चुनवा दिया। मुसलमानों के द्वारा सिखों पर किया गया इतना क्रूरतापूर्ण बरबर उत्पीड़न मानव इतिहास में कही भी पढ़ने को नहीं मिलता है। दिल को दहला देने वाली उस अमानवीय घटना के विरोध में उस समय लोगों के बीच घोर प्रतिक्रिया हुई थी। उसी का परिणाम था कि उस दौरान राष्ट्रभक्तों ने गुरू गोविंद सिंह के शहीद दोनो छोटे बेटों के याद में पटना साहिब (पहले इस शहर का नाम पटना सिटी था) के सामने गंगा उस पार दो गांव का नाम फतेह सिंह और जोरावर सिंह रख दिया। गंगा के उस पार स्थित राघोपुर प्रखंड से इन दोनों गांवों की दूरी महज 12 किलोमीटर है। इसके अलावा गुरू गोविंद सिंह के शहीद दोनो बड़े बेटे अजीत सिंह और जूझार सिंह के नाम पर वैशाली के पास दो गांवों का नाम रखा गया है। इतना ही नहीं गंगा पार विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल चेचर से आगे गंगा घाट का नाम खासा घाट रखा गया है। एक मुसलमान गुरू गोविंद सिंह का शिष्य बनकर तलवार से उनके पेट में घोंपकर उनकी हत्या कर दी। गुरू गोविंद सिंह के पिता और सिखों के 9वें गुरू, गुरू तेग बहादूर सिंह की हत्या औरंगजेब ने उन्हें अपने दरबार में बुलाकर कर दी थी।

मुसलमानों में भी एक से बढ़कर एक निहायत भले इंसान होते रहे हैं और आज भी है। मसलन, शाहजहां के बड़े बेटे दारा शिकोह, जिसे उनके छोटे भाई औरंगजेब ने मौत के घाट उतार दिया था। बात यह है कि दारा शिकोह संस्कृत, फारसी, उर्दू और हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्होने गीता को पूरी सिद्दत के साथ पढ़ा था और मनन किया था। उन्होंने गीता के मर्म को समझा था। इसलिए उनके मन में गीता के प्रति बहुत श्रद्धा थी। भारत के इतिहास में दारा शिकोह पहले ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने श्रीमद् भागवत समेत 52 उपनिषदों का संस्कृत से फारसी में अनुवाद सिर-अकबर (महान रहस्य) के नाम से अनुवाद किया था। उनका ज्यादातर समय सुफियों के साथ सत्संग में बीतता था। बादशॉह शाहजहां का बड़ा बेटा होने के कारण दिल्ली के गद्दी के वे उत्तराधिकारी थे, लेकिन मुस्लिम कट्टरपंथियों ने उनपर बुतपरस्त (मूर्तिपूजक) होने का आरोप लगाया, जो कि सही नहीं है। वे बुतपरस्त नहीं थे। वे समय पर नमाज अदा करते थे, लेकिन औरंगजेब उनपर लगाये गये गलत आरोप का नाजायज फायदा उठाकर उसने विद्रोह किया और खुद दिल्ली का बादशाह बन बैठा तथा 30 अगस्त 1659 को दिल्ली में दारा शिकोह को मौत की सजा सुना दी। दारा शिकोह के शव के साथ

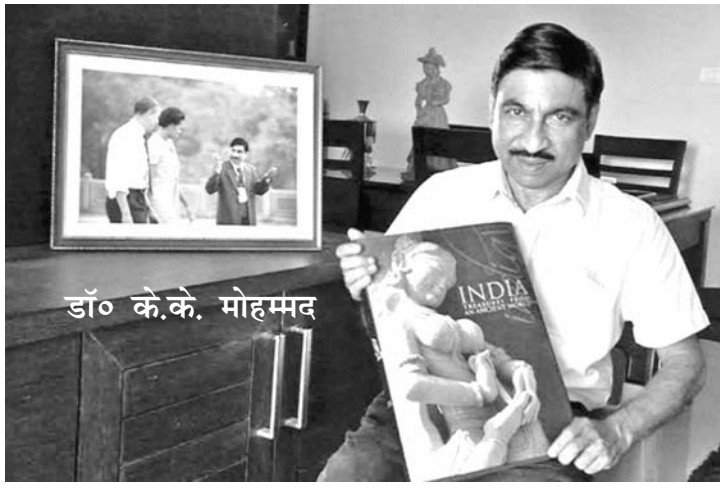

बर्बरता भी की गई। दारा शिकोह का सर कलम कर आगरा ले जाया गया और धर को दिल्ली में हुमायूं के मकबरे के परिसर में दफनाया गया। ऐतिहासिक प्रमाणों के मुताबिक मुगल काल में दारा शिकोह के अलावा ऐसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता है, जिसमें किसी मुगल शहजादे का सिर कलम कर सिर्फ धर को दफनाया गया हो। वर्ष 1801-02 में जब फ्रांसीसी दार्शनिक एंक्वेटिल डुपरॉन ने लैटिन भाषा में सिर्रे-अकबर का अनुवाद किया, तब जाकर सारी दुनिया को गौरवपूर्ण भारतीय संस्कृति के बारे में विस्तार से पता चला। सचमुच पूरी दुनियां को भारतीय सनातन संस्कृति से रू-ब-रू कराने वाले दारा शिकोह का स्थान सनातन हिन्दू धर्म के इतिहास में अद्वितीय है। ऐसे निहायत शरीफ इंसान को हिन्दुओं और सिखों का कट्टर विरोधी औरंगजेब ने हत्या कर दी थी। सचमुच दारा शिकोह को शरीफ भारतीय मुसलमानों के सिरमौर हैं। इसलिए भारत में उनका भव्य स्मारक बनाया जाना चाहिए।

पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के बहुसंख्यक मुसलमान धर्म के आधार पर अपने-अपने देश में रहने वाले अल्पसंख्यक हिन्दुओं और सिखों से क्रूरतापूर्ण अमानवीय तरीके से पेश आते हैं। पाकिस्तान में हर साल हजारों की संख्या में 11 वर्ष से लेकर 20 वर्ष तक की हिन्दू और सिख लड़कियों का अपहरण कर जबरन उनका धर्म परिवर्तन कराकर वहां के मुसलमान शादी कर लेते हैं। उक्त तीन देशों में हिन्दुओं, सिखों और बौद्धों के पूजा स्थलों को वहां के मुस्लिम ध्वस्त कर देते हैं। जमीन-जायदाद पर जबरन कब्जा कर लेते हैं तथा उनकी हत्या कर देते हैं। उसी तरह का बर्ताव भारत के अधिकतर मुसलमान हिन्दुओं के साथ आजादी के समय से ही करते आ रहे हैं। इसका ज्वलंत उदाहरण कश्मीर में 19 जनवरी 1990 को वहां के मुसलमानों के द्वारा चार लाख से भी अधिक कश्मीरी पंडितों को रातों-रात जबरन खदेड़कर भगा दिया जाना। कश्मीर के मस्जिदों से उस दिन लाउड स्पीकर पर लगातार ऐलान किया जाता रहा कि कश्मीरी पंडितों तुम अपनी बहु, बहन और बेटियों को छोड़कर कश्मीर से फौरन चले जाओ, वरना तुम सबों की हत्या कर दी जायेगी। सचमुच वहां के मुसलमानों द्वारा ऐसा ही किया गया। कश्मीरी पंडितों को उनके घरों से जबरन खींचकर हत्या कर दी गई। पूरी कश्मीर घाटी की सड़के हजारों कश्मीरी पंडितों की शव से पट गयी। सिर्फ एक ही दिन में कितने कश्मीरी पंडितों की हत्या हुई, इसका कोई रिकॉर्ड नहीं है, क्योंकि वहां के मुसलमान कश्मीरी पंडितों पर दिल को दहला देने वाले अमानवीय यातना को दुनियां के मुसलमानों से छिपाना चाहते थें। आश्चर्य तो तब हुआ जब भारत के सभी मुसलमानों का उस दर्दनाक घटना को मौन समर्थन प्राप्त था। भारत का कोई भी मुस्लिम संगठन परोक्ष या

प्रत्यक्ष रूप से जरा सा भी विरोध नहीं किया, जबकि मुस्लिम संगठनों द्वारा बहुत ही जोरदार तरीके से प्रत्यक्ष रूप में विरोध किया जाना चाहिए था। जिस वक्त श्रीनगर के लालचौक पर वहां के मुसलमान तिरंगे झंडे जला रहे थे तो उस वक्त शेष भारत के मुसलमानों ने सड़कों पर उतरकर विरोध क्यो नहीं जताया?

★ **हिन्दू सभी धर्मों का आदर-सम्मान करते हैं:-** हमारे देश में आम तौरपर बहुसंख्यक शब्द का प्रयोग हिन्दू धर्म को मानने वालों के लिए किया जाता है और अल्पसंख्यक शब्द का इस्तेमाल आम तौरपर मुस्लिम धर्म मानने वालों के लिए किया जाता है, लेकिन भारत में मुस्लिम अल्पसंख्यक तो हरगीज नहीं हैं, क्योंकि इनकी आबादी आज करीब 20 करोड़ है, फिर मुसलमानों को देश में हिन्दुओं की हकमारी करके कई तरह की विशेष सुविधाएं देश की सभी पार्टियों द्वारा दी जाने की होड़ मची है, जिससे की चुनाव में मुस्लिमों का अधिक से अधिक वोट हासिल किया जा सके। खैर जो भी हो! दुनियां भर में हिन्दू धर्म ही एकमात्र ऐसा धर्म है, जो सही मायने में धर्म-निरपेक्ष है। हिन्दू स्वभाव से ही उदारवादी होते हैं। इसलिए इतने सारे धर्म, जैसे-इस्लाम और ईसाई धर्म बगैर किसी रोकटोक के भारत में पनपते चले गए। आज भारत में मुसलमानों को जितनी छूट मिली हुई है, उतनी पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान जैसे इस्लामिक देशों में भी मुसलमानों को नहीं मिली हुई है। भारत में जन्मे चारो धर्म-हिन्दू, सिख, बौद्ध और जैन धर्म अहिंसक हैं। इन चारो धर्मों का प्रचार-प्रसार बगैर किसी हिंसा के शांतिपूर्वक पूरी दुनियां में उनके दर्शन की गुणवत्ता के आधार पर हुआ है। इन चारों धर्मों में सबसे पुराना हिन्दू धर्म है। ध्यान देने वाली बात यह है कि हिन्दू सभी धर्मों का आदर-सम्मान करते हैं, जरा भी भेदभाव नहीं करते हैं और यही सहिष्णुता हिन्दू धर्म की पहचान है। स्वयं विवेकानंद ने

अमेरिका के सिकागो में ''विश्व धर्म संसद'' में अपने संबोधन में कहा था-'मुझे भारत देश का नागरिक होने पर गर्व है, जिसने दुनियां के सभी धर्मों और सभी शरणार्थियों को आश्रय प्रदान किया है'। यही मनोविज्ञान आज हिन्दुओं के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ी समस्या बन गई है, क्योंकि जिन मुसलमानों को हिन्दुओं ने शरण दी है, अपना भाई माना है, आज वही हिन्दुओं का नामो-निशान मिटा देने पर तुले हुए हैं। यही कारण है कि 1947 में भारत का बंटवारा होने के बाद हिन्दू धर्म को पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान ने खात्मे के कगार पर पहुंचा दिया गया है। मसलन, कश्मीर को ही ले लिजिए। आज से करीब 700 साल पहले कश्मीर में सिर्फ हिन्दू रहते थे, लेकिन अपने उदार स्वभाव के कारण किसी कारणवश बाहर से आये कुछ मुसलमानों को शरण दे दिया। तब से कश्मीर अशांत रहने लगा और मुसलमानों की बढ़ती आबादी के साथ वहां अशांती फैलने लगी। आज आलम यह है कि पिछले तीस सालों से दर-दर की ठोकरे खाने वाले एक भी कश्मीरी पंडितों के परिवार को वहां वापस नहीं बसाया गया। जानते हैं क्यों? ऐसा इसिलए कि ज्यादातर मुसलमान जिस देश में दाखिल होते हैं, वहां अपने धर्म का प्रचार-प्रसार क्रूरतापूर्वक बड़ी बेहरहमी से दूसरे धर्म वालों पर जुल्म ढ़ाकर करते हैं। मसलन, मुगल शासन बाबर से लेकर औरंगजेब तक को ही ले लिजिए। आज देश के मुसलमानों के बारे में अनुसंधान किया जाये तो ज्यादातर मुसलमानों के पूर्वज हिन्दू रहे हैं, जिनका जबरन धर्म परिवर्तन कराकर मुसलमान बना दिया गया है। इसलिए बगैर किसी विलंब के हिन्दुओं को धर्म निरपेक्षता को त्यागना पड़ेगा। ऐसा इसलिए कि हिन्दू समुदाय धर्म निरपेक्ष बना रहे और मुस्लिम समुदाय हिन्दुओं को धर्म निरपेक्षता की दुआई देकर इस्लाम के

नाम पर सामप्रदायिक बना रहे, भारतीय संविधान न माने, हर समय इस्लाम के नाम पर संविधान को जबरन गलत माने तो ऐसी विषम परिस्थिति में धर्म निरपेक्षता कैसे टिकी रह सकती है? इसलिए हिन्दुओं का धर्म है कि भारत देश में हिन्दुओं का खात्मा होने से बचाने के लिए भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने हेतु जी-जान से जुट जाये।

★ **मुसलमान कितना भी असंवैधानिक काम करे, करके ही रहेंगे और हिन्दू कितना भी संवैधानिक काम करे, करने ही नहीं देंगे:-** 22 दिसम्बर 2019 को बेंग्लुरू के टाउन हॉल के सामने भाजपा नेताओं द्वारा सीएए को लेकर जागरूक करने के लिए आयोजित कार्यक्रम के दौरान मुसलमानों ने सांसद तेजस्वी सूर्या, आरएसएस के नेता सुलीबोले तथा कार्यक्रम में मौजूद लोगों पर हमला कर दिया। हमलावरों में से छः लोगों इरफान, सईद, अकबर, अकबर बासा, सना उर्फ सनाउल्लाह शरीफ और सारिख-उल-आमीन को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। 26 जनवरी 2020 को झारखण्ड के लोहरदगा में जब विश्व हिन्दू परिषद द्वारा सीएए के पक्ष में निकाली गई रैली पर मुसलमानों ने जबरदस्त पथराव कर दिया था, जिससे रैली में भाग ले रहे ढ़ेर सारे लोग घायल हो गये, जिनमें से कुछ तो गंभीर रूप से घायल हो गये। फिर 24 फरवरी 2020 को जब दिल्ली के जाफराबाद में हिन्दुओं द्वारा सीएए के पक्ष में धरना प्रदर्शन किया गया तो मुसलमानों ने उनपर ईंट-पत्थरों की बौछार कर उन्हें भगा दिया। इससे स्पष्ट है कि भारत में हिन्दुओं पर मुसलमानों द्वारा किस तरह हरकत की जाती है। मुसलमान कितना भी असंवैधानिक अनैतिक और अमानवीय जुल्म हिन्दू पर करे, वे चू-चरा भी नहीं कर सकते हैं। हिन्दू कितना भी संवैधानिक, नैतिक और मानवीय काम करे, मुसलमान करने नहीं देते हैं। आज हालात यह है कि देश के मुसलमानों से देश की पुलिस, नेता और सरकार तीनो ही भयभित हैं, डरने लगे हैं। इससे समझा जा सकता है कि भारत में मुसलमानों द्वारा कितना जुल्म किया जा रहा है और वे मजबूरन चुपचाप सहते रहते हैं, मुंह पर मजबूरन ताला लगाये हुए हैं। वे अपने ऊपर किये जा रहे जुल्मों के विरोध में एक भी शब्द नहीं बोल सकते हैं। ऐसे में भारत में हिन्दुओं का अस्तित्व कैसे बचेगा? अतः भारत में हिन्दुओं का वजूद मिटने से बचाने के लिए भारत को हिन्दू राष्ट्र बगैर किसी विलंब के बनाया जाना नितांत जरूरी हो गया है, वरना मुसलमान देश में हिन्दुओं का वजूद मिटा देंगे। दरअसल पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान की तरह भारतीय मुसलमान भी हिन्दुओं से इतनी घृणा करते हैं कि चाहे कोई भी सरकार हो, वे अपनी घृणित चाहत को अंजाम तक पहुंचाकर ही रहेंगे, हिन्दुओं के मूल देश भारत में ही हिन्दुओं का नामो-निशान मिटा

देंगे। हिन्दुओं के प्रति भारतीय मुसलमान इतना घृणा से भरे हुए हैं कि यदि सरकार सहित देश की सभी पार्टियां मिलकर भी भारत में हिन्दुओं को बचाने का प्रयास करे तो भी भारत में हिन्दुओं का वजूद मिटाने से रोकने में सफल नहीं हो पायेंगे, जबकि ऐसा कभी नहीं हो सकेगा कि देश की सभी पार्टियां मिलकर हिन्दुओं को सुरक्षा प्रदान करेंगे। ऐसा इसलिए कि एक-दो राजनीतिक पार्टियों को छोड़कर देश की अन्य सभी पार्टियां गद्दार है, देशद्रोही है। इसलिए भारत में हिन्दुओं का वजूद मिटने से बचाने के लिए भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के सिवाय कोई दूसरा विकल्प नहीं है।

★ **भारतीय मुसलमान भारत को इस्लामिक देश बनाने पर तुले हुए हैं :-** पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के मुसलमानों की तरह भारत के अधिकतर मुसलमान भारत में ही हिन्दुओं का नामो-निशान मिटा देना चाहते हैं। उपरोक्त चारों देशों के मुसलमानों को हिन्दू और सिख फुटली आंख नहीं सुहाते हैं। उनकी नजर में हिन्दू, सिख, बौद्ध और जैन घृणा के पात्र हैं। दुनियां भर में 58 मुस्लिम देश है, लेकिन पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान की तरह गिरे हुए नहीं हैं। उपरोक्त तीन मुस्लिम देशों और धर्म- निरपेक्ष भारत को छोड़कर शेष 55 मुस्लिम देशों में भारतीय हिन्दुओं को न सिर्फ बहुत ही आदर एवं सम्मान की नजर से देखा जाता है, बल्कि बर्ताव भी किया जाता है। इसका नजारा पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान तथा धर्म-निरपेक्ष देश भारत को छोड़कर सभी 55 मुस्लिम देशों में देखा जा सकता है। मसलन, मुस्लिम देश यूएई को ही ले लिजिए। वहां के सुल्तान ने वहां पर हिन्दू मंदिर बनाने के लिए मुफ्त में 50 एकड़ जमीन दे दी है, जहां हिन्दू मंदिर के फाउंडेशन तक का काम पूरा हो चुका है। शीघ्र ही हिन्दू मंदिर बनकर तैयार हो जायेगा। खाड़ी देश के ही एक देश में दो सौ साल पुराना शिव मंदिर बिल्कुल सुरक्षित है और वहां नित्य पूजा-आरती की जाती है। जबकि भारत में आज भी मुसलमानों द्वारा हिन्दू पूजा स्थलों में तोड़फोड़ की जाती है। इसका एकदम ताजा उदाहरण है 24 से 26 फरवरी 2020 तक दिल्ली में चले दंगा में दो हिन्दू मंदिरों को क्षतिग्रस्त किया जाना।

भारतीय मुसलमान सीएए को लेकर ऐसा विरोध कर रहे हैं, जिसका कोई ठिकाना नहीं है। जबकि सीएए से एक भी भारतीय को कोई खतरा नहीं है, चाहे वह हिन्दू हो मुसलमान, सिख हो या ईसाई और बौद्ध-जैन या पारसी। इसमें धर्म के आधार पर पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से प्रताड़ित अल्पसंख्यकों यानि हिन्दुओं और सिखों को भारत की नागरिकता दिये जाने का आसान रास्ता प्रदान किया गया है। पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से भागकर अपनी इज्जत की रक्षा के लिए दिसम्बर 2014 से पहले भारत में प्रवेश कर गये हैं और पांच वर्षों से अधिक समय से शरणार्थी के रूप में भारत में रह रहे हैं। जब सीएए से एक भी भारतीय मुसलमान को कोई भी खतरा नहीं है तो वे क्यों इतने खतरनाक तरीके से इसका विरोध कर रहे हैं। आश्चर्य है कि सत्ता हासिल करने अथवा सत्ता में बने रहने के लिए भारतीय जनता पार्टी, जनता दल युनाईटेड और बिजू जनता दल को छोड़कर लगभग सारी राजनीतिक पार्टियां सीएए का विरोध कर रही हैं। कांग्रेस, सीपीआई, सीपीएम, आम आदमी पार्टी, समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, आरजेडी, टीएमसी, इत्यादि पार्टियां मुस्लिम वोट के खातीर सीएए का विरोध कर रही है। भारतीय संविधान का न सिर्फ खुल्लम-खुल्ला विरोध कर रही है, बल्कि पूरे देश में अराजकता और अव्यवस्था फैलाने के लिए रैलियां निकाल रही है, पूरे देश में तोड़फोड़ कर रही है, धरना प्रदर्शन कर रही है तथा देश विरोधी नारे लगवा रही है। ये सभी पार्टियां मुसलमानों के साथ मिलकर देश भर में करीब दो सौ शाहीनबाग स्थापित कर सैकड़ों सड़कों को जाम करा दिया है, बंधक बना दिया है। इसका परिणाम है कि आज देश भर में कई करोड़ लोगों को ढ़ेर सारी कठिनाइयों से जुझना पड़ रहा है। देश के करोड़ों निर्दोष नागरिकों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। सिर्फ शाहीनबाग में 15 दिसम्बर 2019 से सभी दुकाने बंद है, नौकरी पेशा लोगों को अपने दफ्तरों में जाने के लिए आधे घंटे के बजाय ढ़ाई-तीन घंटे का समय देना पड़ रहा है, बच्चों को स्कूल जाने में परेशानी हो रही है, मरीजों को अस्पताल ले जाने में दिक्कत हो रही है, इत्यादि। ऐसे में क्या भारत में मुसलमानों को छोड़कर किसी भी अन्य समुदाय को रहने का हक नहीं है, क्या भारतीय मुसलमानों को छोड़कर अन्य भारतीय समुदाय के भारतीय नागरिक, भारत के नागरिक नहीं है? ऐसे में भारतीय मुसलमानों को छोड़कर अन्य सभी भारतीय नागरिक भारत में कैसे रह पायेंगे? क्या धर्म-निरपेक्षता का भारतीय कानून मुसलमानों पर लागू नहीं होता है और क्या मुसलमानों को छोड़कर अन्य सभी भारतीय समुदायों पर लागू होता है? क्या भारतीय मुसलमान भारतीय संविधान से ऊपर है? क्या भारत की धर्म-निरपेक्षता, इस्लामिकृत धर्म-निरपेक्षता होनी चाहिए? क्या भारत के मुसलमान पूरे भारत को कश्मीर की तरह हिन्दू मुक्त भारत बना देंगे?

जरूर बना देंगे। ऐसा इसलिए कि पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के मुसलमानों की तरह भारतीय मुसलमान स्वभाव से ही हिन्दुओं और सिखों का खात्मा करने पर तुले हुए हैं। ऐसे में सीएए का विरोध नजायज तरीके से कर रहे भारतीय मुसलमान क्या भारत में हिन्दुओं, सिखों, बौद्धों, जैनों और ईसाइयों की जाने बक्स देंगे? कभी नहीं। इन्हें तो सैकड़ों वर्षों से भारतीय हिन्दुओं और सिखों की हत्या कर मार देने की आदत पड़ गई है।

☆ **एआईएमआईएम के राष्ट्रीय अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी** :- 9 दिसम्बर 2019 को एआईएमआईएम के राष्ट्रीय अध्यक्ष और मौजूदा लोकसभा के सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने संसद भवन के अंदर सांसदों के बीच नागरिकता संसोधन बिल 2019 की प्रति को फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर संसद भवन के फर्श पर बिखेर दिया। लेकिन लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने ओवैसी के विरूद्ध कोई कार्यवाई नहीं की और लोकसभा में मौजूद एक भी सांसद ने इसकी मांग भी नहीं की। इससे स्पष्ट है कि मुर्दों की जमात हैं लोकसभा के सांसद। मोदी सरकार ने भी कोई कार्रवाई नहीं की, जिससे भारत की जनता ने जबरदस्त बहुमत से जिताकर देश का प्रधानमंत्री बनाया है। भारत का चुनाव आयोग ने भी कोई कार्यवाई नहीं की। ओम बिरला ने ओवैसी की लोकसभा की सदस्यता रद्द क्यों नहीं की? ओवैसी के खिलाफ उन्हे और क्या सबूत चाहिए था। भारत के चुनाव आयोग ने ओवैसी के पार्टी की मान्यता रद्द क्यों नहीं की? केन्द्र सरकार ने संसद का उपहास उड़ाने वाले व्यक्ति को जेल में क्यों नहीं डाला, जबकि ऐसे व्यक्ति के लिए जेल ही मुफिद जगह है।

नागरिकता संसोधन कानून (सीएए) के विरोध में 20 फरवरी को बेंग्लुरू में आयोजित संविधान बचाओं जनसभा में ओवैसी की मौजूदगी में पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाये गये। ओवैसी के मन से ही अमूल्या नाम की एक महिला ने भीड़ को संबोधित करते हुए लोगों से पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाने को कहा। उसके तुरंत बाद ओवैसी ने सफाई दी की देश विरोधी नारा लगाने वाली महिला से वह सहमत नहीं हैं, तो फिर मंच से उस महिला को संबोधन करने का मौका कैसे मिल गया। वैसे भी ओवैसी की जनसभाओं में कई बार पहले भी पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाये जाते रहे हैं। ऐसा कोई पहली बार नहीं हुआ है। ओवैसी मुसलमानों से

कहते हैं कि जब कोई सरकारी मुलाजिम तुमसे तुम्हारी पहचान संबंधित कोई कागज दिखाने को कहे तो अपनी सीना आगे कर देना। इस तरह की बेहुदगी ओवैसी जैसे व्यक्ति ही कर सकते हैं। ओवैसी का यह बयान निर्लजता की पराकाष्ठा नहीं तो और क्या है? सचमुच ओवैसी गजब के बेशर्म व्यक्ति हैं। ऐसे ही व्यक्ति के चलते पूरी दुनियां में भारतीय मुसलमानों की फजीहत हो रही है। दरअसल, ओवैसी भारतीय संविधान का माखौल उड़ाने को शान की बात समझते हैं, तभी तो सीएए के विरोध में आयोजित जनसभा में उनकी मौजूदगी में अक्सर पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाये जाते हैं। वैसे तो सीएए के विरोध में जनसभा को आयोजित करना संविधान के खिलाफ है, लेकिन ओवैसी ऐसे मुसलमान हैं, जो अपने आप को संविधान से ऊपर मानते हैं।

☆ **एआईएमआईएम के राष्ट्रीय प्रवक्ता वारिस पठान** :- कुलबुर्गी की एक जनसभा में 20 फरवरी को एआईएमएआईएम के राष्ट्रीय प्रवक्ता और मुम्बई के भायखला के पूर्व विधायक वारिस पठान ने लोगों को संबोधित करते हुए मंच से कहा-'देश में मुसलमानों की संख्या भले ही 25 करोड़ से कम हो, लेकिन जरूरत पड़ने पर वे सौ करोड़ लोगों पर भी भारी पड़ेंगे'। इसे 24-26 फरवरी को दिल्ली में हुई दंगा में मुसलमानों ने साबित भी कर दिया। यह ऐसे ही नहीं हुआ। यह सब पहले से ही नियोजित था कि अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के भारत दौरे के दौरान दिल्ली में दंगे को अंजाम दिया जायेगा, ताकि सारी दुनियां में भारत की छवि खराब हो जाये। भारत बदनाम हो जाये। आम आदमी पार्टी के पार्षद ताहीर हुसैन जैसे मुसलमान बहुत पहले से ही दंगा कराने की तैयारी कर रहे थे, जिसकी जानकारी वारिस पठान को अवश्य थी, तभी तो भरी जनसभा में उन्होंने ऐसी बात कही। वारिस पठान ने अपने भाषण में कहा-'हमने ईंट का जवाब पत्थर से देना सिख लिया है'। आगे उन्होंने कहा-'हमने औरतों का आगे रखा है। अभी तो केवल शेरनियों के बाहर निकलने से पूरा देश परेशान हो गया है, जब पूरा समुदाय एक साथ बाहर निकलेगा तो समझो क्या होगा'। केन्द्र सरकार के गृह मंत्रालय को वारिस पठान के खिलाफ और क्या सबूत चाहिए। क्यो वारिस पठान को कैद कर जेल में नहीं डाल रही है?

☆ **क्या अरविंद केजरीवाल खांटी देशद्रोही नहीं?** :- दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल एक बहुत ही खतरनाक देशद्रोही हैं, जिन्हें प्रमाणित करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि ये वर्षों पहले ही प्रमाणित हो चुका है। वर्ष 2016 में दिल्ली के

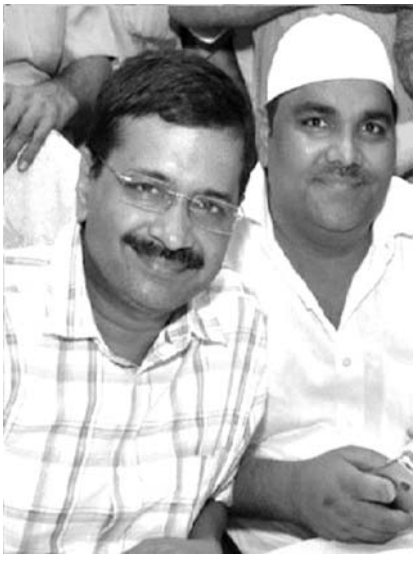

जेएनयू में जाकर अफजल गुरू की बरसी के अवसर पर उन्होंने अपने देश के टुकड़े-टुकड़े गैंग का खुलेआम समर्थन किया था। जब सितम्बर 2016 में भारतीय सेना एलओसी पार जाकर सर्जीकल स्ट्राईक को अंजाम दिया था तो यही केजरीवाल उसका सबूत मांग रहे थे। भारतीय वायुसेना ने फरवरी 2019 में पाकिस्तान के बालाकोट में घूंसकर एयर स्ट्राइक को अंजाम दिया था, तो यही केजरीवाल उसका सबूत मांग रहे थे। दिल्ली के शाहीनबाग में 15 दिसम्बर 2019 से ही मुस्लिम महिलाओं ने जो सड़क को बंधक बना लिया है, उस संविधान विरोधी कृत्य को अरविंद केजरीवाल समर्थन कर रहे हैं, जिसकी घोषणा उनके सहयोगी दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया पहले ही कर चुके हैं। शाहीनबाग में जाकर दिल्ली के आला अफसर और दिल्ली के उपराज्यपाल धरना पर बैठी मुस्लिम महिलाओं से निवेदन कर चुके हैं कि वे धरना प्रदर्शन करे, लेकिन शाहीनबाग की सड़क को बंधक बनाकर न करे। कही ऐसी जगह जाकर करे जहां आम जनता को कोई परेशानी न हो। देश के गृह मंत्री अमित शाह कई बार कह चुके हैं कि मुस्लिम महिलाएं अपने प्रतिनिधि मंडल को भेजकर दिल्ली स्थित मेरे दफ्तर में आकर बात करे, लेकिन शाहीनबाग में धरना पर बैठी मुस्लिम महिलाएं अमित शाह के निवेदन को सुनने के लिए तैयार नहीं है, लेकिन अरविंद केजरीवाल, मनीष सिसोदिया, उस इलाके के विधायक और आम आदमी पार्टी का कोई नेता अथवा कोई कार्यकर्ता ने शाहीनबाग में सड़क जाम कर धरना पर बैठी मुस्लिम महिलाओं को एक बार भी नहीं कहा है कि सड़क जाम करना ठीक नहीं है, इससे आम आदमी को परेशानी हो रही है। आपलोग कही और जाकर धरना प्रदर्शन करे और भविष्य में न कभी कहेंगे। क्योंकि वे मुस्लिम वोट के खातिर सीएए प्रर्दशन विरोधी धरना प्रर्दशन के समर्थक हैं। मानव इतिहास में अरविंद केजरीवाल ऐसे पहले नेता हैं, जिन्होंने दिल्ली की जनता के साथ इतनी बेवफाई से पेश आ रहे। केजरीवाल लगातार तीसरी बार जितकर दिल्ली का मुख्यमंत्री बने हैं। 2015 में उनकी पार्टी को कुल 70 में से 67 सीटे मिली थी, इस बार कुल 70 में से 62 सीटे मिली है। यह प्रचंड बहुमत उन्हें सिर्फ मुसलमानों के वोट से ही नहीं मिली है। हिन्दुओं ने भी उन्हें भारी संख्या में वोट दिया है। फिर भी शाहीनबाग के जाम के चलते लाखों दिल्लीवासियों को 15 दिसम्बर 2019 से ही भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है और केजरीवाल जी सड़क जाम को लेकर मौन धारन किये हुए हैं। यह दिल्ली की जनता के साथ उनकी बेवफाई नहीं तो और क्या है? केजरीवाल बहुत बड़े नौटंकीबाज है। दिल्ली चुनाव के चार-पांच दिन पहले दिल्ली के कनाट प्लेस स्थित हनुमान मंदिर में हनुमान जी के चुनाव जीतने के लिए आशीर्वाद मांगने गये। अर्थात् उन्होंने हिन्दुओं के साथ छल किया। हिन्दुओं के हांथ में लॉलीपॉप थमा दिया कि वे हिन्दुओं के प्रबल समर्थक हैं, इसलिए चुनाव में आदमी पार्टी को ही वोट दें। हिन्दू, अरविंद केजरीवाल के इस नौटंकी में फैल गये और उनकी पार्टी के पक्ष में भारी मतदान कर दिया। नतीजा, दिल्ली के कुल 70 सीटों में से 62 सीटों पर आम आदमी पार्टी जीत गई। देश के मशहूर गीतकार जावेद अख्तर अरविंद केजरीवाल को बधाई देने के बहाने उनके निवास स्थान पर पहुंचकर बंद कमरे में पता नहीं भविष्य में सीएए के विरोध में और अधिक दमदार बनाने के लिए कुछ तो योजना बनाये ही होंगे। देशद्रोही स्वभाव होने के कारण दोनो में बड़ी सांठ-गांठ है। दरअसल, टुकड़े-टुकड़े गैंग के प्रबल समर्थक जावेद अख्तर देश में आग लगाने के किसी भी मौके को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से भुनाने में नहीं चुकते हैं। इन दोनों की फिदरत ही देश विरोधी है।

आम आदमी पार्टी के विधायक अमानुतुल्लाह खां, शरजील इमाम से मिलकर शाहीनबाग में धरना पर बैठे प्रदर्शनकारियों को सीएए के विरोध में मजबूती से डटे रहने का आह्वाहन किया। इसे सभी देशवासियों ने टीवी पर देखा, फिर भी पुलिस अमानुतुल्लाह खां पर कोई कार्यवाई नहीं कर रही है। आम आदमी पार्टी के नेता और राज्यसभा के सांसद दिल्ली चुनाव के ठीक चार-पांच दिन पहले यह ऐलान कर दिया था कि कल शाहीनबाग में प्रदर्शनकारियों पर गोली जरूर चलायी जायेगी और ऐसा हुआ भी, प्रदर्शनकारियों पर गोली चली। गोली चलाने वाले व्यक्ति हरियाणा के कपिल गुर्जर को पुलिस ने पिस्तौल के साथ पकड़ लिया और गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। कुछ ही दिन पहले चलाये गये सदस्यता अभियान के दौरान संजय सिंह ने अपने हांथों से टोपी पहनाकर उसे आम आदमी पार्टी का सदस्य बनाया था, जिसे टीवी पर पूरा देश देखा है। इससे स्पष्ट है कि संजय सिंह उस आदमी को शाहीनबाग में गोली चलाने के लिए तैयार किया था, जिससे की मुसलमानों का पूरा का पूरा वोट आम आदमी पार्टी को मिल जाये। इससे स्पष्ट हो जाता है कि मान सिंह और जयचंद के असली वारिस संजय सिंह ही हैं।

दिल्ली चुनाव के पहले अरविंद केजरीवाल ने देश के गृहमंत्री अमित शाह को प्रेस में दिये गये इंटरव्यू में कहा था कि अगर शरजील इमाम शाहीनबाग, जामिया मिल्लिया और जेएनयू में देश विरोधी तथा संविधान विरोधी योजनाओं का प्रारूप तैयार किया है और उसे अंजाम तक पहुंचाने का कार्य किया है तो शरजील इमाम को गिरफ्तार करे। मैं दिल्ली सरकार का मुखिया हूं। मुझे किसी से इजाजत लेने की जरूरत नहीं है। मैं एक मिनट में उसपर मुकदमा दर्ज कर दूंगा। अमित शाह ने शरजील इमाम को दिल्ली चुनाव के पहले ही गिरफ्तार करके जेल भेजवा दिया, लेकिन अरविंद केजरीवाल ने उस पर अभी तक कोई भी मुकदमा दर्ज नहीं कराया है। जबकि देश का मुख्यमंत्री होने के नाते उन्हें अवश्य ही मुकदमा दर्ज कराना चाहिए था।

★ **सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त मध्यस्थ वजाहत हबीबुल्लाह** :- दिल्ली के शाहीनबाग में 19 फरवरी 2020 को सीएए के खिलाफ 15 दिसम्बर

2019 से जारी प्रदर्शनकारियों की धरना को खत्म करने के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा मध्यस्थ के रूप में नियुक्त वार्ताकार वकील संजय हेगड़े और साधना रामचन्द्रन पहुंचे। उन दोनो ने वहां धरना पर बैठी मुस्लिम महिलाओं से कहा-'जिस तरह से धरना-प्रदर्शन करना आपका हक है, उसी तरह से दूसरो का भी अधिकार है कि वे सड़कों पर चल सके, दुकाने खोल सके। इस पर सुप्रीम कोर्ट में जल्द सुनवाई होगी, लेकिन इससे आन्दोलन करने का हक नहीं छिनेगा'। ये दोनो मध्यस्थ लगातार पांच दिनों तक प्रदर्शनकारी महिलाओं को घंटों समझाते रहे। प्रदर्शनकारियों में अधिकतर 80-85 साल की बुढ़ी महिलाएं थी और कुछ दो-चार से लेकर छः-सात साल की बच्चे-बच्चियां थी, जो सीएए के बारे में कुछ भी नहीं जानती हैं। वे सीएए को काला कानून कहकर इसे हटाने की मांग कर रही थी। प्रदर्शनकारी महिलाओं ने दोनो वार्ताकारों को दो टूक जवाब दे दिया-'सड़क जाम तभी खुलेगी, जब सीएए सरकार वापस ले लेगी'।

लेकिन तीसरे वार्ताकार, जो पूर्व सूचना आयुक्त और अल्पसंख्यक आयोग के पूर्व अध्यक्ष रहे हैं, वे कभी भी उपरोक्त दोनो वार्ताकारों के साथ शाहीनबाग नहीं गये, जबकि उन्हे अपने दोनो वार्ताकार सहयोगियों के साथ जाना चाहिए था। इससे स्पष्ट है कि उनके मन में कुछ काला जरूर है। वे सिर्फ एक दिन 19 फरवरी 2020 को एक बार शाहीनबाग गये और अपने साथी-समर्थकों से बगैर बातचीत किये ही सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर कर दिया। वजाहत हबीबुल्लाह सुप्रीम कोर्ट में दायर अपने हलफनामा में लिखा है-'सीएए के खिलाफ यह प्रदर्शन शांतिपूर्ण है। पुलिस ने शाहीनबाग के आसपास पांच स्थान की नाकेबंदी कर रखी है। अगर बैरिकेटिंग हटा दी जाये तो यातायात सामान्य हो जायेगा। पुलिस अनावश्यक रूप से सड़कों को बंद किये रखा है, जिससे आम जनता को अनेक तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। सरकार को यहां आकर प्रदर्शनकारियों से बात करनी चाहिए'। इससे स्पष्ट है कि उन्होंने प्रदर्शनकारियों के पक्ष में सड़क पर प्रदर्शन करने को जायज समझा। हबीबुल्लाह प्रदर्शनकारियों से सड़क जाम करने के लिए नहीं, बल्कि सड़क जाम कर डटे रहने के लिए प्रेरित कर रहे थे। टीवी पर पूरे देश ने देखा कि शाहीनबाग के प्रदर्शनकारी कई बार काफी हिंसक हुए हैं। मसलन, शाहीनबाग में वहां के लोगों द्वारा किये जा रहे धरना प्रदर्शन का कवरेज करके टीवी पर प्रसारित करने के लिए न्यूज नेशन के पत्रकार और कैमरा मैन को शाहीनबाग वालो ने ही बुलाया था पर वहां मौजूद कुछ लोगों ने पत्रकार दीपक

चौरसिया और कैमरा मैन पर हमला कर दिया। उनके एक कैमरे को छिन लिया और दूसरे को तोड़ दिया तथा उनकी पिटाई भी कर दी। बामुश्किल हुए वे लोग भागकर वहां से कुछ दूरी पर खड़ी पुलिस की गाड़ी में शरण लेकर अपनी जान बचाने में कामयाब हो गये। ऐसे में सुप्रीम कोर्ट को वजाहत हबीबुल्लाह के खिलाफ सख्त कार्यवाई करते हुए उन्हे जेल में डाल दिया जाना चाहिए, क्योंकि वे सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त मध्यस्थ हैं। इसलिए सुप्रीम कोर्ट अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकता है, क्योंकि वजाहत हबीबुल्लाह ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश का खुल्लम-खुल्ला उलंघन किया है। वे मध्यस्थ बनने के बजाये जज बन बैठे हैं और शाहीनबाग के धरना प्रदर्शन को लेकर अपना फैसला सुना दिया है।

☆ **बेशर्म है संयुक्त राष्ट्र संगठन :-** बेशर्म है अंतर्राष्ट्रीय संगठन 'संयुक्त राष्ट्र संगठन' और उसके महासचिव 'एंटोनियो गुतरेस'। पाकिस्तान के चार दिनों की यात्रा के दौरान 19 फरवरी 2020 को पाकिस्तान के इस्लामाबाद में उन्होंने एक अखबार से साक्षात्कार के दौरान कहा-'भारत में राष्ट्रीयता को लेकर कानून बदला है। इसे लेकर वह बहुत चिंतित है। ऐसा इसलिए कि उन्हें आशंका है कि भारत में बने इस कानून से वहां के लोगों की नागरिकता छिनेगी और पाकिस्तान में भारी संख्या में मुस्लिम शरणार्थी दाखिल हो जायेंगे। इससे स्पष्ट है कि एंटोनियो गुतरेस सनकी ही नहीं, आखिरी मूढ़ भी हैं। संयुक्त राष्ट्र संगठन का दुर्भाग्य है कि ऐसा सरफिरा और मूढ़ यूएनओ का महासचिव बन बैठा है। ऐसा वक्तव्य तो कोई अंगूठा छाप व्यक्ति भी नहीं दे सकता है। नागरिकता संसोधन कानून, नागरिकता देने का कानून है, नागरिकता छिनने का नहीं। कोई भी व्यक्ति चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सिख हो या ईसाई, बौद्ध हो या जैन या पारसी, भारत का नागरिक है तो भारत का ही नागरिक बना रहेगा। पाकिस्तान तो कंगाल मुल्क है। वहां के लोगों को तो दो वक्त की रोटी बगैर सब्जी के भी नसीब नहीं हो रही है। पाकिस्तान कटोरा लेकर दुनियां भर से भीख मांग रहा है, फिर दुनियां के किसी भी देश के मुसलमान भारत में रहने वाले मुसलमान की तरह हर तरह से सुरक्षित नहीं है। ऐसे में भारतीय मुसलमान शरणार्थी बनकर पाकिस्तान में क्यों जायेंगे? अगर पाकिस्तान वहां की नागरिकता देने का पक्का वादा भी करे, तब भी भारत का एक भी मुसलमान पाकिस्तान नहीं जायेगा। भलां जन्नत

को छोड़कर दोजख में क्यों जायेगा? दरअसल, एंटोनियो गुतरेस वही बात बोल रहे हैं, जो बोलने के लिए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान उनसे कह रहे हैं। वे जान बूझकर अंधा बने हुए हैं। सारी दुनियां जानती है कि पाकिस्तान में हिन्दुओं को किस तरह की यातनाएं दी जाती है, लेकिन उन्हें यह नहीं दिखता है। उन्हें यह भी नहीं दिखता है कि पाकिस्तान आतंकवाद की फैक्ट्री है। नित्य पीओके पर सीजफायर का उलंघन करता है और भारत में आतंकवादी, नकली करेंसी और मादक पदार्थ भेजते रहता है। हद ता तब हो गई जब 3 मार्च 2020 को नागरिकता संसोधन के मुद्दे पर अप्रत्याशित कदम उठाते हुए संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार भारत के सुप्रीम कोर्ट में पहुंच गया। संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार के आयुक्त मिशेल बेचेलेत जेरिया ने कोर्ट में अर्जी दायर कर सीएए की सुनवाई में हस्तक्षेप की इजाजत मांगी। उनका दलील है कि सुनवाई के दौरान मानवाधिकार कानून मानक और नियम को ध्यान में रखना जरूरी है। वह एमिकस क्यूरी (न्याय मित्र) के तौरपर सुनवाई में शामिल होना चाहते हैं। आश्चर्य है कि मिशेल बेचलेत जेरिया को यह नहीं दिख रहा है कि पूरे पाकिस्तान में सान के 365 दिन 24 घंटे मानवाधिकार कानून की अनदेखी की जाती है। इससे स्पष्ट है कि पूरी दुनियां में शायद ही कोई इतना घटिया संगठन होगा, जितना संयुक्त राष्ट्र संगठन है। फिर किसी भी देश के सुप्रीम कोर्ट में यूएन एजेंसियों की कोई भूमिका ही नहीं है, इतना ही नहीं नागरिकता संसाधन कानून भारत का अंदरूनी मुद्दा है। यह कानून बनाने का भारतीय संसद का समप्रभु अधिकार है, जिसे लोकसभा और राज्यसभा में मेराथन बहस के बाद उचित ढ़ंग से मतदान कराकर पारित किया गया है। फिर, भारत की संप्रभुता से जुड़े किसी भी मामले पर किसी विदेशी पक्ष को दखल देने का अधिकार नहीं है। ऐसे में यूएनओ द्वारा भारत के आतंरिक मामले में टांग अड़ाना बेहूदगी नहीं तो और क्या है।

चीन बारबार यूएनओ में पाकिस्तान के खूंखार आतंकवादियों को बचाता है और पाकिस्तान की तरफ से कश्मीर मसले पर सुरक्षा परिषद में भारत के खिलाफ आवाज उठाता रहता है। यह सब यूएनओ को क्यों नहीं दिखता है, जो अवश्य ही दिखना चाहिए। पाकिस्तान लगातार बलूचिस्तान, फाटा और पीओके के गिलकित-बालिस्तान के खिलाफ दमन चक्र चला रहा है। यह सब यूएनओ को क्यों नहीं दिख रहा है। चीन अपने यहां 10 लाख उइगर मुसलमानों को उठाकर डिटेंशन सेंटर में रखे हुए है और उनपर अनेक तरह के जुल्म ढ़ा रहा है। उगर मुसलमान नमाज नहीं पढ़ सकते हैं, कुरान नहीं रख सकते हैं, ईद का रोजा नहीं रख सकते हैं, ईद नहीं मना सकते हैं, इत्यादि। पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों का उत्पीड़न पाकिस्तान द्वारा भारत में आतंकियों को घुंसपैठ कराया जाना, फेक करेंसी और नशीली दवाओं को भारत में भेजा जाना, चीन द्वारा तिब्बत में तिब्बतियों को बुरी तरह प्रताड़ित किया जाना, इत्यादि यह सब यूएनओ को क्यों नहीं दिख रहा है? इससे तो यही प्रतीत होता है कि यूएनओ को नाजायज तरीके से भारत का विरोध करने के सिवाय और कोई काम नहीं है। इतना घटिया भी कोई अंतर्राष्ट्रीय संगठन हो सकता है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

☆ **भीम आर्मी के अध्यक्ष चन्द्रशेखर आजाद** :- भीम आर्मी पार्टी के अध्यक्ष चन्द्रशेखर आजाद जाने-अनजाने में दलितों के घोर विरोधी हैं, तभी तो सीएए का विरोध कर रहे हैं। दिल्ली के जामा मस्जिद की गेट के बाहर सीएए के विरोध में इनका प्रदर्शन दर्शनीय था। ये गदगद थे कि इनके अगुवाई में कितने सारे मुसलमान इनके साथ खड़े हैं। इन्हें पता ही नहीं है कि भारत में जो शरणार्थी हैं, उनमे से 80 फिसदी दलित हैं। जो पाकिस्तान में बेशर्मी से प्रताड़ित किये जा चुके हैं। चन्द्रशेखर को कुछ पढ़ना-लिखना भी चाहिए, जिससे की इनकी मूर्खता में कुछ कमी आ जाये। इन्हें पता होना चाहिए कि पाकिस्तान में हिन्दुओं की आबादी में से अब ज्यादातर दलित ही बचे हैं। उन्हें पाकिस्तान छोड़ने की इजाजत इसलिए नहीं है कि उनके जाने के बाद वहां के शौचालयों की सफाई कौन करेगा। अतः वहां दलितों को भारत में आने के लिए थोड़े ही दिनों का वीजा बिल्कुल नहीं दी जाती है। पाकिस्तान में दलितों की बस्तियों के बाहर सेना के लोग पहरेदारी करते हैं कि वे कही भागकर भारत न चले जाये। चन्द्रशेखर को यह भी पता नहीं है कि अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी और जामिया मिल्लिया में जो सीट दलितों के लिए आरक्षित है, उन सभी सीटों पर मुसलमानों का नामांकन कर दिया जाता है। यह संविधान का खुल्लम-खुल्ला उलंघन है, लेकिन अधिकर मुसलमान संविधान का उलंघन करने में जरा भी नहीं हिचकते हैं। दरअसल, चन्द्रशेखर को भारतीय मुसलमान अपना स्वार्थ साधने के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। ये इतने मूर्ख हैं कि सीएए के विरोध में इन्हे मुसलमानों का जो समर्थन मिल रहा है, इससे ये इतरा रहे हैं। ऐसा महामूर्ख दलित को ही नहीं, बल्कि पूरे भारत को कितना नुकसान पहुंचा रहा है, इसकी कोई सीमा नहीं है। सीएए का विरोध कर ये जाने-अनजाने में देशद्रोह को अंजाम दे रहे हैं, क्योंकि सीएए का विरोध असंवैधानिक है, देश को तोड़ने वाला है। इन्हें इसका आभाष नहीं हो रहा है कि अपने हांथों से अपने पैरों पर

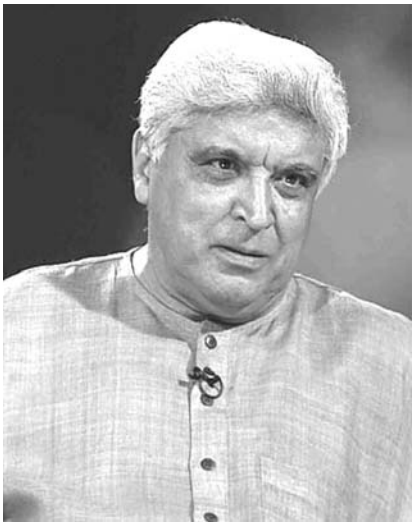

कुल्हाड़ी मार रहे हैं। ऐसा महामूर्ख अपनी पार्टी बनाकर चुनाव लड़ने की योजना बना रहा है।

✯ **क्या जावेद अख्तर शातिर देशद्रोही नहीं हैं?** :- देश के मशहूर गीतकार जावेद अख्तर मुम्बई से ही फोन पर आम आदमी पार्टी के मुखिया और दिल्ली के मुख्यमंत्री को 2020 के चुनाव के शानदार जीत पर बधाई दे सकते थे, लेकिन उन्होंने 14 फरवरी 2020 को दिल्ली में उनके निवास स्थान पर बंद कमरे में उन्हें बधाई दी। फिर अरविंद केजरीवाल खुले में भी जावेद अख्तर की बधाई स्वीकार कर सकते थे, लेकिन उन्होंने इसके लिए बंद कमरे को ही मुफीद समझा। इससे स्पष्ट है कि कुछ तो दाल में काला जरूर है। देश द्रोहियों को बंद कमरे में ही देशद्रोह से संबंधित योजना बनाने और उसके कार्यान्वयन की रूप रेखा तैयार करने में मदद मिलती है, जिससे की किसी को कुछ पता ही नहीं चले और परिणाम बहुत ही गंभीर तथा व्यापक हो। इसी बंद कमरे में बातचीत का नतीजा है 24 से 25 फरवरी 2020 तक दिल्ली में हुए दंगे।

24 से 26 फरवरी 2020 तक दिल्ली में हुए दंगे पर जावेद अख्तर ने ट्वीट कर कहा है कि दिल्ली में कई लोग मारे गये, घर फूंके गये, दुकाने लूट ली गई पर एक घर को ही सील करके उसके मालिक की खोज हो रही है। संयोग से उसका नाम ताहीर है, दिल्ली पुलिस को सलाम! जावेद अख्तर अपने बयान से यह साबित करने का प्रयास करते हैं कि यह महज संयोग है वरना मुसलमान दंगाई नहीं हो सकता, बल्कि सही मायने में मुकम्मल इंसान होता है। इससे स्पष्ट है कि जावेद अख्तर की बेशर्मी का कोई सीमा नहीं है। इतनी बेशर्मी तो किसी शैतान में भी नहीं पायी जा सकती है। दिल्ली के दंगे में 53 लोगों की मौते हुई है। 350 से अधिक लोग घायल हुए हैं, 132 घर राख में तब्दील हो गयी है, 322 दुकाने तबाह हुई है। 301 वाहन खाक हुए हैं, चार धार्मिक स्थल क्षतिग्रस्त हुए हैं, दो स्कूल जले हैं, इत्यादि। और इस भीषण दंगे की फैक्ट्री ताहीर हुसैन का घर है। सुविख्यात फिल्म अदाकारा कंगना की बहन और मैनेजर रंजना ने ट्वीट कर कहा था कि जावेद अख्तर कंगना को फिल्म अभिनेता ह्रतिक रौशन से माफी मांगने की धमकी दी थी। दरअसल, जावेद अख्तर की नजर में सिर्फ और सिर्फ मुसलमान ही इंसान होते हैं और किसी भी दूसरे समुदाय के लोग हैवान होते हैं। खासकर हिन्दु तो हैवान जरूर होते हैं, इससे साबित हो जाता है कि देश के टुकड़े-टुकड़े गैंग के प्रबल समर्थक जावेद अख्तर शातीर देशद्रोही हैं, फिर भी पुलिस उन्हें गिरफ्तार कर जेल में नहीं डाल रही है। इसका दो में से एक ही कारण हो सकता है- देश का प्रशासनिक तंत्र बहुत लचर है या सरकार मुसलमानों पर विशेष मेहरबान है। खैर! जो भी हो जावेद अख्तर बुद्धिजीवियों के लिए कलंक जरूर है।

✯ **हिन्दुओं के लिए काल है मुस्लिम महिलाएँ** :- दिल्ली के शाहीनबाग में धरना पर बैठी मुस्लिम महिलाएं जोर-जोर से ताली बजा-बजाकर 'फ्री-कश्मीर' और 'जिन्ने वाली आजादी' के नारे लगाती रहती हैं। इतना ही नहीं चार से सात साल के बच्चे-बच्चियाँ नारे लगाते हैं कि 'मोदी और शाह हमें मारने वाला है, हम उसको मारेंगे' तथा 'जो हिटलर की चाल चलेगा, वह हिटलर की मौत मरेगा'। कोई छोटा बच्चा या बच्ची बगैर बड़ों के सिखाये ऐसा बोल कैसे बोल सकता है? ये बच्चे कितनी घातक मानसिकता के साथ बड़े होंगे और कैसे-कैसे दिल को दहला देने वाले जुल्म करेंगे, यह सोचकर ही हिन्दू समाज भयभित हो रहा है। इसलिए भारत के हिन्दुओं को एक बात अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि सूरज भले ही किसी दिन पूरब के बजाय पश्चिम में उग आये, लेकिन भारत के ज्यादातर मुसलमान कभी भी हिन्दुओं के साथ प्रेम-मोहब्बत से नहीं रह सकते हैं, अमन-चैन से नहीं रह सकते हैं। दरअसल, बच्चों द्वारा उस समय ही बच्चों के मन में नफरत के बीज बो दिये जाते हैं, जब उनके दूध के दांत भी नहीं टूटे होते हैं। इसी का परिणाम है कि दो-तीन साल से लेकर छः-सात साल के बच्चे-बच्चियों द्वारा हिंसक नारे लगाया जाना। बच्चे तो वही करेंगे, जो उनके माँ-बाप सिखायेंगे। इनके धर्मगुरू भी यही सिखाते हैं। जब से संसद में सीएए कानून पास हुआ है, तब से देश के कोने-कोने में जुम्मे के नमाज के बाद आगजनी, तोड़फोड़ और खून-खराबे की घटनाएं घटी है, यह सब ऐसे ही नहीं हुआ है। इससे स्पष्ट है कि देश के मस्जिदों में नमाज के दौरान इमामो के द्वारा नवाजियों को उसकाने के कारण हुआ है। कभी-कभी टीवी पर इमामो द्वारा मुस्लिमों के मन में हिन्दू के प्रति नफरत पैदा किये जाने वाले भाषण देखने-सुनने को मिल जाता है। फरवरी 2020 में दंगा में मुस्लिम महिलाओं द्वारा सैकड़ों की संख्या में पुलिस पर बेरहमी से पत्थर मारते देखा गया है। मुस्लिम महिलाएं विशेष रूप से पुलिस को टारगेट कर उनपर पत्थर बरसा रही थी। इससे स्पष्ट हो जाता है कि मुस्लिम

महिलाएं, हिन्दुओं के लिए काल बन गई थी।

शाहीनबाग में वे ही पत्रकार और कैमरा मैन कवरेज करने के लिए मुस्लिम धरना प्रदर्शनकारियों के करीब जा सकते थे, जिन्हे पास मिला होता था और जो महिलाओं से वही प्रश्न पूछ सकते थे, जो उनको पूछने के लिए कहा गया होता था। महिलाओं ने कहा कि मेरे पास अपने पहचान का कोई भी कागज नहीं है। इसलिए सरकारी मुलाजिमो द्वारा अपनी पहचान का कोई भी कागज दिखाने को कहा जायेगा तो हम कैसे दिखा सकते हैं? लेकिन आश्चर्य है कि वे ही महिलाएं दिल्ली में मतदान के दौरान कतारों में अपने पूरे कागजात के साथ मौजूद थी। इससे स्पष्ट है कि मुस्लिम महिलाएं कितनी शातीर होती हैं। इसी का परिणाम है कि दिल्ली के मुस्लिम बहुल क्षेत्र में सबसे ज्यादा वोट पड़े हैं। मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) डॉ० रणवीर सिंह ने मतदान पूरा होने के तुरंत बाद बताया कि दिल्ली में कुल मतदान 61.56% रहा। मुस्तफाबाद में 66.29%, मटियामहल में 65.62% और सीलमपुर में 64.92% मतदान रहा। जबकि दिल्ली में औसत मतदान 61.56% रहा है, जो निश्चित रूप से हिन्दू बहुल क्षेत्र में औसत से काफी कम रहा होगा।

★ **भारत को इस्लामिक देश बनाने का साजिश है शाहीनबाग का धरना-प्रदर्शन :-** धरना पर बैठी मुस्लिम महिलाओं के धरना प्रदर्शन को लेकर दिल्ली पुलिस और दिल्ली के राज्यपाल की कोई बात नहीं मानी। गृह मंत्री और कानून मंत्री के आमंत्रण पर उनसे बात करने के लिए एक बार भी अपने डेलीगेट नहीं भेजी। सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्ति मध्यस्थों के लाख समझाने पर भी नहीं मानी। वे इस बात पर अड़ी रही कि पहले सरकार सीएए को वापस ले ले और तब प्रधानमंत्री या गृहमंत्री शाहीनबाग आकर उनसे बात करे। दरअसल, शाहीनबाग की धरना भाजपा को हराने के लिए किया गया था, वह पार्टी बुरी तरह से हार गई। आम आदमी पार्टी को जिताने के लिए ये सब किया गया था, वे पार्टी प्रचंड बहुमत से जीती। अब तक आम आदमी पार्टी के विधायक अमानुतुल्लाह खाँ, शरजील इमाम के साथ प्रर्दशनकारियों को मजबूती से डटे रहने के लिए कहा था, जिससे की सरकार को मजबूरन भारत को इस्लामिक देश घोषित करना पड़े। अब अमानुतुल्लाह खां शाहीनबाग क्यों नहीं आ रहे हैं? इसी तरह स्वरा भास्कर और कांग्रेस पार्टी के नेता मणिशंकर अय्यर और शशि थरूर शाहीन बाग क्यों नहीं आ रहे हैं? जबकि वर्षों तक उनका साथ देने का वादा किया था। अब आम आदमी पार्टी और कांग्रेस ने प्रर्दशनकारियों को उन्हीं के हाल पर क्यों छोड़ दिया है? यह उपरोक्त दोनो पार्टियों के द्वारा प्रर्दशनकारियों के साथ धोखेबाजी नहीं तो और क्या है? दिल्ली दंगा के पहले पांच-छः हजार की संख्या में धरना पर बैठी मुस्लिम महिलाएं अब कहां चली गई? अब इनकी संख्या मुस्किल से 20-25 ही रह गई है। जबकि इन्ही महिलाओं ने कहा था कि चाहे आंधी आये तूफान या फिर भारी बारिश हो तो भी वे यहां डटी रहेंगी। दिन भर बिरयानी, मिनिरल वाटर, चाय आदि इनको दिया जाता था। अब क्यों नहीं दिया जा रहा है? तीन महीने में इन प्रर्दशनकारियों पर लाखों-करोड़ों रूपये खर्च किये गये थे, सब बेकार हो गया। ये प्रर्दशनकारी कहती थी कि जिन गरीबों के पास अपनी पहचान का पेपर नहीं है, उनकी पहचान की पेपर बनवाने में जुटी हुई हूं। अगर उन्होंने ऐसा किया तो बतायें कहां किया है। जिससे कि दरियाफ्त कर उन्हें शाबासी दी जा सके। अब प्रर्दशनकारी अपने फ्लॉप शो को लेकर उलूल-जुलूल बयान दे रही हैं। कह रही हैं कि धरना पर बैठे रहने से बच्चों की पढ़ाई बाधित हो रही थी। नमाज, खासकर जुम्मे की बाधित हो रही थी। ढ़ेर सारे घरेलू काम नहीं हो पा रहे थे,

इत्यादि।

फिर करोना वायरस को लेकर यहाँ से चले जाना जरूरी था। बड़े बेआबरू होकर तेरे कुचे से हम निकले। इज्जत से पहले ही धरना से चली जाती, बेआबरू होकर धरने से जा रही हैं। वैसे तो सबकी इज्जत होनी चाहिए, खासकर महिलाओं की तो जरूर ही होनी चाहिए और विशेषकर मुस्लिम महिलाओं की तो और भी ज्यादा होनी चाहिए, क्योंकि वे पर्दे में रहती हैं और बुरका पहनकर घर से बाहर निकलती हैं। जो भारतीय मुसलमान यहां घूटन महसूस कर रहे हैं, वे समान जन हो या बुद्धिजीवी या

गीतकार-कलाकार क्यों नहीं पाकिस्तान चले जा रहे हैं? इनको लेकर इमरान सरकार बहुत ही चिंतित है। इसलिए इनको वहां हर तरह की सुख-सुविधा पाकिस्तान सरकार प्रदान करेगी। भारत में भी दोनो समुदायों के लोग सुख-चैन से रहेंगे, देश के विकास के लिए मिल जुलकर काम करेंगे और दंगा से मुक्ति मिल जायेगी।

☆ **दिल्ली की दंगा फैक्ट्री है ताहीर हुसैन का घर :-** वैसे तो हिन्दू हो या मुसलमान कोई भी दंगाई, आतंकी और अलगाववादी हो सकता है, इसलिए इसे धर्म के साथ जोड़कर देखना ठीक नहीं है। किन्तु, टीवी पर वायरल विडियो को देखने से स्पष्ट है कि आम आदमी के मुसलमान पार्षद ताहीर हुसैन के पांच मंजिली घर की छत पर बोरियों में रखे टनों ईंट-पत्थर के टुकड़े, कोल्ड्रींक्स के कैरटों में रखे पेट्रोल बम, ढ़ेर

सारे एसिड से भरे ड्रम और प्लास्टिक की थैलियों में रखे एसिड (तेजाब) के पाउच भारी मात्रा में मिले हैं। छत पर एक फुट के ढ़ेर सारे गुलेल तथा एक बहुत बड़ा गुलेल मिला है। इस बड़े गुलेल की लम्बाई 5 फीट और ऊँचाई 4 फीट है। इस गुलेल को रिक्सा को काटकर बनाया गया है। इस बहुत ही शक्तिशाली गुलेल का इस्तेमाल पेट्रोल बम के लाँचिंग पैड के रूप में किया गया है। यह गुलेल 360 डिग्री तक घूमने वाला बनाया गया है, जिससे की इसे घूमा-घूमाकर सभी दिशाओं में 100 से 200 मीटर तक पेट्रोल बम को फेका जा सके और इसका इस्तेमाल ऐसा ही किया भी गया है। ताहीर हुसैन के घर की तीसरी मंजिल पर भी उपरोक्त सभी समान भारी मात्रा में मिले हैं। इसके अलावा लोहे के धारदार और नुकीले हथियार तथा रड भी मिले हैं। इस सब का खुलासा धीरे-धीरे हो रहा है। तारीक हुसैन की देख-रेख में उनके घर के आसपास ढ़ेर सारे घरों में आग लगाकर राख में तब्दील कर दी गयी है, ढ़ेर सारे दुकान जलकर खाक कर दी गयी है। स्कूलों को

भी नहीं बख्शा गया है। उनके घर से कुछ मीटर पर स्थित दो पार्कों में पार्क किये गये 40-40, 50-50 कारों को हवाले कर दिया गया है। ढ़ेर सारे बाइकों को जलाकर राख कर दिया गया है। जिसके निशान चारों ओर देखने को मिल रहे हैं और जिसकी सफाई का काम तेजी से किया जा रहा है। खास बात यह है कि ताहीर हुसैन का घर सही सलामत है और पास का एक मुस्लिम स्कूल भी सही सलामत है। इससे स्पष्ट है कि हिन्दुओं के घर, दुकान, कार, बाइक सहित अन्य जायदादों को खाक में मिला दिया गया है। आई.बी. के अधिकारी अंकित शर्मा अपने निवास स्थान के बाहर लोगों को शांत करने में जुटे थे तो उसी समय ताहीर हुसैन के गुर्गों ने उन्हें खींचकर ताहीर हुसैन के घर के तहखाने में ले गये और उनकी हत्या कर दी। उनका शव 26 फरवरी को चांदबाग के नाले में मिला। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के मुताबिक अंकित शर्मा के शरीर पर चाकूओं के अनगिनत निशान थे। डॉक्टरों के मुताबिक अंकित शर्मा के शरीर के हर हिस्से पर चाकू मारे गये थे। यहां तक की उनकी आंत को निकाल लिया गया था। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि अंकित शर्मा की हत्या किस बेरहमी से की गई थी। चांद बाग के नाले में एक अकेला अंकित शर्मा का शव नहीं मिला है बल्कि उस नाले में कई शव मिले हैं। गोकुल पुरी के नाले में भी कई शव मिले हैं। ताहीर हुसैन के घर के तहखाने में महिलाओं के छोटे-छोटे पर्स तथा अंडर गार्मेंट्स भी बरामद हुए हैं, जिनकी लाशे चांदबाग के नाले के पास मिली है। यह सब बर्दाश्त के बाहर है। इससे साबित हो जाता है कि 1990 में जो जुल्म कश्मीर के मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं पर किया गया था, वही जुल्म दिल्ली के चांदबाग में मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं पर किया गया है। आज देश में हजारों कश्मीर है। देश में जहां कही भी मुस्लिमों की संख्या 30 फिसदी या उससे अधिक हो गई है, वह स्थान कश्मीर बन गया है। मसलन, पटना को ही ले लिजिए। जैसे-सब्जीबाग, आलमगंज, फुलवारी

शरीफ, इत्यादि। इन इलाकों में हिन्दू जाने से डरते हैं। ऐसे में भारत में हिन्दुओं का क्या होगा? उनका वजूद कैसे बचेगा?

☆ **संविधान बचाओ, नागरिकता बचाओ महारैली :-** 17 फरवरी 2020 को पटना के ऐतिहासिक गांधी मैदान में, जहां से 1946-47 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने शांति और अमन का संदेश दिया था, वही से संविधान बचाओं, नागरिकता बचाओं महारैली को संबोधित करते हुए उनके प्रपौत्र तुषार गांधी ने अमन शांति का संदेश दिया है, जबकि उसी मंच से पटना विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष मनीष कुमार ने अपने संबोधन में सीएए को काला कानून का नाम देते हुए कहा कि 'काला कानून का समर्थन करने वालों को गोलियों से भून देना चाहिए'। आश्चर्य होता है कि ये दोनो व्यक्तियों की नामसझी पर और मुसलमानों के बीच लोकप्रिय नेता बनने की महत्वकांक्षा पर भारत को बर्बाद करने वाले ऐसे व्यक्तियों से भगवान ही बचाये। मनीष कुमार तो महामूर्ख है, तभी तो पटना विश्वविद्यालय छात्र संघ का अध्यक्ष बन गया है। ऐसे ही महामूर्ख हमारे देश के विश्वविद्यालय में छात्र संघ के नेता बन रहे हैं, जिन्हें देश विरोधी बनने में मजा आ रहा है, बड़े खुश हो रहे हैं, क्योंकि उनको मुसलमानों का भरपूर समर्थन मिल रहा है। इसलिए अब तक समझने लगे हैं कि वे देश के प्रधानमंत्री नहीं तो कम से कम राज्य के मुख्यमंत्री तो अवश्य ही बन जायेंगे। इसी सभा को जेएनयू छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष कन्हैया कुमार ने भी संबोधित किया था, जिसे राष्ट्रगान भी याद नहीं है। ऐसा उसके द्वारा राष्ट्रगान गाने के द्वारा साबित हो गया।

उक्त संविधान विरोधी, नागरिकता विरोधी महारैली में सक्रिय रूप से शामिल होकर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रपौत्र तुषार गांधी ने ही उनको कलंकित कर दिया। आश्यर्च है कि तुषार गांधी को महात्मा गांधी के विचारों के बारे में कुछ भी पता नहीं है, उनके विचारों से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। वर्ष 1947 में महात्मा गांधी ने वचन दिया था कि पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान में रह रहे अल्पसंख्यकों, यानि हिन्दुओं, सिखों, बौद्धों और जैनों को यदि अपने फैसले पर पक्षतावा है तो भारत के दरवाजे उनके लिए खुले हैं और खुले ही रहेंगे। ऐसा इसलिए कि 26 सितम्बर 1947 को महात्मा गांधी ने अपनी प्रार्थना सभा में कहा था कि पाकिस्तान में रह रहे हिन्दू और सिख वहां नहीं रहना चाहते हैं तो वे नि:संदेह भारत आ सकते हैं। इस मामले में उन्हें रोजगार देना, नागरिकता देना और सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार देना भारत का प्रथम कर्तव्य है। दरअसल, ब्रिटेन चाहता था कि भारत को आजादी मिले, लेकिन आजादी मिलते समय देश खंड-खंड में बंटा हो। अर्थात् भारत एक देश न रहकर भारत, पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान में बंट जाये। भारत को बांटने की प्रक्रिया, भारत के अंतिम वायसराय लॉर्ड माउंट वेटेन की देखरेख में आजादी मिलने के बहुत पहले से ही चल रही थी। मो० अली जिन्ना और पंडित जवाहर लाल नेहरू जल्दी से जल्दी देश की सत्ता पर काबिज होने के लिए व्यग्र थे। यदि वे दोनो नेता सत्ता के लिए इतने व्याकुल न होते तो भी देश आजाद होता ही। ऐसा इसलिए कि अंग्रेजों को अच्छी तरह से एहसास हो गया था कि भारत को और अधिक समय के लिए गुलाम बनाकर रख पाना संभव नहीं है। इसलिए उन्हें भारत को छोड़कर जाना ही होगा। लेकिन वे भारत को एक शक्तिशाली देश के रूप में नहीं देखना चाहते थे, बल्कि एक कमजोर और लाचार देश के रूप में देखना चाहते थे और वे अपने साजिश को अंजाम तक पहुंचाने में सफल भी हो गये। हर भारतीयों को समझना चाहिए कि पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) में धर्म के आधार पर आजादी के समय से ही सताये जा रहे गैर मुस्लिम उन दोनो देशों के अल्पसंख्यक यानि हिन्दू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी और ईसाई भी हमारे अपने ही हैं, भारतीय हैं, क्योंकि सबों ने मिलकर आजादी की लड़ाई लड़ी है। लेकिन आजादी के समय से ही पाकिस्तान और बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों को बेरहमी से सताया जा रहा है, इसलिए वे भारत आना चाहते हैं तो हम सभी भारतीय उन्हें जरूर स्वीकार करेंगे। ऐसा ही करना भी चाहिए। देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने अपने शपथ ग्रहण के समय कहा था कि पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान में धार्मिक उत्पीड़न के चलते जो भी वहां से विस्थापित होने का कष्ट झेल रहे हैं, वे कभी भी भारत आ जाये, उनका यहां स्वागत है। इसी वचन को 2003 में राज्यसभा में विपक्ष तथा कांग्रेस के नेता डॉ० मनमोहन सिंह ने भी दोहराया था।

उक्त महारैली में मशहूर समाजिक कार्यकर्ता, नर्मदा बचाओं आन्दोलन की नेत्री और

सरदार सरोवर बांध के चलते विस्थापितों की प्रबल हिमायती मेधा पाटेकर ने भी लोगों को संबोधित किया था। आश्चर्य होता है कि इतनी महान समाजिक कार्यकर्ता संविधान विरोधी, नागरिकता विरोधी महारैली में शामिल कैसे हो गईं और मंच से जनसभा को संबोधित क्यों किया? उनसे भारत की जनता को देश विरोधी घिनौनी महारैली में शामिल होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। लगता है कि उम्रदराज होने के कारण सठिया गई हैं।

✯ **अधिकतर भारतीय मुसलमान क्रूर हत्यारे होते हैं :-** पाकिस्तान की तरह भारतीय मुसलमान भी क्रूर हत्यारे होते हैं। इतिहास साक्षी है कि सिखों के दशवें और अंतिम गुरू, गुरू गोविंद के दोनो छोटे बेटे जोरावर सिंह और फतेह सिंह को औरंगजेब ने जिंदा दिवार में चुनवा दिया था। 29 जनवरी 1990 को कश्मीर में वहां के मुसलमानों ने हजारों कश्मीरी पंडितों को उनके घरों से खींचकर हत्या कर दी थी, जिससे कश्मीर की सड़के उनके शव से पट गयी थी। वर्ष 2002 में गुजरात में ट्रेन के दो बोगियों भरे करीब 200 रामभक्तों को बोगी में तेल छिड़कर आग लगाकर जला दिया था, जबकि रामभक्तों ने किसी भी मुसलमान को कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचाया था। उसके बाद 24 फरवरी 2020 को शाहीनबाग में आईबी अधिकारी अंकित शर्मा की हत्या ताहीर हुसैन के गुर्गों ने बहुत बेरहमी से कर दी थी। उनके शरीर पर चाकूओं के अनगिनत निशान थे। शरीर के हर हिस्से पर कई-कई बार चाकू मारे गये थे। उनकी आंत को बाहर निकाल दिया गया था। पिस्टलबाज शाहरूख अपने छः-सात साथियों के साथ मिलकर 22 वर्षीय उत्तराखण्ड के नेगी नामक युवक को जमकर पिटने के बाद उसके दोनो हांथों को काट दिया और उसके शरीर पर पेट्रोल छिड़कर आग लगा दिया था। दरअसल, मुस्लिम मौलवी पूरे देश में मजलिस लगाकर मुसलमानों को हिन्दुओं के प्रति नफरत के बीज बोते रहते हैं। इसी का परिणाम है कि भारतीय मुसलमान इतने क्रूर हो गये हैं। अधिकतर भारतीय मुसलमानों के स्वभाव में बदलाव लाना मुश्किल हो गया है। ऐसे में पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान की तरह भारत में भी मुसलमानों के हांथों हिन्दुओं का सफाया निश्चित है। इसलिए भारत को जल्दी से जल्दी हिन्दू राष्ट्र बनाया जाना नितांत अनिवार्य हो गया है, जिससे की हिन्दुओं का वजूद मिटने से बचाया जा सके।

✯ **भारत में दंगे कहां और क्यों होते हैं? :-** भारत में दंगे वही होते हैं, जो मुस्लिम बहुल क्षेत्र है, एकाध अपवाद को छोड़कर। मसलन गुजरात के ट्रेन के दो बोगियों में भरे हिन्दुओं को जलाया जाना, उसके बाद ही गुजरात में दंगा भड़का था। अगर किसी को सौ-सौ थप्पड़ मारोगे तो पलटवार में वह भी एकाध थप्पड़ मारेगा ही। जब गुजरात में ट्रेन के दो बोगियो में तेल छिड़क कर हिन्दुओं को जलाने की घटना घटी थी तो पूरे देश में एक भी जगह उसके खिलाफ मुसलमानों ने कोई भी धरना प्रदर्शन नहीं किया था। ऐसा इसलिए की जो भले मुसलमान है, उनकी हत्या मुसलमानों के द्वारा ही कर दी जाती। इसलिए मुसलमानों के इस घृणित कार्य को देखकर भले मुसलमान चुप रहने को बाध्य हो जाते हैं। किसे अपनी जान प्यारी नहीं है। मसलन, देश के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अब्दुल कलाम आजाद को ही ले लिजिए। अलीगढ़ रेलवे स्टेशन पर अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के मुस्लिम छात्रों ने उनकी दाढ़ी में रेलवे ट्रैक पर पड़े मानव मल को लगा दिया था, क्योंकि उन्होंने वहां के मुस्लिम छात्रों की जादतियों का विरोध किया था। जब कट्टरपंथी मुसलमान केन्द्र के शिक्षा मंत्री के साथ ऐसा कर सकते हैं तो आम भला मानुष मुसलमान के साथ क्या नहीं कर सकते हैं? मुस्लिम बहुल क्षेत्र इलाकों में जब हिन्दुओं को अनेक तरह से प्रताड़ित किया जाता है तो कोई-कोई हिन्दू इसका विरोध करते हैं। यह मुसलमानों को जरा भी नहीं सुहाता है और वे दंगा शुरू कर देते हैं। कोई भी दंगा होगा और जब हिन्दुओं के सौ घर जलेंगे तो प्रतिक्रिया में हिन्दू भी मुसलमानों के दो-चार घर तो जला ही देगे, फिर मुसलमान पूरे देश में हो-हल्ला मचाने लगते हैं कि हिन्दुओं ने उनका घर जला दिया। उलटा चोर कोतवाल को डाटे वाली कहावत को चरितार्थ कर देते हैं। मुसलमानों के इस फिदरत को खुद खुदा भी नहीं बदल सकते हैं। मसलन, पैगम्बर मोहम्मद ने खुद को गुफा में छिपाकर बमुश्किल अपने मुसलमान साथियों से जान बचाने में सफल हुए थे, क्योंकि कई घुड़सवार मुसलमान हांथ में तलवार लेकर उनको जान से मार डालने के लिए पीछे पड़ गये थे।

कोई-कोई लोग समझते हैं कि हम दोनो समुदायों को समझा-बुझाकर आपस में प्रेम-मोहब्बत से रहने के लिए राजी कर लेंगे। हाँ, थोड़े समय के लिए तो जरूर कर सकते हैं लेकिन लंबे समय के लिए नहीं कर सकते हैं और सदा के लिए राजी करना तो नामुमकिन है। मसलन, आर्ट ऑफ लिविंग के मुखिया श्री श्री रविशंकर को ही ले लिजिए। वैसे भी और सुप्रीम कोर्ट के द्वारा नियुक्त मध्यस्थ बनने के बाद भी राम मंदिर को लेकर कोई सहमति बनाने में सफल नहीं हो सके थे। अब वे दिल्ली के दंगाग्रस्त इलाको में घूम-घूमकर दोनो समुदायों को आपस में मिल-जुलकर प्यार-मोहब्बत, अमन-चैन से रहने के लिए समझा रहे हैं। उन्होंने

अतीत से कुछ भी नहीं सिखा है। उनके जैसा हजार श्री श्री रविशंकर ऐसा करने के सफल नहीं हो सकते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जैसे हजार नरेन्द्र मोदी भी सफल नहीं हो सकते हैं। इसलिए हिन्दुओं को उनके मूल देश हिन्दुस्तान में उनका नामोनिशां मिटने से बचाना है तो भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के अलावा दूसरा कोई विकल्प नहीं है। मोदी सरकार ने मुस्लिम बहु-बेटियों की भलाई के लिए तीन तलाक हटवाया, हुनर कार्यक्रम चलावा रहे हैं। हुनर कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान कर रहे हैं तथा बाजार भी उपलब्ध करा रहे हैं। लेकिन मुस्लिम महिलाएं देश के सैकड़ों शाहीनबाग में संवैधानिक सीएए का जमकर विरोध कर रही हैं, देश विरोधी नारे लगा रही हैं और दिल्ली में भारी संख्या में बुरका पहनकर पुलिस पर बेरहमी से पत्थरबाजी की हैं। मोदी सरकार ने कश्मीर से 370 हटवाया, हजारों की संख्या में कश्मीरी मुसलमानों को पुलिस, सेना तथा अन्य महाकमों में नौकरियां दी है। सेव और केसर की बिक्री हेतु बाजार उपलब्ध करवाया है, जम्मू-कश्मीर का तेजी से विकास कर रहे हैं और हिन्दुओं की हकमारी करके केन्द्र तथा राज्य सरकारे मुसलमानों को कई तरह की सुविधाएं प्रदान कर रही है। फिर भी कश्मीर में भारतीय मुसलमान पुलिस चौकी और सेना के शिविरों पर हैंड ग्रेनेड से नित्य हमला कर रहे हैं, पुलिस चौकी पर हैंड ग्रेनेड फेक रहे हैं तथा गोलियां बरसा रहे हैं। वैसे तो सेना की चौकसी के चलते स्थानीय आतंकी घटनाओं में भारी कमी आयी है। अर्थात् भारतीय मुसलमानों के चरित्र में कोई बदलाव नहीं आया है और न ही भविष्य में आयेगा। आज भी आईएसआईएस, इंडियन मुजाहिदीन, जैस-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तोयबा, अलकायदा, आदि आतंकवादी संगठनों में शामिल होकर भारतीय मुसलमान देश में भयंकर देशद्रोही घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। मसलन, मार्च 2020 के दूसरे सप्ताह में आईएसआईएस के दो कश्मीरी मुसलमान दिल्ली में पकड़े गये हैं, जो अगस्त 2019 से ही दिल्ली में दंगा कराने हेतु कई गतिविधियों को अंजाम तक पहुंचाया है।

भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के कारगर उपाय :- हम सभी हिन्दुओं को हर हालत में इस बात का ख्याल हमेशा रखना ही होगा कि जितने भी भारतीय मुसलमान हैं, वे सभी मेरे लिए अजीज हैं। इसलिए हर तरह से उनकी हिफाजत करना हमारा पुणित कर्तव्य है। अत: हर हालत में, चाहे कितना भी बड़ा संकट क्यों न आ जाये, हम उनकी रक्षा करते ही रहेंगे। हम उनके साथ प्रेम-मोहब्बत से ही रहेंगे। हमारे बीच हमेशा अमन-चैन बना रहेगा। वैसे भी हिन्दू समुदाय, सदियों से मुस्लिम समुदाय को हर तरह की सुविधाएं प्रदान करता आ रहा है, क्योंकि हिन्दू स्वभाव से ही बहुत उदार होते हैं। लेकिन हमारे प्रति उनका बर्ताव स्वीकारयोग्य नहीं है और न ही भविष्य में स्वीकार करेंगे। भारतीय मुसलमानों को तहे दिल से सोचना चाहिए कि ताली हमेशा दोनो हांथों से बजती है, कभी एक हाथ से नहीं बजती है। इसलिए वे भी चुटकी बजाकर हिन्दुओं को धोखा देने का प्रयास छोड़ दें। मुंह में राम, बगल में छूरी वाली कहावत को चरितार्थ करने का प्रयास हरगिज न करे। आखिर अत्याचार सहने की भी एक सीमा होती है, इस बात को अच्छी तरह समझ ले। हिन्दू कब तक मुसलमानों के जुल्मों को बर्दाश्त करते रहेंगे। हिन्दुओं को बेवजह प्रताड़ित करने की प्रवृति को मुस्लिमों को त्याग देना चाहिए। यही इंसानियत है। यह तो ऐतिहासिक तथ्य है कि भारतीय मुस्लिम सदियों से हिन्दुओं को प्रताड़ित करते चले आ रहे हैं, इसलिए भविष्य में भी करते रहेंगे, क्योंकि उनको ऐसा करने की आदत पड़ गई है। इसलिए हिन्दुओं के समक्ष भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने के सिवा कोई दूसरा विकल्प नहीं बच गया है। भारत कैसे हिन्दू राष्ट्र बनेगा, कुछ सूत्र यहां दिये जा रहे हैं :-

❖ यह बिल्कुल सच है कि कोई विधायक और सांसद सिर्फ मुस्लिम वोट से कभी भी नहीं जीत सकता है। मुसलमानों के साथ-साथ हिन्दुओं का वोट मिलेगा, तभी जीत सकता है। लेकिन यह बात भी बिल्कुल सच है कि कोई भी विधायक और सांसद को मुस्लिमों का एक भी वोट न मिले, तब भी सिर्फ हिन्दुओं के वोट के बल पर चुनाव जीत सकता है, बशर्ते मुसलमान की तरह हिन्दू एकजुट होकर सौ प्रतिशत वोट करे और अपने वोट को हिन्दू उम्मीदवारों के बीच बंटने न दे। फिर हिन्दू एक-दूसरे को आगे बढ़ाने में भरपूर सहयोग दे। हमेशा ध्यान रखे कि उनकी चट्टानी एकता में कोई सेंध न लगा पाये। लेकिन बहुत दुख की बात है कि आज भी एकजुटता को लेकर ज्यादातर हिन्दू लापरवाह हैं। आज सभी भारतीय मुसलमान के पास आधार कार्ड, वोटर कार्ड सहित पहचान के सभी पेपर मौजूद है, लेकिन सभी भारतीय हिन्दुओं के पास नहीं है। मतदान के दिन सौ फिसदी भारतीय मुसलमान वोट देते हैं, लेकिन भारतीय हिन्दू कभी नहीं देते हैं। मतदान को लेकर भारतीय हिन्दू उतने गंभीर नहीं हैं, जितना होना चाहिए। यदि हिन्दू इसी तरह से तितर-बितर रहेंगे और एकजुट नहीं रहेंगे तो उन्हें बर्बाद होने से कोई नहीं बचा पायेगा। आगामी किसी भी चुनाव में हिन्दुओं को हर हालत में इस सच्चाई को साबित करने को ठान ले कि वे किसी भी देशभक्त उम्मीदवार को अपने वोट के बल पर हारने से बचा सकते हैं, तभी देशद्रोही हिन्दू और मुसलमानों का सपना टूटेगा। कोई भी उम्मीवार स्वप्न में भी हिन्दुओं के साथ गद्दारी करने का नहीं सोचेगा। हिन्दुओं अपनी ताकत को पहचानो और तुम्हारी तातक सिर्फ और सिर्फ संगठित होकर आपस में एक-दूसरे को भरपूर सहायता करते हुए प्यार-मोहब्बत से मिल-जुलकर रहने में है।

❖ हिन्दू वादा करे कि भारत जब हिन्दू राष्ट्र बन जायेगा तब भी मुसलमान के साथ उनके बर्ताव में कोई बदलाव नहीं आयोगा। हिन्दू और मुसलमान आपस में पहले की तरह प्रेम-मोहब्बत के साथ मिल-जुलकर रहेंगे और अमन-चैन का जीवन व्यतीत करेंगे।

❖ आठ-आठ, दस-दस लोगों की जमात में केन्द्र के हर सांसद और राज्य के हर विधायक को ज्ञापन दे और ज्ञापन के छायाप्रति पर उनका रिसिविंग ले ले, क्योंकि नेतागण कब और कितनी जल्दी पलटी मार दे, कहना मुश्किल है। आज जो भी पार्टी सीएए का विरोध कर रही है, वह सीएए के पक्ष में प्रेस कांफ्रेंस करके घोषणा करे, वरना हिन्दू उस पार्टी को अपना वोट नहीं देंगे।

❖ हर हिन्दू अपने-अपने घर और दुकान पर थोड़ी ऊँचाई पर एक तख्ती लगा दे, जिसपर लिखा हो, 'हिन्दुओं को हिन्दुस्तान से खत्म होने से बचाने के लिए भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित करो'। जो सामर्थमान है वे अधिक से अधिक संख्या में तख्तियों को हिन्दुओं के बीच बांटे। अगर कोई व्यक्ति इस तख्ती को उतारने का प्रयास करे या उतारे तो उसकी विडियोग्राफी मोबाइल में रिकॉर्ड कर ले, अगर इस तख्ती को उतारने का प्रयास करे तो उसे प्रेम पूर्वक समझायें, मारपीट न करें। कुछ हिन्दू बड़े सिरफिरे भी होते हैं। अगर वे विरोध करे तो उनकी दुकान तथा घर पर इस तरह की तख्ती हरगिज न लटकाएं। ऐसे नासमझों की कमी नहीं है, जो सीएए के विरोध में मुसलमानों का साथ दे रहे हैं। उन्हें समझ में नहीं आ रहा है कि मुस्लिम समुदाय मूर्ख बनाकर हिन्दुओं के कंधे पर बंदूक रखकर हिन्दुओं पर ही चलवा रहा है।

❖ अब जब लोकसभा, राज्यसभा, विधानसभा और विधान परिषद का पहला सत्र चलेगा, उसमें पहले बिल के रूप में भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने का प्रस्ताव पेश करे और मतदान कराकर पारित करवायें, जिससे भारत में हिन्दुओं की हिफाजत की जा सके। ●

ग्रामीण रोजगार और कौशल विकास से बदलेगी देश की सूरत : रामनाथ कोविंद

● **अमित कुमार**

झारखण्ड में केंद्रीय विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में भाग लेने आये राष्ट्रपति रामनाथ कोबिद ने गुमला जिले के विशुनपुर में जाकर पद्मश्री से सम्मानित और जनजातीय समाज के उत्थान के लिए कार्य कर रहे अशोक भगत द्वारा चलाये जा रहे संस्कार भारती के कार्यक्रम में भी हिस्सा लिया और उसकी भूरी-भूरी प्रशंसा की। राष्ट्रपति अपने झारखंड प्रवास के दरम्यान देवघर स्थित बाबा बैजनाथ का भी दर्शन किया।

28 फरवरी को झारखण्ड में स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह में कुल 590 छात्रों को डिग्रियां बांटी गई। जिसमें आशांन्वित 96 गोल्ड मेडलिस्टो के चेहरे पर राष्ट्रपति के हाथों स्वर्ण पदक व प्रमाण पत्र प्राप्त करने की खुशी देखने लायक थी। परंतु यह खुशी तब धरी की धरी रह गई जब राष्ट्रपति ने 96 में से मंच से मात्र 11 छात्रों को ही अपने हाथों से गोल्ड मेडल व डिग्रियों का वितरण किया। हालांकि राष्ट्रपति ने सारे गोल्डमेडलिस्टो के साथ एक ग्रुप फोटो खिंचवाई। ऐसे में राष्ट्रपति के हाथों पदक और प्रमाण पत्र प्राप्त करने से वंचित रह गए छात्रों ने राष्ट्रपति के कार्यक्रम से जाने के बाद नाराज हो गए और हंगामा करने लगे। कइयों ने तो अपने प्रमाण पत्र तक फेक दिए। उनका कहना था कि 96 स्वर्ण पदक धारकों में से विश्वविद्यालय प्रशासन केवल 11 को ही राष्ट्रपति के हाथों पदक और प्रमाण पत्र किस आधार पर दिलवाया। नाराज विद्यार्थियों को कुलपति ने समझाया तब जाकर सारे छात्र अपने डीन और प्राध्यापकों के हाथों पदक और प्रमाण लेने को तैयार हुए। नाराज छात्रों को समझते हुए कुलपति ने कहा कि हमारे लिए सभी छात्र सामान्य हैं लेकिन प्रोटोकॉल की बाध्यता और राष्ट्रपति भवन के शर्तो पर मिली अनुमति के कारण ही मात्र 11 छात्रों को राष्ट्रपति महोदय के हाथों पदक और प्रमाण पत्र दिलाया जा सका। तब जाकर छात्र शांत हुए। समयाभाव के कारण चेरी मनातु स्थित केंद्रीय विश्वद्यालय के नए भवनों का उद्घाटन तथा वृक्षा रोपण कार्यक्रम भी राष्ट्रपति के हाथों सम्पन्न नही हो सका। राष्ट्रपति के हाथों प्रमाण पत्र प्राप्त करने वालों में पीएचडी के छात्र बेंजामिन दास, एमबीए की छात्रा सोनी कुमारी अदिति मिश्रा, जियोइंफॉर्मेटिक्स के डी.के. , रितुश्री नैनो टेक्नोलॉजी की छात्रा मुनचुन कुमारी अंग्रेजी की छात्रा जयंती कुमारी मासकम्युनिकेशन

प्रकृति के साथ संतुलन बनाये रखने की कला आदिवासियों से सीखें देश के युवा : रामनाथ कोविंद

झारखण्ड में 26 प्रतिशत जनजातीय समाज के लोग है जो इस भौतिकवादी युग में आज भी प्रकृति से सन्तुलन बनाये रखा है।देश के युवा प्रकृति से सन्तुलन और सामंजन बनाने की कला इस समाज के लोगों से सीखें तथा इनके लिए जॉब क्रियेटर बनें। उक्त बातें देश के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने अपने झारखंड प्रवास के दरम्यान केंद्रीय विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह तथा सेवा भारती के कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा। कोविंद ने कहा कि प्रकृति के गोद मे रहने वाले देश का यह समाज प्रकृति से सन्तुलन बना कर स्वस्थ परम्पराओं को जीवित रखा है। ज्ञान से बुद्धि का विकास होता है,उस विकसित बुद्धि का प्रयोग हमें कौशल विकास के लिए करना होगा। हमारा कौशल विकास का एक मात्र साधन शिक्षा है। सशक्त समाज के लिए महिला सशक्तिकरण भी आवश्यक है। जिसका सबसे प्रभावी तरीका शिक्षा ही है। गोल्ड मैडल प्राप्त करने वालों में बेटियों की संख्या अधिक है। उन्हें साइंस और टेकनोलोजी अपनाने की जरूरत है। राष्ट्रपति ने कहा कि 21 वीं सदी में भारत को ऊपर ले जाने जे लिए युवाओं को विज्ञान प्रद्योगिकी के साथ साथ युवाओं को आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक, गुणों को आत्मसात करना होगा। इसके लिए रामकृष्ण मिशन और विकास भारती जैसे संस्थानों को जानना होगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा को केवल अपने आर्थिक विकास का साधन नही बल्कि अध्यात्म, नैतिकता और चारित्रिक समाहित शिक्षा को अपना कर अपना सर्वांगीण विकास करें और देश और समाज में अपना छाप छोड़ जायें। उन्होंने कहा कि देश की सेवा के कई तरीके हैं। पद्मश्री अशोक भगत जी के लिए भी दो तरीकें हो सकते थे। एक यह कि ये साधन संपन्न थे अपने घर मदद के लिए आये लोगो का मदद कर सकते थे। दूसरा जन सब को त्याग कर उनके लिए उत्थान के लिए कुछ करें। इन्होंने सेवा का दूसरा तरीका अपनाया।उक्त बातें राष्ट्रपति ने विकास भारती के प्रकल्पों के निरीक्षण के बाद आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा। रामनाथ कोविंद ने विकास भारती के सचिव पद्मश्री अशोक भगत की सराहना करते हुए कहा कि इनको मैं बहुत पहले से जनता हूँ।यूपी के रहने वाले अशोक भगत सम्पन्न परिवर से है।ये चाहते तो राजनीति के क्षेत्र में सांसद और विधायक बन सकते थे लेकिन इन्होंने जंगलो में रहना और आदिवासी मिट्टी से जुड़ कर आदिवासियों का उत्थान अपना लक्ष्य बनाया सम्भव है।

इनका कृत्य लम्बे समयों तक झारखण्ड के जंगलो में याद किया जाता रहेगा। अशोक भगत के मॉड्यूल को अपना कर ही देश की सूरत बदली जा सकती है। जब देश के गांवों सूरत बदलेगी तो देश में अपने आप बदलाव दिखने लगेगी। इसके लिए गांव की जरूरतों को समझनी होगी और जमीनी स्तर पर काम करना होगा। ग्राम स्तरीय रोजगार के सृजन और कौशल विकास से गाँवों की सूरत बदलनी होगी। उन्होंने कहा ये सारे कार्य विकास भारती की सोच में है और उसे जमीन पर उतार भी रही है। भ्रातृत्व भाव देश और समाज को जोड़ता है। देश को जोड़ने और तोड़ने वालों के आचरण भिन्न होते हैं। इन आचरणों को हमें समझना होगा। हम इंसान हैं हमारा आचरण इंसानियत की होनी चाहिए। विशुनपुर त्याग और बलिदान की भूमि है संघर्ष यहाँ की मिट्टी-मिट्टी से दमकता है।गांधी के अनुयायी टाना भगत और फूलों झानों के इस मिट्टी की गौरवशाली इतिहास है। इन ऐतिहासिक पुरुषो से हमे सदैव प्रेरणा लेने की जरूरत है।

की छात्रा अंकिता सिंह, प्रज्ञा पांडेय लाइफ साइंस के छात्र कौस्तव दास इंटरनेशनल रिलेशन की छात्रा प्रियंका कुमारी तथा शक्ति सिंह शामिल है। दीक्षांत समारोह को विश्वविद्यालय के कुलाधिपति सेवानिवृत न्यायाधीश वी.एन. खरे तथा कुलपति डॉ.नन्द कुमार यादव इंदु ने सम्बोधित करते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय विकट परिस्थितियों में भी जिस तरह से अपनी पहचान बना खुद को स्थापित किया है इसमें यहाँ के छात्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा रहा है। यहाँ के छात्र अपनी कड़ी मेहनत के बदौलत इतनी संख्या में स्वर्ण पदक हासिल कर विश्वविद्यालय की गुणवत्ता सिद्ध की है। यही गुणवत्ता इसकी उत्कृष्टता का घोतक है। अपनी पहली दीक्षांत समारोह में 590 छात्रों को प्रमाण पत्र और 96 को

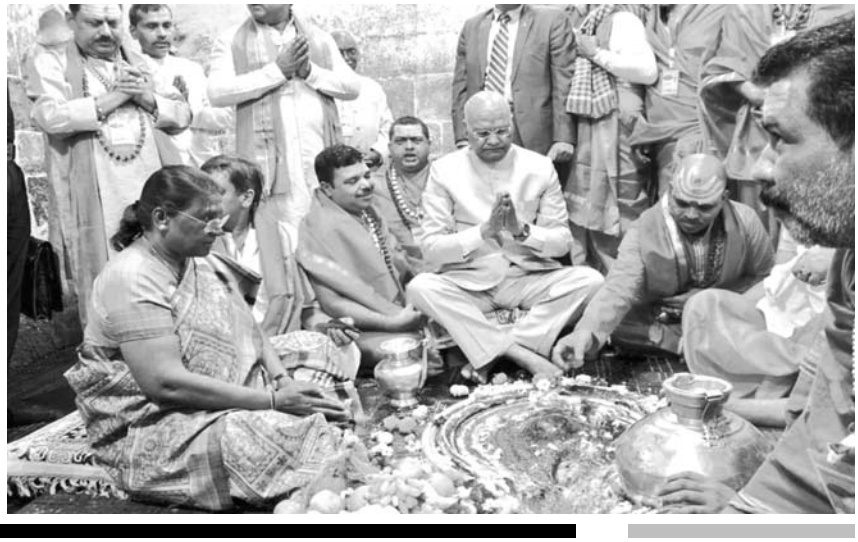

स्वर्ण पदको से सम्मानित करना जिसके मुख्य अतिथि देश के राष्ट्रपति हो यह वास्तव में अपने आप मे ऐतिहासिक व अविस्मरणीय क्षण है। कुलपति डॉ नन्द कुमार यादव ने समारोह के मुख्य अतिथि देश के राष्ट्रपति रामनाथ कोविद झारखंड के राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू, कुलाधिपति वीएन खरे को प्रतीक चिन्हों था पुष्प गुच्छ भेट करते हुए कहा कि यह विश्विद्यालय सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्रों में इतने कम दिनों में ही अपनी वेहत्तर पहचान बना ली है। दीक्षांत समारोह के दूसरे दिन राष्ट्रपति गुमला के विशुनपुर में समाज के बुद्धिजीवियों, किसानों तथा जनप्रतिनिधियों को सम्बोधित किया।

बाद में वायुसेना के विमान से देवघर जा कर राष्ट्र कल्याणर्थ बाबा बैजनाथ की पूजा अर्चना की राज्य के राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू के साथ बाबा बैजनाथ के गर्भगृह में लगभग 10 मिनट तक देवघर धर्मरक्षणि समिति के पंडो ने शंखनाद, शिवलिंग स्पर्श और आरती से राष्ट्रपति महोदय का बाबा बैजनाथ का पूजा अर्चना कराया बाद में देवघर परिषदन के लिए प्रस्थान से पूर्व जिला प्रशासन और धर्मरक्षणि समिति ने रुद्राक्ष व अंग

वस्त्र देकर सम्मानित किया वही शिव पार्वती की प्रतीक चिन्ह भी प्रदान कर उनकी यात्रा को यादगार बनाया। देवघर से शाम को राष्ट्रपति राज्यभवन राँची पहुँचे जहाँ से अहले सुबह वे वायुसेना के विमान से रायपुर के लिए रवाना हुए। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के झारखण्ड आगमन पर राज्य के आला अधिकारियों के अलावे राज्य के मंत्रियों के साथ साथ झारखण्ड के मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन और महामहिम द्रौपदी मुर्मू ने भी स्वागत किया। ●

प्रेमिका के नहीं आने पर प्रेमी ने कर ली आत्महत्या

● ओम प्रकाश/ब्रजेश कुमार मिश्रा

रांची के जगन्नाथपुर थाना क्षेत्र हटिया के रिवर व्यू कॉलोनी में किराए के मकान में रहने वाले गौरव श्रीवास्तव (उम्र 29 साल) ने कीटनाशक दवा खाकर आत्महत्या कर ली। सूचना मिलने पर गुरुवार को पुलिस उसके घर पहुंची और शव को अपने कब्जे में कर पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया। गौरव श्रीवास्तव राकेश सिंह के मकान में किराए पर रहता था। वह वालेस फार्मा कंपनी में एमआर था। जानकारी के अनुसार गौरव का लगभग तीन वर्षों से हरमू स्थित विद्यापति नगर निवासी एक महिला से प्रेम प्रसंग चल रहा था। होली वाले दिन रात के लगभग नौ बजे गौरव अपनी अपनी प्रेमिका को फोन कर हटिया बुलाने की जिद करने लगा और कहा कि तुम नहीं आओगी तो मैं जहर खा लूंगा। इस पर महिला ने कहा कि रात हो गई है, इसलिए वह अभी नहीं आ सकती है। वह कल आ जाएगी इतना कहकर महिला ने फोन रख दिया। दूसरे दिन जब महिला ने गौरव को फोन किया तो वह फोन नहीं उठा रहा था ।उसके बाद महिला ने गौरव के बड़े भाई को इसकी सूचना दी। उसके बाद उसके भाई ने भी गौरव को बहुत बार फोन किया लेकिन उसने किसी का फोन नहीं उठाया।

☞ **बाथरूम में गौरव का शव पाया गया :-** जब महिला व गौरव के घरवाले उसके घर पहुंचे तो दरवाजा अंदर से बंद था। उन लोगों ने काफी आवाज देकर दरवाजा खुलवाने की कोशिश की, काफी आवाज देने पर भी गौरव ने दरवाजा नहीं खोला तो उनके परिजन दरवाजा तोड़कर घर के अंदर घुसे। अंदर घुसते ही उन्हें गौरव का मृत शरीर मिला उसके पास में सल्फास की गोली कैची और एक गिलास पड़ी थी। गौरव ने उल्टी भी की थी। गौरव की लाश देखकर उसके परिजनों में अफरा-तफरी का माहौल हो गया। घटना सुनकर मृतक के माता-पिता भी जो गया के रहने वाले हैं रांची पहुंच गए।

मृतक गौरव श्रीवास्तव

☞ **पुलिस को घर से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है :-** पोस्टमार्टम के बाद गौरव का हरमू मुक्तिधाम में दाह संस्कार किया गया। पूछताछ के क्रम में महिला ने बताया कि वह गौरव के साथ तीन वर्ष से लिव इन रिलेशनशिप में थी। महिला की अनुपस्थिति में गौरव ने आत्महत्या की, इस मामले में पुलिस ने युवक के बड़े भाई शिशिर कुमार श्रीवास्तव के बयान पर यूडी केस दर्ज किया है, और जांच में जुट गई है गौरव अपने तीन भाइयों में सबसे छोटा था। ●

कोयला कारोबारी की कर दी गई हत्या

● **ओम प्रकाश**

बरियातू थाना क्षेत्र के मोरहाबादी मैदान स्थित होटल पार्क प्राइम के पास टंडवा के रहने कोयला कारोबारी प्रेम सागर मुंडा को अज्ञात अपराधियों ने गोली मार दी. आनन-फानन में प्रेम सागर मुंडा को रिम्स ले जाया गया जहां उनकी मौत हो गयी. घटना की सूचना मिलने पर मौके पर पुलिस पहुंच कर मामले की छानबीन में जुट गई है। प्रेम सागर मुंडा की हत्या के मामले में प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि सोमवार को शाम करीब 7:00 बजे प्रेम सागर मुंडा अपने फॉर्च्यूनर एसयूवी जेएच 01 बीटी 0009 से मोराबादी स्थित पार्क प्राइम होटल के पास रुके हुए थे ।एक चाय की दुकान के पास थे और चाय पी रहे थे। इसी बीच वहां बाइक से पहुंचे अपराधियों ने उनसे बातचीत की और अचानक उन पर ताबड़तोड़ गोलियां चला दी ।गोली मारने के बाद अपराधी मौके से फरार हो गए। शुरुआती जांच में यह सामने आया है कि हत्या की वजह लेवी के पैसे के कारण विवाद के अलावा ऐदलहाटू में एक बेशकीमती जमीन का विवाद भी बताया जा रहा है। प्रेम सागर मुंडा की हत्या किस वजह से की गयी है अब तक इसके पीछे की स्थिति स्पष्ट नहीं हो पायी है। पुलिस सभी मुख्य बिंदुओं को ध्यान में रख कर मामले की छानबीन में जुटी हुई है। बताया जाता है कि कोयला कारोबारी प्रेम सागर मुंडा केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा का करीबी था. इस बात की चर्चा है कि प्रेम सागर मुंडा का टीपीसी से विवाद चल रहा था। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार मोरहाबादी स्थित पार्क प्राइम होटल के पास चाय दुकान के सामने पहले से अपराधी घात लगा कर बैठे हुए थे. जैसे ही प्रेम सागर मुंडा अपनी फॉर्च्यूनर गाड़ी को पार करके दुकान के सामने आये उसी दौरान अपराधियों ने प्रेम सागर मुंडा को गोली मार दी। प्रेमसागर मुंडा के साथ दो लोग और आये थे, घटना के बाद से वे दोनों फरार बताये जा रहे हैं।

☞ **हत्या की वजह स्पष्ट नहीं :-** प्रेम सागर मुंडा की हत्या किस वजह से की गयी है, अब तक इसके पीछे की स्थिति स्पष्ट नहीं हो पायी है. प्रेम सागर मुंडा की हत्या कोयला कारोबार के चलते भी किये जाने की आशंका जतायी जा रही है। अपराधियों ने घटना को अंजाम दिया या

किसी उग्रवादी संगठन के द्वारा घटना को अंजाम दिया गया, इसकी अभी सही जानकारी सामने नहीं आ पायी है। पुलिस की जांच के बाद ही घटना के पीछे की सही वजह का पता चल पायेगा। मिली जानकारी के अनुसार प्रेम सागर मुंडा चतरा की विभिन्न कोल परियोजनाओं में सीसीएल के कर्मी और कोल परियोजना के सेल्स इंचार्ज विस्थापन समिति और कोल फील्ड लोडर एसोसिएशन के नाम पर उग्रवादी संगठन टीपीसी के लिए लेवी की वसूली करने का भी काम करता था। जानकारी के अनुसार प्रेम सागर मुंडा के खिलाफ एनआइए भी जांच में जुटी थी। टेरर फंडिंग के मामले में पिपरवार (कांड संख्या 36-19) में प्रेम सागर मुंडा समेत 77 आरोपियों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की गयी थी । एनआइए सभी आरोपित की चल-अचल संपत्ति को खंगालने में जुटी है। बताया जा रहा है कि प्रेम सागर मुंडा ने रांची स्थित मोरहाबादी, कांके सहित कई इलाके में संपत्ति अर्जित की है। टीपीसी से जुड़े प्रेम सागर मुंडा के खिलाफ एनआइए के साथ-साथ पुलिस भी जांच में जुटी थी. वहीं मृतक के खिलाफ टंडवा थाना में (कांड संख्या 222-18) भी मामला दर्ज है। प्रेम सागर मुंडा पिता स्वर्गीय प्रयाग मुंडा बचरा परियोजना में पंप ऑपरेटर थे। राय कोलिबरी खदान में उसकी पोस्टिंग थी। प्रेमसागर के चार बच्चे हैं जिनमें दो बेटे और दो बेटियां हैं। उनकी पत्नी का नाम सरिता देवी है। प्रेम सागर का भाई बबलू टंडवा प्रखंड का प्रमुख है। प्रेम सागर का एक घर बसंत विहार कॉलोनी बचरा में भी है। इधर कोयला कारोबारी और विस्थापित नेता प्रेम सागर मुंडा की हत्या में टीपीसी ने अपनी संलीप्ता से इन्कार किया है। प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन तृतीय प्रस्तुति कमेटी (टीपीसी) के दक्षिण छोटानागपुर जोनल विक्रांत ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा है कि प्रेमसागर मुंडा से टीपीसी संगठन का कोई विवाद नहीं था। किसी भी विस्थापित की हत्या होती है तो उसकी हत्या का आरोप पुलिस टीपीसी पर लगा कर पल्ला झाड़ लेती है। पिपरवार थाना के बिलारी निवासी विस्थापित नेता प्रेमसागर मुंडा की हत्या के मामले में भी ऐसा हो रहा है। विक्रांत ने विज्ञप्ति के जरिए कहा कि टीपीसी का गठन माओवादियों में घुसे कुछ गलत तत्वों के खिलाफ हुआ।

☞ **माओवाद से संघर्ष में सैकड़ों निर्दोष ग्रामीणों को माओवादियों ने मार दिया :-** टीपीसी ने संघर्ष कर इस एरिया को माओवाद से मुक्त कराया। जब पूरा इलाका शांत हो गया तो पुलिस का नकारात्मक चेहरा सामने आने लगा और ग्रामीण विस्थापितों को टीपीसी के नाम पर तंग किए जाने लगी है। पुलिस के दहशत के कारण कई लोग अपना गांव छोड़ चुके हैं। टीपीसी बैकफुट पर आ गया तो इस एरिया में श्रीवास्तव गिरोह, पांडे गिरोह और अब सुजीत सिन्हा गिरोह के गुंडे पुलिस से सांठगांठ कर इस पूरे इलाके की शांति में जहर घोल रहे हैं। हाल ही में ऐसे गिरोह ने कई स्थानीय लोगों की हत्या की है। ऐसे गिरोह के लोग शहरों में रहकर अपना गिरोह चलाते हैं। पुलिस इनका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाती और बिना वजह टीपीसी पर आरोप लगाते हैं। विक्रांत ने कहा कि प्रेम सागर का टीपीसी से 100 करोड़ रुपए की लेवी के हिसाब का मामला चल रहा था। यह सरासर झूठा और हास्यास्पद आरोप है। प्रेम सागर से संगठन का कोई विवाद नहीं था। टीपीसी ने इस मामले का निष्पक्ष जांच कराने की मुख्यमंत्री से मांग की है। 2 मार्च को प्रेमसागर मुंडा की बरियातू थाना क्षेत्र स्थित मोराबादी के होटल पार्क प्राइम के पास अपराधियों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। अपराधियों ने प्रेम पर छह गोलियां चलाई थी। चार गोली सिर और तीन गोली सीने में लगी थी। ●

गैंगरेप के दो आरोपियों को उम्रकैद

लॉ की छात्रा से गैंगरेप के 11 अभियुक्त को मिली सजा

आखिरी सांस तक रहेंगे सलाखों के पीछे

● ओम प्रकाश

कुलदीप उरांव

ऋषि तिर्की

रवि उरांव

राजन उरांव

संदीप तिर्की

बसंत कच्छप

नवीन उरांव

रोहत तिर्की

अजय मुंडा

सुनील उरांव

सुनील मुंडा

जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड में हो रही सुनवाई

नाबालिग आरोपी

31 अगस्त 2019 को संध्या में एक नाबालिग अपने साथ पढ़ने वाले मित्र के साथ बरियातू पहाड़ घूमने के लिए गई थी। इसी क्रम में थोड़ा अंधेरा होने पर क्षेत्र में पहले मौजूद दो मनचले उन लोगों के पास आ गए और तरह तरह से डराने और धमकाने लगे। उन मनचलों ने उन्हे पहाड़ से नीचे फेंकने और जान से मारने की भी धमकी दी। फिर थोड़ा और अंधेरा होने पर दोनों को जबरन पहाड़ के ऊपर ले गए और ले जाकर सुनसान स्थान पर ,एक मनचले ने नाबालिक के साथ आए लड़के को अपने कब्जे में लिया और दूसरे ने नाबालिग के साथ जबरदस्ती की,इससे पहले पीड़िता द्वारा उसे छोड़ देने के लिए हाथ जोड़ कर मिन्नतें की गई लेकिन मनचलो पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। दोनों मनचलो ने बारी-बारी से उसके साथ सामूहिक दुष्कर्म किया और अपनी हवस मिटाने के बाद ,दोनों अलग-अलग रास्ते से, पीड़िता एवं उसके दोस्त को अलग अलग ले कर नीचे उतरे। फिर एक मनचले ने दूसरे मनचले को मोटरसाइकिल के साथ बुलाया ,उसपर पर पीड़िता को बैठाकर लड़का के पास ले गया ,इसी दरमियान उस लड़के और पीड़िता ने अपराधियों के मोटरसाइकिल का नंबर देखकर अपने स्मार्टफोन में सेव कर लिया। फिर दोनों अपराधियों के चंगुल से छूटने के बाद पीड़िता एवं उसका दोस्त अपनी स्कूटी से बूटी मोड़ की तरफ जाने लगे। रास्ते में ही पीड़िता ने अपने पिता को फोन कर मदद की गुहार लगाई और उसे सारे घटनाक्रम से अवगत कराया। पीड़िता के पिता तुरंत पहुंचे और सदर पुलिस को इसकी सूचना दी। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए महिला टीम एवं पदाधिकारियों को साथ लेकर पीड़िता से सारे मामले के बारे में जाना और तत्काल आसपास से जानकारी हासिल की, पीड़िता एवं उसके मित्र से अपराधी के बाइक के नंबर की जानकारी पर रात्रि में ही एक आरोपी की शिनाख्त की गई, और सुबह होते होते एक आरोपी को धर दबोचा गया। कड़ाई से पूछताछ के क्रम में आरोपी ने उसने अपने दूसरे साथी का भी नाम और पता बता दिया। घटना के समय प्रयोग होने वाले उक्त मोटरसाइकिल को भी जब्त कर लिया गया। अपराधियों के द्वारा घटना के दिन पहने हुए कपड़े को भी जप्त किया गया। दोनों आरोपियों में से एक का नाम खुर्शीद अंसारी और दूसरा सरफराज अंसारी है । यह दोनों सदर थाना क्षेत्र के बढ़गाई के रहने वाले हैं। पुलिस द्वारा ना केवल तत्परता पूर्वक अनुसंधान किया गया बल्कि इस घटना के लगभग सात आठ घंटे के अंदर ही दोनों अपराधियों को राची की सदर पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। दोनों गिरफ्तारी के समय से ही जेल में बंद थे। न्यायालय के आदेश से दोनों आरोपियों को जेल में ही पीड़िता द्वारा पहचान परेड कराया गया। जिसमें पीड़िता द्वारा आरोपियों का सही सही पहचान किया गया। वरीय पदाधिकारी के आदेश पर इस कांड का स्पीडी ट्रायल (त्वरित विचारण) कराया गया,जिसमें अभियोजन की ओर से 12 गवाहों की गवाही हुई। अभियोजन द्वारा इस केस का वैज्ञानिक तरीके से अनुसंधान किया गया। दोनों आरोपियों के रक्त नमूने लेकर पीड़िता के डीएनए प्रोफाइलिंग कराते हुए मिलान कराया गया। न्यायालय ने अभियोजन द्वारा संग्रह किये साक्ष्यों को निर्णायक मानते हुए दोनों आरोपित अपराधियों को पोक्सो अधिनियम एवं बलात्कार का दोषी माना और 22 फरवरी 2020 को खचाखच भरी अदालत में दोनों अपराधियों को उसके कुकर्मो की सजा सुनाई गई। उन्हें आजीवन कारावास की सजा हुई और लाखों रुपए का जुर्माना भी हुआ। न्यायालय द्वारा सजा सुनाए जाने के बाद पीड़िता के परिजन सहित कानून का सम्मान करने वाले लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई ,और पूरे क्षेत्र में पीड़िता को न्याय मिलने को लेकर चर्चा का बना रहा। पीड़िता के परिवार ने केस के आईओ रहे सदर थाना प्रभारी वेंकटेश कुमार को दुआओं के साथ धन्यवाद दिया।

वैंकेटेश कुमार

गौरतलब हो कि वही 26 नवंबर 2019 को हुए लॉ की छात्रा के साथ काके के संग्रामपुर में सामूहिक दुष्कर्म के मामले में प्रधान न्याय युक्त नवनीत कुमार की अदालत ने 2 मार्च 2020 सोमवार को अपना फैसला सुना दिया। अदालत ने घटना को जगाने, मानते हुए कहा कि दोषियों को अंतिम सांस तक जेल में रहना होगा। इस मामले के सभी 11 अभियुक्तों की वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए पेशी हुई। अदालत ने दोनों पक्षों की दलील सुनने के बाद अभियुक्तों को उनकी अंतिम सांस तक उम्र कैद की सजा सुनाई है। करीब पंद्रह मिनट की सुनवाई के बाद जज साहब ने

सजा का ऐलान किया। अभियुक्तों में सुनील मुंडा, कुलदीप उरांव, सुनील उरांव, संदीप तिर्की, अजय मुंडा, राजन उरांव, नवीन उरांव, बसंत कच्छप, रवि उरांव, रोहित उरांव और ऋषि उरांव शामिल है। प्रत्येक अभियुक्त को पचास पचास हजार रुपए जुर्माना भी लगाया गया है। अदालत ने जुर्माने की राशि पीड़िता को देने का आदेश दिया। जुर्माना नहीं देने पर अभियुक्तों को एक साल की अतिरिक्त सजा काटनी होगी। सोमवार दोपहर 1:30 बजे जज साहब बैठे और दोनों पक्षों की दलीलें सुनी और दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद 1:45 बजे अदालत में जज साहब ने सजा सुनायी। सजा सुनाए जाने के बाद बचाव पक्ष के वकील ने कहा कि वे हाईकोर्ट में फैसले के खिलाफ अपील करेंगे। अदालत की कार्रवाई शुरू होते ही बचाव पक्ष के वकील एमसी दास, ईश्वर दयाल और विनोद सिंह ने अदालत से गुजारिश की कि, अधिकतर अभियुक्तों की उम्र 20 साल से कम है। सभी छात्र हैं और इनकी कोई अपराधिक इतिहास नहीं है। इसे देखते हुए इन्हें कम से कम 20 साल की सजा दी जाए। इस पर अभियोजन पक्ष के वकील ने अपनी दलील दी, उन्होंने अदालत से कहा कि अभियुक्तों के जघन्य अपराध किया है, इसलिए उन्हें अधिक से अधिक सजा दी जाए। इस दौरान पीड़िता के अधिवक्ता अरविंद लाल ने कहा कि सभी 11 अभियुक्तों ने जघन्य अपराध किया है। यदि फांसी से बढ़कर कोई सजा होती है,तो वह भी इन्हें दी

डीएसपी, नीरज कुमार

जाए, ताकि समाज में एक संदेश जाये और दूसरे लोग इस प्रकार के अपराध करने से पहले सौ बार सोचे। इस दौरान अदालत में डीजीपी केएन चौबे, डीआईजी एमबी होमकर, एसएसपी अनीश गुप्ता, ग्रामीण एसपी ऋषभ झा डीएसपी नीरज कुमार सहित काफी संख्या में अधिवक्ता उपस्थित थे। अदालत ने अभियुक्तों को सामूहिक दुष्कर्म की धारा 376 डी में अंतिम सांस तक कारावास। अपहरण की धारा में 10 साल। पीड़िता के दोस्त को पकड़ने व मारपीट के मामले में एक 1 साल और पीड़िता का मोबाइल फोन चोरी करने एवं धारा 411 के मामले में तीन-तीन साल की सजा सुनाई है। सभी सजाएं एक साथ चलेंगी।

क्या है पूरा मामला :- इस केस के आईओ डीएसपी नीरज कुमार ने बताया की 26 नवंबर 2019 को कांके के संग्रामपुर में लॉ की छात्रा के साथ सामूहिक दुष्कर्म की घटना हुई थी। शाम लगभग 5:30 बजे संग्रामपुर बस स्टॉप के समीप लॉ की छात्रा अपने पुरुष मित्र के साथ बैठी हुई थी, उसी समय दोअभियुक्त वहां पहुंचे और पुरुष मित्र के साथ मारपीट कर डरा धमका कर अपने साथ ले गए। एक सुनसान स्थान पर ईट भट्टे मे ले जाकर उन लोगों ने अपने और बाकी के अभियुक्तों को भी फोन करके बुला लिया। जिसके बाद अभियुक्तों ने छात्रा के साथ सामूहिक दुष्कर्म किया था। इस मामले में एक नाबालिग सहित 12 अभियुक्त थे। घटना के दूसरे दिन ही सभी अभियुक्तों को कांके पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया था। कुछ दिन के बाद ही उच्च न्यायालय ने मामले में संज्ञान लेकर स्पीडी ट्रायल का आदेश दिया था। इसके बाद से ही इस मामले में हर दिन सुनवाई चल रही थी। इस मामले में अभियोजन की ओर से आईओ सहित 21 गवाही दर्ज कराई गई। मामले में संलिप्त एक नाबालिग के सुनवाई जुवेनाइल जस्टिस में चल रही है। केस के आईओ रहे डीएसपी नीरज कुमार की भूमिका अहम। उन्होंने बहुत बारीकी से इस केस की दिन-रात मॉनिटरिंग की, अपराधियों के खिलाफ सबूत जुटाए और 3 महीने के अंदर, उन्हें उनके गंतव्य तक पहुंचाया। ●

कोरोना के भयाक्रांत से जुझता चीन

● **रणजीत कुमार सिन्हा**

एक गंभीर वायरस, कोरोना के आगे 150 करोड़ की आबादी वाला चीन अपने ही घर में बंदी बन गया है !सारे रास्ते वीरान हो गए हैं! चीन के अध्यक्ष भूमिगत हो गए हैं! 84 हजार जोनी का परिक्रमा करने वाला एक सूक्ष्म सा जंतु ने जब अपनी आंखें होली तो दुनिया के आंखे दिखाने वाला चीन एकदम शांत भयभीत और बिल में घुस कर अपने जान-माल का रक्षा हेतु भगवान से प्रार्थना कर रहा है! केवल चीन न ही नहीं पूरे विश्व के एक पल में शांत करने की ताकत प्रकृति में है! हम जात-पात, वर्ण भेद ,ऊंच-नीच प्रांत वाद के अहंकार से भरे हुए मनुष्य द्वारा एड़ी लगाकर अपने आप को लंबा बनाने का झूठा गर्व करना कमजोर पर दादागिरी करना, अपनों के साथ बेईमानी, घूस के पैसे से बिल्डिंग खड़ा करना एवं इंजॉय करना, घोटाले बाजों भ्रष्टाचारियों के बारे में उजागर होने के बावजूद भी बचाने वाले पापी मुख्यमंत्री ,मंत्री ,आईएस, आईपीएस, एवं सक्षम पदाधिकारियों का आम बात होना दूसरे के पैसे पर मस्ती करना ,एवं पैसे की खुमारी और घमंड होना, पैतृक संपत्ति बेचकर अपने परिवार एवं पड़ोसियों से दूरी बनाकर चमक दमक का झूठा मुखौटा लगाकर जिंदगी जीना कोरोना ने एक झटके में उतार दिया है! नौबत यहां तक आ गई है कि चीन के अध्यक्ष को भूमिगत रहते हुए ही अपने ही 20000 लोगों को मौत के घाट उतार देने की भाषा बोलने लगा इस संसार का कोई भी जीव इस प्रकृति के आगे विवश है लाचार है! प्रकृति ने शायद यही संदेश दिया है प्यार से रहो !जियो और जीने दो! अन्यथा सुनामी है! कोरोना है! का रोना है न है टीना है इसके बावजूद अगर जीना है तो प्यार प्रेम भाईचारा आपसी बंधुत्व परोपकार मर्यादा संस्कार और सभ्यता से भरपूर इंसान में इंसानियत पैदा कर कार्य करते हुए जीना चाहिए! क्योंकि वक्त तो उन नोटों का भी नहीं हुआ जो कभी पूरा बाजार खरीदने की ताकत रखते थे! जिंदगी है साहब छोड़ कर चली जाएगी! मेज पर होगी तस्वीर! कुर्सी खाली रह जाएगी! ●

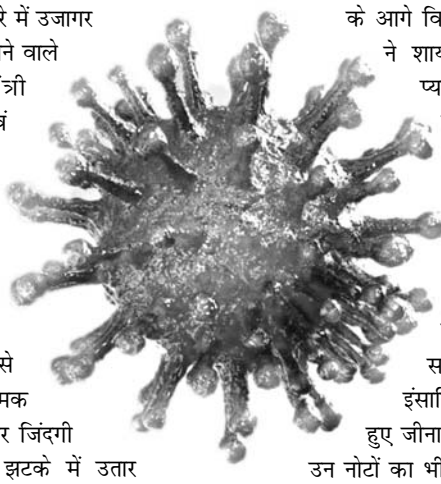

रांची की सुरक्षा कैमरे की नजर से

● ओम प्रकाश

राजधानी रांची को अपराध मुक्त बनाने के लिए गृह विभाग की ओर से वर्ष 2018 में 51 करोड रुपए की लागत से सिटी सर्विलांस सिस्टम के तहत 170 स्थानों पर 650 कैमरे लगाए गए हैं। इन कैमरों का उपयोग अपराध मुक्त करने के साथ साथ शहर की ट्रैफिक व्यवस्था को सुधारने के लिए भी होता है। सिटी सर्विलेंस सिस्टम के तहत लगे यह कैमरे हर बार शहर में होने वाली बड़ी घटना के समय काफी मददगार होते हैं। अपराधी अपराध कर भागना तो दूर कोई आम इंसान भी अगर ट्रैफिक के कानून में कोई अनदेखी कर दे तो इन कैमरों की नजर से बच नहीं सकता, या फिर कोई जल्दबाजी में सिग्नल तोड़ आगे निकलने की कोशिश ही क्यों न करें, इन कैमरों की पैनी नजर से कोई बच नहीं सकता। इन कैमरों के उपयोग से राजधानी रांची में बहुत सारे शातिर चोर एवं अपराधी पकड़े गए हैं। उनके पास से बहुत सारी चोरी की गाड़ियां भी बरामद की गई हैं। यह एक बड़ी उपलब्धि भी है, तो चलिए जानते हैं हम लोग यह कैमरे क्या है, इनके क्या-क्या प्रकार हैं और किस-किस काम में इनका प्रयोग होता हैं :-

☞ CCR (COMPOSITE CONTROL ROOM) या कहे CAPITAL CONTROL ROOM :- राजधानी में आम लोगों की सुरक्षा के लिए रांची पुलिस ने कई तरह की व्यवस्थाएं कर रखी है। अपराधियों की धरपकड़ के लिए रांची के कोने-कोने में विभिन्न प्रकार के सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। इन कैमरों में PTZ (PAN TILT ZOOM), FRS (FACE READING CAMERA), ANPR (AUTOMATIC NUMBER PLATE READER), RLVD (RED LIGHT VIOLATION DECTETOR) प्रमुख हैं इन सभी कैमरों का कंट्रोल सीसीआर यानी कंपोजिट कंट्रोल रूम या फिर कहें कैपिटल कंट्रोल रूम से होता है। जो कचहरी चौक के समीप स्थित है। सीसीआर के प्रभारी डीएसपी विकास कुमार हैं, जो इनकी लगातार मॉनिटरिंग करते रहते हैं, और इस क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

PCR VAN NO. AND CONTACT NO.

PCR. Van no.	CONTACT NO.	PCR Van no.	CONTACT NO.
PCR-01	8987790717	PCR-16	8987790732
	9297878101		9297878116
PCR-02	8987790718	PCR-17	8987790733
	9297878102		9297878117
PCR-03	8987790719	PCR-18	8987790734
	9297878103		9297878118
PCR-04	8987790720	PCR-19	8987790735
	9297878104		9297878119
PCR-05	8987790721	PCR-20	8987790736
	9297878105		9297878120
PCR-06	8987790722	PCR-21	8987790737
	9297878106		9297878121
PCR-07	8987790723	PCR-22	8987790738
	9297878107		9297878122
PCR-08	8987790724	PCR-23	8987790739
	9297878108		9297878123
PCR-09	8987790725	PCR-24	8987790740
	9297878109		9297878124
PCR-10	8987790726	PCR-25	8987790741
	9297878110		9297878124
PCR-11	8987790727	PCR-26	8987790742
	9297878111		9297878126
PCR-12	8987790728	PCR-27	8987790743
	9297878112		9297878127
PCR-13	8987790729	PCR-28	8987790744
	9297878113		9297878128
PCR-14	8987790730	PCR-29	8987790745
	9297878114		9297878129
PCR-15	8987790731	PCR-30	8987790746
	9297878115		9297878130

Highway patrol no. and contact no.

HIGHWAY PATROL NO.	CONTACT NO.	HIGHWAY PATROL NO.	CONTACT NO.
HIGHWAY PATROL-01	8987790648	HIGHWAY PATROL-09	8987790656
	9297878131		9297878139
HIGHWAY PATROL-02	8987790649	HIGHWAY PATROL-10	8987790657
	9297878132		9297878140
HIGHWAY PATROL-03	8987790650	HIGHWAY PATROL-11	8987790658
	9297878133		9297878141
HIGHWAY PATROL-04	8987790651	HIGHWAY PATROL-12	8987790659
	9297878134		9297878142
HIGHWAY PATROL-05	8987790652	HIGHWAY PATROL-13	8987790660
	9297878135		9297878143
HIGHWAY PATROL-06	8987790653	HIGHWAY PATROL-14	8987790661
	9297878136		9297878144
HIGHWAY PATROL-07	8987790654	HIGHWAY PATROL-15	8987790662
	9297878137		9297878145
HIGHWAY PATROL-08	8987790655		
	9297878138		

☞ **100 डायल क्या है?** :- सिटी कंट्रोल रूम से ही 100 डायल भी संचालित होता है। 100 डायल पर किसी भी तरह की दुर्घटना या अनहोनी की सूचना दी जा सकती है। 100 डायल पर सूचना आते ही वहां बैठे पदाधिकारी संबंधित थाना क्षेत्र में तैनात पीसीआर वैन व थाना को सूचना देते हैं। सूचना मिलते ही पीसीआर वैन या थाना कि गश्ती वाहन घटनास्थल में जाकर स्थिति का जायजा लेते हैं और उसको संभालते हैं। अपराधिक घटनाओं में शामिल अपराधियों को धर पकड़ कर थाना में सुपुर्द कर देते हैं,और इसके बाद थाना इसके आगे की कार्रवाई करता है। आम लोगों की सुविधा के लिए आने वाले दिनों में 100 डायल अब 112 में परिवर्तित हो जाएगा। इससे आम नागरिकों को काफी सुविधा हो जाएगी 112 डायल करने पर ही आप एंबुलेंस को भी बुला सकेंगे पुलिस को भी बुला सकेंगे और आग बुझाने वाली दमकल गाड़ियों से भी संपर्क कर सकेंगे। यानी सभी सुविधाएं आपको एक ही नंबर पर उपलब्ध हो

जाएंगी। यह एक मैन्यू की तरह काम करेगा जिसको ओपन करने के बाद उसके अंदर की सारी सुविधाएं आपको स्वता ही पता चल जाएंगी। यानी सभी सुविधाएं आपको एक नंबर पर मिल जाएंगी। यह नंबर इतना उपयोगी होगा कि जो नागरिक थाना जाने से डरते हैं, या थाना नहीं जाना चाहते हैं । वह कहीं पर भी होने वाली घटना की जानकारी बिना अपना चेहरा दिखाएं ,बिना अपना नंबर बताएं ,इस नंबर पर सूचना दे सकते हैं और होने वाले अपराध को रोकने में मदद कर सकते हैं।

☞ **शक्ति एप :-** महिलाओं के लिए खास है शक्ति ऐप। यह ऐप आप खासकर महिला सुरक्षा को लेकर बनी है इस ऐप को अपने स्मार्टफोन में डाउनलोड कर किसी भी प्रकार की छेड़खानी एवं महिला हिंसा से संबंधित मामले की जानकारी द ी जा सकती है जानकारी मिलते ही शक्ति एप कमांडो घटनास्थल पर पहुंचकर महिलाओं की मदद करते हैं । रांची पुलिस ने महिला सुरक्षा से संबंधित एक हेल्पलाइन नंबर भी जारी किया है, जो 94317 00003 है। इस नंबर पर सूचना देकर महिला सुरक्षा से संबंधित किसी भी तरह की सहायता प्राप्त की जा सकती है।

☞ **शक्ति ऐप इस्तेमाल करने की विधि :-** अपने मोबाइल के प्ले स्टोर में जाकर झारखंड सरकार शक्ति एप पर रजिस्ट्रेशन करना है, और अपना मोबाइल नंबर एवं पता डालना है। सेव होने के बाद अगर किसी महिला के साथ छेड़छाड़ का प्रयास होता है, तो शक्ति ऐप के लाल बटन ओके करने पर पुलिस आपके पास कुछ ही क्षणों में उपस्थित हो जाएगी। इस ऐप से लोकेशन ट्रेस किया जाता है और लोकेशन के आधार पर आप किस जगह पर हैं वहां प्रशासन को आपको ढूंढने में परेशानी नहीं होती है, और वे आपकी सहायता करने के लिए वहां उपस्थित हो जाते हैं।●

शेरनी के बाड़े में कूदा युवक हुआ शिकार

● **ओम प्रकाश/ब्रजेश कुमार मिश्रा**

रांची के ओरमांझी थाना क्षेत्र में स्थित भगवान बिरसा मुंडा जैविक उद्यान में घुमने गया वसीम नाम का एक युवक शेरनी का शिकार हो गया। उसकी उम्र लगभग 30 वर्ष है। पुलिस सूत्रों के अनुसार युवक सुरक्षा बैरिकेटिंग को लांघते हुए शेर के बाड़े में कूद गया था। उस बाड़े में मौजूद अनुष्का नामक शेरनी ने युवक को देखते ही उस कर दिया हमला। युवक जैसे ही बाड़े में कूदा वहां पहले से घूम रही अनुष्का नामक शेरनी ने युवक के गले पर हमला कर दिया। इससे पहले की युवक शेरनी का पूरी तरह से खुराक बनता, जैविक उद्यान में मौजूद रहे लोगों के हो हल्ला करने से वहां के कर्मचारियों द्वारा शेरनी को भगाने के प्रयास करने पर शेरनी ने युवक को छोड पीछे हट गई लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी युवक मर चुका था। उद्यान के कर्मचारियों ने फौरन ओरमांझी थाना को घटना का जानकारी दी। सूचना पाते ही इंस्पेक्टर श्याम किशोर महतो इंस्पेक्टर दल-बल के साथ मौके पर पहुंचे। इंस्पेक्टर ने बताया कि युवक के गले पर शेरनी के वार का निशान है। पुलिस ने तत्काल शव को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया। पुलिस सूत्रों के अनुसार युवक सुरक्षा बैरिकेटिंग को लांघते हुए लगभग 20 फीट गहरे शेर के बाड़े में घुस गया था। उस बाड़े में मौजूद अनुष्का नामक शेरनी ने वसीम को देखते ही उस पर हमला कर दिया। शेरनी ने युवक के गले पर अपने पैने दांत गड़ा दिए थे।

☞ **वसीम की मौत के बाद उद्यान में मची अफरा-तफरी :-** बिरसा जैविक उद्यान चिड़ियाघर में लगे सीसीटीवी फुटेज से पता चला वसीम अकेले चिड़ियाघर आया था, टिकट लेकर अंदर घुसते ही टिकट फाड़ दिया था। घटना के बाद टिकट घर को उद्यान प्रशासन ने दो घंटे तक बंद कर पर्यटकों का प्रवेश में रोक लगा दिया था। हालांकि इस घटना के बाद से उद्यान में लोगों की भीड़ कम देखी गई।

☞ **शव पहुंचते ही घर में मचा कोहराम गांव में शोक की लहर :-** वसीम खिजुर टोला का रहने वाला था। उसकी मौत की खबर मिलते ही गांव में शोक की लहर दौड़ गई। रिम्स में पोस्टमार्टम के बाद वसीम का शव जैसे ही घर लाया गया,परिजनों में कोहराम मच गया। माता रईसा खातून व पिता जेयारत अंसारी का रो-रो कर बुरा हाल था। उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उसका बेटा अब इस दुनिया में नहीं रहा। परिजनों ने बताया कि वसीम बूटी स्थित झलकू महतो के गैरेज में काम करता था। डेढ़ वर्ष पूर्व उसका विवाह हुआ था, परंतु किसी कारण से उसका वैवाहिक जीवन सफल नहीं हो पाया और उसका तलाक हो गया। पत्नी से तलाक के बाद से काफी परेशान रह रहा था। उसकी दिमागी हालत भी कुछ ठीक नहीं थी। उसी शाम वसीम के शौक को फिजूल टोला कब्रिस्तान में सुपुर्द ए खाक किया गया। वसीम की कोई संतान नहीं है।●

संस्कार व संस्कृति के पैरोकार, दल की सहयोगी

सरकार में संस्कृत उपेक्षित

तुष्टिकरण का विरोध करने वाली भाजपा खुद करती है तुष्टिकरण धर्म का मोहताज है, मो. तसनीमुर रहमान की रहम

● अमित कुमार

अपने को पार्टी विथ द डिफरेंट कहने वाली पार्टी भाजपा की कथनी और करनी में अब कोई फर्क नही रह गया है। एक समय था जब भाजपा जैसी पार्टी भारतीय संस्कार और संस्कृति की राजनीति किया करती थी। भारत और भारतीयता की बातें किया करती थी। वसुदेव कुटुम्बकम की नारा देने वाली और तुष्टीकरण का विरोध करनेवाली पार्टी सत्ता में आते ही अपने वोट बैंक के खातिर अब खुद तुष्टिकरण में लगी है। इसका ज्वलन्त उदाहरण बिहार है हालांकि अपने विरोधी वोटों को अपने पक्ष में करने के चक्कर मे यह पार्टी अपने मूल वोटरों को भी खोते जा रही है। गत वर्ष झारखण्ड सहित विभिन्न राज्यों के चुनाव परिणाम इसके उदाहरण हैं। उन चुनाव परिणामों से सीख लेने और अपने नीतियों में सुधार कर अपने कैडर वोटरों को समेटने के बजाये अपने सहयोगी दलों के साथ मिलकर यह भी तुष्टीकरण की राजनीति में लगी है। अगर ऐसा नही होता तो कभी 'हाथ में लवणी मुँह में पान, भाग रे... पाकिस्तान' के नारे बुलन्द करने वाले बिहार के कद्दावर नेता और बिहार के उपमुख्यमंत्री सुशील मोदी अपने पहले उप मुख्यमंत्रीत्व काल में ही एक जिले की सभा में सर्वशिक्षा अभियान के तहत बंटने वाली साईकिलों की वितरण की शुरुआत अल्पसंख्यक छात्रा से नही करते। अगर ऐसा नही होता तो भारतीय संस्कार और संस्कृति की बातें करने वाली पार्टी की समर्थित बिहार की सरकार में संस्कृत शिक्षा और संस्कृत विद्यालयों की स्थिति दयनीय नही होती। वह संस्कृत जिसे भारतीय संस्कृति में देव भाषा माना गया है।वह संस्कृत जो गुरुकुलों की भाषा रही है। वह संस्कृत जिसे पढ़ने पढ़ाने से संस्कार प्रस्फुटित होते है। ऐसे महत्वपूर्ण है भाषा की बिहार जैसे राज्य जहाँ

जीव श्याम सिंह
सदस्य
बिहार विधान परिषद्, पटना
सह
सदस्य, निवेदन समिति
बिहार विधान परिषद्

बिहार सरकार

आवास :-
1. H-57 चाणक्यपुरी, गया (बिहार)
पिन कोड - 823001
दूरभाष : 0631-2225442
9431223240
2. डी ब्लॉक फ्लैट नं॰-301/302
दरोगा राय पथ, पटना (बिहार)
फोन +फैक्स नं॰ - 0612-2507142

पत्रांक...52/19...
दिनांक...18/1/2019

माननीय शिक्षा मंत्री,
बिहार सरकार, (पटना)

विशेष निदेशक, शिक्षा विभाग द्वारा संस्कृत विद्यालयों से संस्कृत मामलों की उपेक्षा की जाती रही है, जिसके कारण माननीय उच्च न्यायालय में लगातार मुकदमा बढ़ते जा रहा है, उनके उपेक्षा के कारण समय से 531 संस्कृत विद्यालयों के वेतनानुदान की विमुक्ति नहीं हो सकी है, से बिलकूल ही अकर्मण्य पदाधिकारी है।

अतएव निवेदन है कि विशेष निदेशक (माध्यमिक शिक्षा) पद पर एक कर्मठ एवं योग्य पदाधिकारी का पदस्थापना किया जाए।

भवदीय
जीव श्याम सिंह
18/1/2019

मो. तसनीमुर रहमान के कार्यशैली के कारण संस्कृत शिक्षा का बुरा हाल : संजीव श्याम

बिहार विधान परिषद के सदस्य संजीव श्याम ने बिहार सरकार के शिक्षा मंत्री सहित शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव को पत्र लिख कर राज्य में बेहाल संस्कृत शिक्षा के लिए शिक्षा विभाग के विशेष निदेशक तसनीमुर रहमान को जिम्मेवार ठहराया है।संजीव श्याम ने शिक्षा विभाग के मंत्री और पदाधिकारियों को लिखे अपने दर्जनो पत्रों में कहा है कि इनके कार्यशैली के कारण उच्च न्यायालयों में मुकद्दमों की जहाँ संख्या बढ़ती जा रही है।वहीं संस्कृत शिक्षा बोर्ड में लम्बित परीक्षा परिणाम का प्रकाशन,नियुक्त शिक्षकों का अनुमोदन तथा अन्य कार्य भी लंबे समय से प्रभावित हो रहें है। इन्होंने अपने पत्रांक 49 दिनांक 18.6.2019 के द्वारा तसनीमुर रहमान को हटाने तथा किसी योग्य पदाधि – कारी को पदस्थापित करने की भी माँग की है। संजीव श्याम ने कई बार पत्र लिख कर सरकार से संस्कृत शिक्षकों को भी अविलम्ब मदरसा शिक्षकों की भांति ही वेतनमान देने की माँग की है।

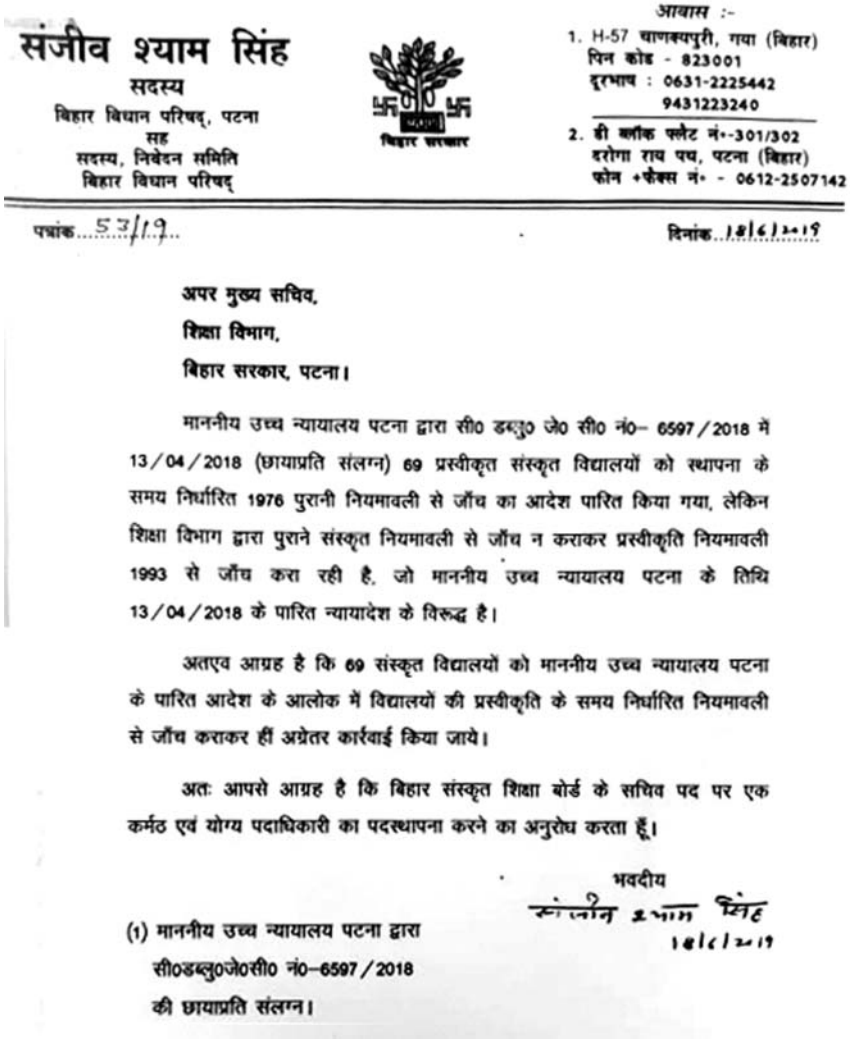

संजीव श्याम सिंह
सदस्य
बिहार विधान परिषद्, पटना
सह
सदस्य, निवेदन समिति
बिहार विधान परिषद्

बिहार सरकार

आवास :-
1. H-57 चाणक्यपुरी, गया (बिहार)
पिन कोड - 823001
दूरभाष : 0631-2225442
9431223240
2. डी ब्लॉक फ्लैट नं०-301/302
दरोगा राय पथ, पटना (बिहार)
फोन +फैक्स नं० - 0612-2507142

पत्रांक 53/19 दिनांक 18/6/2019

अपर मुख्य सचिव,
शिक्षा विभाग,
बिहार सरकार, पटना।

माननीय उच्च न्यायालय पटना द्वारा सी० डब्लु० जे० सी० नं०- 6597/2018 में 13/04/2018 (छायाप्रति संलग्न) 69 प्रस्वीकृत संस्कृत विद्यालयों को स्थापना के समय निर्धारित 1976 पुरानी नियमावली से जाँच का आदेश पारित किया गया, लेकिन शिक्षा विभाग द्वारा पुराने संस्कृत नियमावली से जाँच न कराकर प्रस्वीकृति नियमावली 1993 से जाँच करा रही है, जो माननीय उच्च न्यायालय पटना के तिथि 13/04/2018 के पारित न्यायादेश के विरूद्ध है।

अतएव आग्रह है कि 69 संस्कृत विद्यालयों को माननीय उच्च न्यायालय पटना के पारित आदेश के आलोक में विद्यालयों की प्रस्वीकृति के समय निर्धारित नियमावली से जाँच कराकर हीं अग्रेतर कार्रवाई किया जाये।

अतः आपसे आग्रह है कि बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के सचिव पद पर एक कर्मठ एवं योग्य पदाधिकारी का पदस्थापना करने का अनुरोध करता हूँ।

भवदीय
संजीव श्याम सिंह
18/6/2019

(1) माननीय उच्च न्यायालय पटना द्वारा
सी०डब्लु०जे०सी० नं०-6597/2018
की छायाप्रति संलग्न।

नालन्दा जैसे विश्वविद्यालय स्थापित थीं। वह नालन्दा विश्वविद्यालय जहाँ अपने मनोभावना सम्प्रेषण का माध्यम ही केवल संसस्कृत हुआ करता था। उस बिहार में संस्कृत शिक्षण की स्थिति बेहाल है। इसकी स्थिति का आंकलन इसी से किया जा सकता है कि मदरसा बोर्ड की पूर्णिया स्थित क्षेत्रीय कार्यालय के स्थापना व्यय हेतु राज्य सरकार द्वारा करोड़ो रूपये दी जाती है जबकि पिछले लगभग 30 वर्षो में राज्य की राजधानी पटना में स्थित संस्कृत शिक्षा बोर्ड के मुख्य कार्यालय के संचालन हेतु राज्य सरकार द्वारा 1 भी रुपया नही दिया गया है। यही नही जहां मदरसों के आधुनिकीकरण के लिए कम्प्यूटर, मध्यान भोजन आदि मद् में भी सरकार द्वारा अनुदान दी जाती है वही इन मामलों में भी राज्य सरकार द्वारा संसस्कृत विद्यालयों की उपेक्षा की जाती है। ऐसा लगता है जैसे संस्कृत विद्यालयों के बच्चों को कंप्यूटर जैसे आधुनिक और तकनीकी शिक्षा की कोई आवश्यकता ही नही है। सब का साथ-सब का विकास और न्याय के साथ विकास जैसे दो अलग अलग नारों और नीतियों को लेकर राजनीति करने वाली पार्टी की गठबंधन की सरकार में तुष्टिकरण की हद तो तब हो गई। जब दिनांक 1.9.2015 के मंत्रिमंडल के निर्णय के अनुसार बिहार राज्य के 69 संस्कृत विद्यालयों और 609 मदरसा विद्यालयों को वित्त की श्रेणी में लाया गया और मदरसों के लिए 25,43,03,000 रुपये तथा संस्कृत विद्यालयों के लिए 3,54,55,000 रुपये स्वीकृत किये गए। परन्तु 609 मदरसा विद्यालयों के लिए स्वीकृत 25,43,03000 की राशि तो बिना किसी भी प्रकार के जांच से गुजरे,विमुक्त कर दी गई। जिससे मदरसों में कार्यरत शिक्षकों को 1.9.2015 के निर्णयों के अनुरूप वेतन भी मिल रहा है। लेकिन 69 संस्कृत विद्यालयों की दो-दो बार जिला पदाधिकारी और एक बार शिक्षा विभाग के पदाधिकारियों से भौतिक व सत्यापन कराने के वावजूद अभी भी संस्कृत विद्यालयों के लिए स्वीकृत राशि विमुक्त नही की जा सकी है। जिसके कारण संस्कृत विद्यालय के शिक्षक अभी भी शिक्षा विभाग के विशेष निदेशक तसनीमुर रहमान जैसे पदाधिकारियों के रहमोकरम के मोहताज है। ज्ञात हो कि शिक्षा विभाग ने इन विद्यालयों की जांच के लिए एक विभागीय कमिटी की गठन किया है जिसने टाल मटोल वाली रवैया अपनाते हुए अभी तक अपनी जाँच प्रतिवेदन विभाग को नही सौपी है। इस कमिटी और इस विभाग के कुछेक पदाधिकारियों के कार्यशैली से न्यायालयों में संस्कृत शिक्षा बोर्ड और इससे सम्बन्धित विद्यालयों सम्बन्धी वादों की संख्यायों में दिन प्रति दिन बढ़ोत्तरी के कारण एक ओर जहाँ राज्य के खजानों पर बोझ पड़ रही है वही सरकार की किरकिरी भी हो रही है। माननीय उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश अमलेश्वर

प्रसाद शाही और अंजना मिश्रा की खण्डपीठ ने अपने cwjc no.985/15 तथा cwjc no. 18272/15 में 27.3.2019 को 15.2.2019 के बाद नियुक्त शिक्षकों को भी छठा व सातवाँ वेतनमान देने का फैसला पारित किया है। बिहार अराजकीय प्रस्वीकृत संस्कृत शिक्षक संघ के अध्यक्ष सुरेश पांडेय ने इस मुद्दे को लेकर सरकार के समझ आत्मदाह तक करने की धमकी दी है। शिक्षा विभाग के संकल्प संख्या 230 दिनांक 5. 3.2019 द्वारा मदरसों में कार्यरत 15.2.2011 नियुक्त शिक्षको को अनुदान की स्वीकृति दी गई है। जबकि 351तथा 69 संस्कृत विद्यालयों में 15.2. 2011 के बाद नियुक्त शिक्षकों को मदरसों के अनुरूप वेतन नही दिया जा रहा है।इसके लिए शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव आर. के. महाजन ने वित्त विभाग के प्रधान सचिव को 16. 11.2019 को अपने पीत पत्र संख्या 1314 के द्वारा अनुरोध किया है कि मदरसों की भांति राज्य के अन्य विद्यालयों में वेतनमान की स्वीकृति सम्बन्धी संचिका दिनांक 17.10.2019 को भेजी गई जिसकी संख्या 10/ब-149/2018 है।

बिहार का चुनाव जनता के लिए या कुर्सी के लिए

● **डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह**

इस वर्ष बिहार में चुनाव होने वाले हैं। सभी दल अपनी-अपनी रणनीतियां बनाने में लगे हैं। चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार में तीखी बयानबाजी देखने को मिली थी और नीतीश कुमार ने प्रशांत किशोर को जनता दल (यू) से बाहर का रास्ता दिखा दिया है। पार्टी से निष्कासित प्रशांत किशोर ने पहले ही यह कह दिया था कि बिहार में एनआरसी लागू नहीं होगा और एनपीआर पुराने प्रावधानों के साथ लागू होगा। प्रशांत किशोर की बात सच निकली। बिहार विधानसभा में नीतीश कुमार ने अपना दाव खेल दिया है। विधानसभा में एनआरसी लागू नहीं किये जाने और एनपीआर में संशोधन को लेकर एक प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया।

सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित होने का अर्थ यही है कि प्रस्ताव को जनता दल (यू) भाजपा, लोक जनशक्ति पार्टी, राजद, कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों का समर्थन मिला। जिस नागरिकता संशोधन कानून, एनसीआर और एनपीआर को लेकर देशभर में बवाल मचा हुआ है। हिंदू मुस्लिमों में विभाजन की दरार और बढ़ाने की कोशिशें की जा रही हैं। दंगों के हालात पैदा किये जा रहे हैं, ऐसी स्थिति में बिहार में भाजपा ने प्रस्ताव को समर्थन दिया तो क्यों? भाजपा जदयू के साथ गठबंधन सरकार की भागीदार है। इसके साथ ही बिहार भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार वाला पहला राज्य बन गया है, जहां एनआरसी के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया गया है। विपक्षी राजद के नेता तेजस्वी यादव ने इस पर तंज कसा है कि सरकार में होने के बावजूद बिहार भाजपा ने घुटने टेक दिये हैं। भाजपा वाले माथा पकड़े टुकुर-टुकुर देखते रहे। नागरिकता संशोधन कानून को लेकर विपक्ष लगातार इसे वापस लेने की मांग कर रहा है। नीतीश कुमार पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि नागरिकता संशोधन कानून पर सुप्रीम कोर्ट जो भी निर्णय देगा, वह उन्हें मान्य होगा। नीतीश कुमार 2013 में सीएए को लेकर बनी संसदीय कमेटी का हवाला देते हुए कह रहे हैं कि प्रणव मुखर्जी के नेतृत्व वाली इस कमेटी में कपिल सिब्बल और लालू प्रसाद यादव भी इसके सदस्य थे। जब बिहार विधानसभा में प्रस्ताव पारित कराया गया तो भाजपा विधायक चुप रहे। अब भाजपा विधायक कह रहे हैं कि जनता दल (यू) ने उन्हें

पहले बताया ही नहीं कि प्रस्ताव लाया जा रहा है। प्रस्ताव लाना बिहार सरकार का अधिकार है लेकिन भाजपा केंद्र के साथ है। भाजपा विधायक इसे आनन-फानन में लिया फैसला बता रहे हैं। विपक्ष कह रहा है कि यदि भाजपा को लगता है कि नीतीश कुमार ने उसे धोखा दिया है तो फिर भाजपा को सरकार से समर्थन वापस ले लेना चाहिए। बिहार में भाजपा की स्थिति काफी हास्यास्पद हो गई है। एनआरसी के विरोध में 7 पार्टियां खड़ी हैं, जो इस समय देश के 11 राज्यों में सत्ता में हैं। देश की 52 फीसद आबादी इन राज्यों में रहती है। कई राज्य नागरिक संशोधन कानून और एनआरसी के विरोध में प्रस्ताव पारित कर चुके हैं। बम्बई हाईकोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसले में कहा था कि जिनके पास मतदाता पहचान पत्र है वही नागरिकता की सबसे बड़ी पहचान है। मतदाता पहचान पत्र देश के नागरिकों का ही बनता है, भले ही उसके पास आधार कार्ड न हो। कई लोग एनआरसी के औचित्य पर सवाल उठा रहे हैं। एनआरसी का उद्देश्य देश में रहने वाले नागरिकों की जानकारी हासिल की जाती है। दुनिया के लगभग हर देश में ऐसी व्यवस्था है। भारत में 1951 के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने राष्ट्रहित को ध्यान में रखते हुए पूरे देश में एनआरसी लागू की थी। इतने वर्षो बाद उसे अपडेट करना तो बनता ही है। अगर कागज मांगे जाएंगे तो वह सभी से मांगे जाएंगे तो फिर इस पर तूफान क्यों खड़ा किया जा रहा है।

दरअसल सीएए, एनआरसी और एनपीआर में इतना घालमेल हो गया कि पूरी तरह भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो गयी। हड़बड़ी में गड़बड़ी हो चुकी है। नीतीश कुमार की विवशता यह भी है कि अगर वे भाजपा नीतियों का खुलकर समर्थन करते हैं तो विधानसभा चुनाव में उनके मुस्लिम वोट बैंक के छिटकने का खतरा है क्योंकि अगर ऐसा हुआ तो वो सरकार बनाने लायक आंकड़े लाने में विफल हो सकते हैं। निश्चित रूप से उन्हें भाजपा विरोधी ऐसे तेवर दिखाने होंगे जिससे उनका वोट बैंक सुरक्षित रहे। 17 फीसदी मुस्लिम वोट किसी भी पार्टी के लिए अहम होता है। इसके अलावा महादलितों के वोट भी जनता दल यू की झोली में जाते रहे हैं। समाज के सबसे बड़ी समस्या होती है अपराध और भ्रष्टाचार। परन्तु किसी भी दलों के लिए यह चुनावी मुद्दा नहीं है, यह चुनाव जनता के लिए नहीं कुर्सी के लिए है। ●

देश को कहां ले जा रहे हैं नेता

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

सार्वजनिक जीवन में रहने वाले लोगों और निर्वाचित जनप्रतिनिधियों का आचरण अनुशासित और कर्तव्यनिष्ठ होना चाहिए क्योंकि वे एक समूह का नेतृत्व करते हैं और उनके आचरण का प्रभाव दूसरे लोगों पर पड़ता है। जनप्रतिनिधि चाहे गांव स्तर पर प्रधान, पंचायत सदस्य के रूप में हो या फिर विधायक और सांसद, हर स्तर पर जनता द्वारा ही चुना जाता है। कभी समय था जब लोग अपने प्रिय नेताओं को देखने और सुनने के लिए दौड़ पड़ते थे लेकिन आज के दौर में राजनीतिज्ञों की साख इतनी गिर चुकी है कि नेता शब्द अपशब्द लगने लगा है। आज सदन से लेकर सड़क तक बहस और भाषणों का स्तर काफी गिर चुका है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि जनप्रतिनिधि और संवैधानिक पदों पर बैठने वाले लोग न तो कानून की परवाह कर रहे हैं और न ही अदालतों का सम्मान। पहले कहा जाता था कि लोकतंत्र लोकलज्जा से चलता है। लोकतंत्र की अपनी मर्यादाएं होती हैं। लोकतंत्र में मापदंडों को हमेशा उच्च रखा जाता रहा है लेकिन अब जनप्रतिनिधि निर्लज्ज होकर राजनीति कर रहे हैं। भारत में जन-प्रतिनिधियों के आचरण को लेकर अगर लिखा जाए तो महाग्रंथ की रचना हो सकती है। अब राजनीति में कोई डॉ. राजेंद्र प्रसाद, लाल बहादुर शास्त्री, राम मनोहर लोहिया, श्यामा प्रसाद मुखर्जी, आचार्य नरेंद्र देव, जय प्रकाश नारायण जैसे लोग नजर नहीं आ रहे या फिर देश ऐसी विसंगति का शिकार हो चुका है कि हम लोग उन जैसा बनना ही नहीं चाहते। वक्त और हालात ने ऐसा परिवेश सृजित कर दिया है कि कोई भी नेता देश के लिए आदर्श बनने को तैयार नहीं। नेताओं का जो रूप उभर कर आया है, वह बेहद शर्मनाक है। आदर्श की बात करने और आदर्शवादी होने में बड़ा फर्क होता है। इसी अंतर का फायदा आज हर कोई उठा रहा है। गुंडों, बदमाशों को नकारने वाला समाज आज इन्हें अपना चुका है। एक समय था जब किसी से कोई अपराध हो जाता था तो समाज उसे घृणा की दृष्टि से देखता था और उसका बहिष्कार कर दिया जाता था लेकिन वर्तमान में ऐसे लोगों को समाज सिर पर बैठाता है। यही कारण है कि आपराधिक प्रवृत्ति के लोग जनप्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

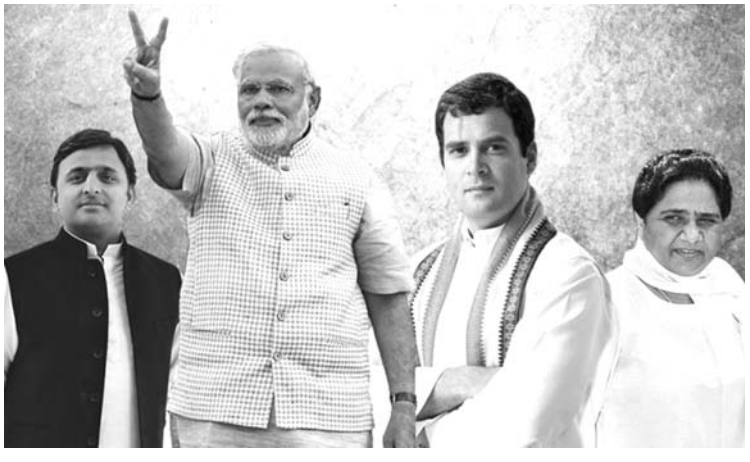

राजनीतिज्ञों के आचरण का नया उदाहरण समाजवादी पार्टी के दिग्गज नेता आजम खान के रूप में मिला है। आजम खान, उनकी पत्नी और बेटे अब्दुल्ला को दो जगह से दो अलग-अलग जन्म प्रमाण पत्र बनाने के आरोप में न्यायालय ने जेल भेज दिया है। आरोप है कि उन्होंने साजिश के तहत अपने बेटे के दो जन्म प्रमाण पत्र बनवाए हैं। एक में अब्दुल्ला की पैदाइश रामपुर में बताई गई है जबकि दूसरे में लखनऊ। प्रमाण पत्रों में जन्म की तारीख और वर्ष भी अलग-अलग है। आजम खान पर ऐसे फर्जीवाड़े का आरोप लगना कोई नया नहीं है। उन पर जौहर विश्वविद्यालय के लिए गैरकानूनी रूप से जमीन हथियाने से लेकर ग्रामीणों से जबरदस्ती जमीन सौदे के कागजातों पर हस्ताक्षर कराने और कई तरह की अनियमितताओं के आरोपों से संबंधित कई मामले दर्ज हैं। आजम खान का परिवार भी अदालत का सम्मान नहीं कर रहा था। अदालत बार-बार सम्मन भेज रही थी लेकिन आजम खान अदालत में हाजिर ही नहीं हो रहे थे। मजबूर होकर अदालत को गैर जमानती वारंट जारी करना पड़ा। जब राजनीतिज्ञों के भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने की बात आई तो देश की न्यायपालिका ने ही महत्वपूर्ण फैसले दिये हैं। इसीलिए न्यायपालिका की साख देशभर में बनी हुई है। पर विडम्बना यह है कि आजम खान जैसे दबंग प्रवृत्ति के लोग केवल समाजवादी पार्टी में ही नहीं बल्कि भाजपा और कांग्रेस समेत सभी दलों में हैं। जब-जब ऐसे लोगों की पार्टी की सरकार सत्ता में आती है तो वे अपने पद और शक्तियों का इस्तेमाल करते हैं और अपनी सम्पत्ति का विस्तार करते हैं। माना कि कुछ सांसद ऐसे हैं जो बड़े कारोबारी या फिर पुश्तैनी अमीर हैं लेकिन आखिर इसका क्या कारण है कि सामान्य पृष्ठभूमि से आने वाले निगम पार्षदों से लेकर विधायकों, सांसदों की आय को पंख लग जाते हैं। किसी आम आदमी या फिर कारोबारी की सम्पत्ति में तनिक भी असामान्य उछाल दिखाई देता है तो उसे आयकर विभाग के सवालों से दो-चार होना पड़ता है। आखिर जनप्रतिनिधि विशिष्ट क्यों हैं। कानून की निगाह में राजा और रंक एक समान होने चाहिए। बलात्कार के आरोप में उम्रकैद की सजा भुगत रहे पूर्व भाजपा विधायक कुलदीप सेंगर ने भी सत्ता के गलियारों में रहते हुए कानून को ठेंगा दिखाने की पूरी कोशिश की थी लेकिन अंततः कानून ने शिकंजा कस ही दिया। आजम खान को लगा होगा कि उनके रुतबे के चलते कोई उन पर हाथ नहीं डाल सकेगा।

अब वह उत्तर प्रदेश सरकार पर आरोप लगा रहे हैं कि वह साजिशन उन्हें परेशान कर रही है। ऐसे आरोप लगाना राजनीति में नया नहीं है लेकिन यह भी सही है कि सत्ता बदलते ही राजनेता द्वारा खुद को कानून से ऊपर समझना और बदलने की भावना से कार्रवाई करने की प्रवृत्तियां समानांतर चलती रहती हैं। आजम खान को अदालत में अपने आप को निर्दोष साबित करने की चुनौती तो है ही। राजनीतिज्ञों को देश के भविष्य की कोई चिंता नहीं है, जब धारा 370 का विरोध हो रहा है तो समझ जाएं कि विरोध करने वाले देश को कहां ले जाना चाहते हैं? राजनीतिज्ञों के आचरण पर तब तक सवाल उठते रहेंगे जब तक राजनीतिक दल स्वयं ऐसे लोगों से किनारा नहीं करते। अगर वह ऐसा नहीं करते तो स्वीकार करना होगा कि राजनीति से आचरण विदा हो चुका है। ●

राजनीति से नीति गायब, सिर्फ राज ही राज!

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

उत्तर-पूर्वी दिल्ली के यमुनापार इलाके की कुछ बस्तियों को मजहब के नशे में डूबे सितमगर खूंखार भेड़ियों ने आदमी के भेस में जिस तरह बर्बाद किया है उसे देख कर तो हैवानियत भी शरमाये बिना नहीं रह सकती क्योंकि बलवाइयों ने शिवपुरी में स्थित एक मकतब (स्कूल) को ही मकतल (श्मशान घाट) में तब्दील करने की तदबीर इसलिए भिड़ा दी थी कि इस निजी विद्यालय का मालिक एक मुसलमान शहरी था। लानत है उन धर्म के नाम पर बाजियां बिछा कर वोटों की तिजारत करने वाले सियासी सूरमाओं पर जिन्होंने आदमी के खून को 'गन्दे नालों' में बहने वाले दूषित जल से भी बदतर बना कर इनमें लाशों के ढेर जमा कर डाले। ऐसे दंगाइयों को अगर भारत के संविधान के मुताबिक देश का गद्दार कहा जाये तो बिल्कुल भी गलत नहीं होगा। ऐसी हरकतें धर्म से भी गद्दारी होती हैं क्योंकि चाहे हिन्दू धर्म हो या इस्लाम, दोनों में ही सिर्फ मुहब्बत को ईमान का दर्जा हासिल है। क्या कहा जाये उस पुलिस की दयानतदारी को, जिसे लोकतन्त्र में जनता की पुलिस कहलाने का शरफ संविधान देता है, लगातार दो दिन तक स्कूल में आग लगाये जाने और वहां पर भारी संख्या में लोगों को हिरासत मे रखने की खबरें मिलने के बावजूद दरोगा का डंडा तक न हिले और आग बदस्तूर जलती रहे और अपने आप ही बुझ जाये। इंसानों की होली जलाने की यह साजिश शायद ईश्वर को मंजूर नहीं थी इसलिए उसने लोगों को स्कूल की खिड़कियां तोड़ कर बाहर जाने की सलाइयत बख्श दी और आग को मद्धिम कर बुझा डाला। पक्के तौर पर इसमें खुदावन्द-दो-आलम और सर्वशक्तिमान व सर्वव्यापी भगवान श्रीराम का वरदहस्त हिरासत में कैद लोगों के सर पर था मगर उन मासूम लोगों का क्या कसूर था जिन्हें जख्मी कर नालों में डाला गया और तमंचों की गोलियां का निशाना बनाया गया अथवा घरों में घुस कर मौत के घाट उतारा गया?

राजनीतिज्ञ गलेबाजी के जौहर दिखा रहे हैं और कह रहे हैं कि दंगा करने वाले हिन्दू भी गलत हैं और मुसलमान भी गलत, मगर यह नहीं बता रहे कि हालात इस दर्जा क्यों बिगड़े कि चन्द गुंडों ने बेखौफ खुले घूम कर इंसानों के रक्त से 'फाग' खेला। अब तक 52 लाशें मिल चुकी हैं और पाठकों के हाथों में ये पंक्तियां जाने तक इनमें और इजाफा हो चुका होगा। जाने कितने इरफान और सुनील अपने घरवालों को रोता-बिलखता छोड़ कर जा चुके हैं मगर सबसे ज्यादा दुखदायी यह है कि इनकी लाशें लेने तक के लिए उनके घर वाले पिछले दो दिनों से एक थाने से दूसरे थाने और एक अस्पताल के मुर्दाघर से दूसरे अस्पताल के मुर्दाघर के चक्कर काट रहे हैं। जरा दिल पर हाथ रख कर सोचिये कि लाशें मिल किनकी रही हैं? 90 प्रतिशत से ज्यादा लोग मरे वे ही हैं जो जिन्दगी चलाने के लिए रोज खून-पसीना बहाते थे। अर्थात गरीब तबके के लोग ही शिकार बने हैं। दंगे चाहे कहीं भी हों मरता गरीब आदमी ही है। उन्हीं के रक्त से धार्मिक दुश्मनी की रवायतें पूरी की जाती हैं।

बेशक लपेटे में ऐसे ईमानदार पुलिस व सुरक्षाकर्मी भी आ जाते हैं जो अपने फर्ज को अंजाम दे रहे होते हैं। बड़े अफसरों का हुक्म मानना फर्ज में शामिल होता है अफसोसनाक यह है कि पुलिस बल का पिछले 25 सालों में राजनीतिकरण करने की कोशिशें इस तरह हुई हैं कि बड़े-बड़े आईपीएस अफसर हुकूमत में बैठे राजनीतिज्ञों के दरबान बन गये हैं जबकि उन्हें संविधान और कानून का चौकीदार होना चाहिए। इसकी शुरुआत देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश से ही पूरी बेशर्मी के साथ इस तरह हुई कि पुलिस अफसर सत्ताधारी पार्टी के नेताओं के सार्वजनिक रूप से चरण स्पर्श करते हुए देखे गये मगर यह स्थिति राजनीति का पूरी तरह साम्प्रदायीकरण और जातिकरण करने के बाद सुविचारित ढंग से बनाई गई। अत: अब तक जितने भी पुलिस सुधार के लिए आयोग या उच्च समितियां बनी हैं, सभी ने पुलिस के बढ़ते राजनीतिकरण पर गहरी चिन्ता प्रकट की है और इससे उबरने के कई रास्ते सुझाये हैं मगर वोटों की खेती को उपजाऊ बनाने का जो तरीका कांग्रेस पार्टी ने 1984 में सिखों के खिलाफ हिंसा करा कर अपनाया था, उसे ही अन्य राजनैतिक दलों ने घुमा-फिरा कर लागू करना शुरू कर दिया। यह देश का सबसे बड़ा 'दुर्भाग्य यन्त्र' बन कर सामने आया जिसने पुलिस सुधार को राजनीतिज्ञों का 'दुरास्वप्न' बना डाला। दंगे होने के बाद एक-दूसरे दल के खिलाफ बयानबाजी करके अपनी कमीज को ज्यादा सफेद बताने की कवायदों से तब तक कोई लाभ नहीं हो सकता जब तक कि पुलिस की जिम्मेदारी सिर्फ कानून के प्रति तय किये जाने के पुख्ता इंतजाम न बांधे जायें मगर क्या कयामत है कि सिर्फ एक दिन के भीतर ही एक न्यायाधीश के बदल जाने से न्यायालय का नजरिया भी इस तरह बदल गया कि इसने पुलिस को नफरत फैलाने वालों के खिलाफ सोचने-समझने के लिए बजाय एक दिन का वक्त देने के पूरे एक महीने का समय दे डाला लेकिन जो लोग इसे न्यायालय के विरुद्ध प्रयोग करने की हिमाकत करेंगे वे कानून की नजाकत से नावाकिफ कहलायेंगे क्योंकि तुरत-फुरत आरोपियों को कानून की दफाओं में बांधने से साम्प्रदायिक माहौल में गर्मी पैदा करने की कुछ लोग कोशिश कर सकते हैं। अत: फैसले के दोनों पहलुओं पर गंभीरता के साथ ठंडे दिमाग से सोचने की जरूरत है। जो जुर्म हो चुका है वह वक्त बीतने के बावजूद धुल नहीं सकता। इसलिए देर-सबेर कानून को अपना काम करना ही होगा। इतनी मोहलत हम अगर दिल्ली पुलिस को दे देते हैं तो कानून के खिलाफ वर्जी नहीं होगी क्योंकि पुलिस ने यह नहीं कहा है कि वह भड़काऊ बयान देने वाले 'खुदआरा' नेताओं के खिलाफ कार्रवाई नहीं करेगी परन्तु असली सवाल यही है कि संशोधित नागरिकता कानून का समर्थन और विरोध करने को लेकर राजधानी में 'खून का प्यासा' माहौल क्यों कर बनाय क्या देश की राजधानी दिल्ली में एक भी ऐसा नेता नहीं बचा है जो सीधे लोगों के बीच जाकर यह समझाने जाये कि इस कानून से न हिन्दुओं को भड़कने की जरूरत है और न मुसलमानों को हताश होने की जरूरत है क्योंकि अभी सर्वोच्च न्यायालय को इस पर अपना फैसला देना है अगर कोई इस कद का नेता होता तो वह जरूर दंगाइयों के बीच जाकर उन्हें चुनौती देता मगर आत्म विश्वास से भरे नेताओं की पुरानी पीढ़ी को हम कहां से पैदा करें? अभी तो नोआखाली और गांधी की याद करते ही कंपकंपी के साथ पसीने छूट पड़ते हैं। अधिकांश नेता नहीं जानते हैं आतंकवाद का असली कारण। नीम हकीम खतरे जान वाली कहावत है अधिकांश नेता जानना भी नहीं चाहते, नेताओं को चाहिए पद, प्रतिष्ठा और कुर्सी। देश भले ही गुलाम हो जाएं। मुझे कुर्सी चाहिए। कुरान में लिखा है कारण और भविष्य।●

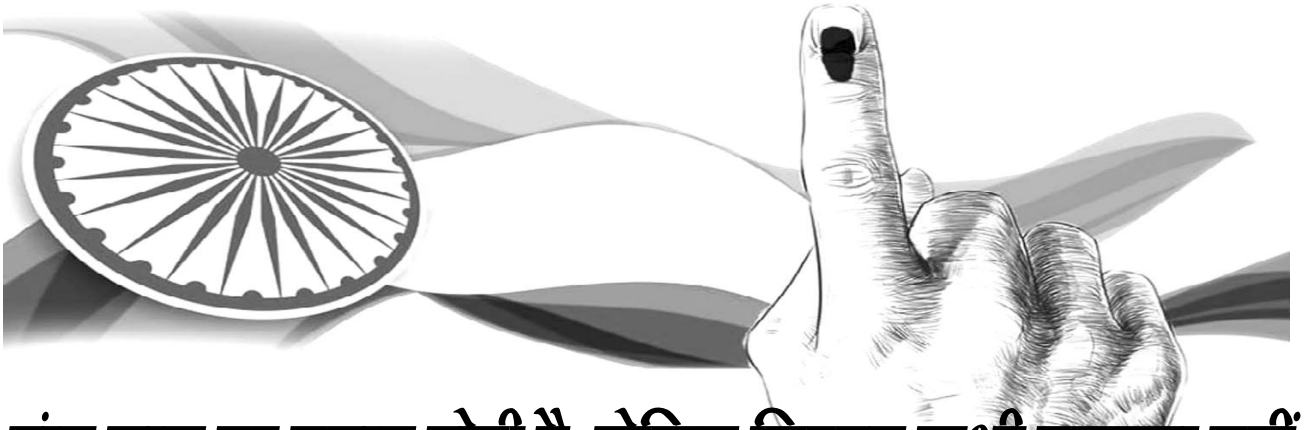

पांच साल पर चुनाव होती है, लेकिन सिस्टम कभी बदलता नहीं

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

आज पूरा देश खतरनाक मोड़ पर खड़ी है। गुलामी चाहने वालों की संख्या बहुमत की ओर तेजी से बढ़ती जा रही है। पाँच साल पर चुनाव होती है। विधाायक, सांसद और सरकार बदलती रहती है परन्तु सिस्टम सड़ी-गली और बदबुदार पुरानी ही रह जाती है। कुछ नेता समाज के तारण हार का सपना दिखाकर आते है और कुछ ही समय में फटे पायजामा के बदले टाइवेलट ओर गाड़ियों की कतार सजा लेते हैं तथा सत्य हरिश्चन्द्र के कतार में खड़ा हो जाते है। अपने आप को जनता का सेवक कहने वाले। पुलिस के सुरक्षा में रहती है और जनता (मालिक) अपराधियों के रहमों करम पर जीवित है। सरकार की नजरों में अच्छे कार्यकर्ताओं की पहचान भी गजब है। टाईबेलट, सुन्दर चेहरा, भ्रष्टाचार में गोता लगाने वाले तथा लच्छेदार भाषणों में हरशिचन्द्र झलकने लगते हैं। सरकार के बड़े नेताओं के निगाहों में किसान, मजदूर और ईमानदार कार्यकर्त्ता मुर्खों की जमात है। राजनीति बुराईयों से लड़ने की हथियार होती है परन्तु आज की राजनीति में नीती गायब सिर्फ राज रह गया है। राज में जन्ता को बांटो और स्वंय मौज मस्ती करो। सरकार नहीं चाहेगी कि समाज चैन में रहे। सुरक्षित रहे, निरोग रहे और शिक्षित हो। शिक्षा को जान बूझ कर बर्बाद किया जा रहा है। जिसमें गरीबों के बच्चा पढ़ लिख कतार में खड़ी न हो जाए। सरकार नही चाहेगी कि समाज निरोग रहे, रोग होने वाला भोजन कराया जा रहा है, रोग ठीक करने के लिए अस्पताल खोला जा रहा है, डॉक्टर की बहाली कि जा रही है, स्वास्थ्य के लिए खतरे की घंटी है जर्सी गाय का दूध, पोलिस युक्त चावल, चीनी आदि यह सब सेवन कर जीन्दगी और मौत से जूझ रहे हैं। जनता की सुरक्षा के लिए पुलिस और थाना जहाँ सामान्य व्यक्ति पुलिस नाम से ही काँपती है।

पुलिसों की नजरों में गरीब अपराधी दिखते हैं। और टाईवेल्ट वाले लोग हरिश्चन्द्र होते हैं। निर्दोष जेल में तड़पते है और परिवार घर में तड़पते है। सरकार ने भ्रष्टाचारियों को उपहार में ठेकेदारी देती है। ठेकेदारी और ईमानदारी साथ-साथ हो ही नही सकती है। ठेकेदारी द्वारा किया गया मकान कभी-कभी निर्माण काल या कुछ ही दिन में ध्वस्त हो जाती है। ऐसे भ्रष्टाचार को सुशासन की कफन से ठक दी जाती है। देश में पहली बार प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी के बनने पर लोगों में बदलाव की आशा जगी थी। परन्तु वह भी आशा ध्वस्त होती नजर आ रही है। जिसका कारण है कि अधिकारी, मंत्री, सांसद, और विधायक ठेकेदारी करवाते है। मतलब साफ है कि अधिकांश भ्रष्टाचार में गोता लगाते है और ऐसे मंत्री, सांसद और विधायक की नजरों में भ्रष्ट अधिकारी हरिश्चन्द्र होते है। प्रधान मंत्री द्वारा लगभग गरीबों के हित में डेढ़ सौ से ज्यादा योजनाए चलायी जा रही है। जो कागजी बन कर रह गई है। बावजूद इन योजनाओं को लागु करवाने में अधिकांश सांसद, विधायक और मंत्री को कोई दिलचस्पी नहीं है। हो भी क्यों ठेका देने वाले ठेका लेने वाले और निगरानी करने वाले हरिश्चन्द्र होते है।

किसी भी संगठन का कार्यकर्त्ता ही फाउण्डेशन होता है। कार्यकर्त्ताओं से चार तरह का सहयोग लिया जाता है। किसी भी कार्यक्रम में लोगों को इकट्ठा करना, नारा लगवाना, माला पहनवाना तथा घर-घर जाकर जन समस्याओं को इक्कठा करवाना एवं समस्याओं को समाधान करना। बड़े नेता तीन ही काम करवाता है। चौथा काम नहीं करवाता है। मतलब समस्याओं को समाप्त मत होने दो। जनता को मुर्ख बनाने के लिए भ्रष्ट अधिकारियों को तीन तरह के सजा दी जाती है। कुछ दिनों के लिए तबादला, सस्पेण्ड तथा निलम्बन तीनों सजा उपहार माना जाता है। कुछ ही दिनों में हरिश्चन्द्र बन जाता है। जबकि उसको सजा हो और बरखास्तगी भी। ●

छोटे भगवान करते हैं सबके दिलों पर राज

● श्रीधर पाण्डेय

ज्ञान कर्म तपस्या बलिदान एवं मोक्ष की धरती बिहार हमेशा से संघर्ष करती आ रही हैं एवं यही संघर्ष का परिणाम हैं कि दो दो धर्मो के साथ विश्व की पहली लोकतंत्र की जननी होने का भी इसे गौरव प्राप्त हैं वही शिक्षा ,संस्कृतिक दम पर पूरे विश्व को अपनी लोहा मनवाया हैं। आज हम बिहार की नहीं बल्कि एक बिहारी की बात करेंगे जिसकी एक आवाज सुनने के लिए पूरे विश्व के लोग इंतजार करते हैं,जिसका शो लोग अपना काम छोड़कर देखते हैं, एक बार गाने की आवाज सुन मन्त्र मुग्ध हो जाना एवं लोगो के दिल पर राज करने वाले इस बिहारी को पूरी दुनिया छोटे भगवान के नाम से जानती हैं,वह हैं 8वर्षीय जयस कुमार। मूलरूप से गया कि रहने वाले जयस कुमार 3 साल के उम्र से ही गाना गा रहे हैं। बातचीत के क्रम में जब हमारी मीटिंग जयस एवं उनके पिता राजीव कुमार से हुई तो कई ऐसे राज खुलकर आये जो अपने पाठकों के बीच रखना जरूरी भी हैं। जयस के पिता राजीव बताते हैं कि जयस 3 साल से ही गाने की प्रैक्टिस कर रहा हैं, सारेगामापा के मंच से फेमस हो चुके लिटिल चैम्प 2017 के विजेता जयस स्वभाव से बिल्कुल नटखट होने के साथ ही साथ मन से बिल्कुल बिहारी भी हैं। पश्चिमी खान पान से बिल्कुल ही दूर रहते हैं। महज 6 साल की उम्र से ही वह कई भाषाओं में गाना गा रहे हैं चाहे

वह हिंदी, हो मराठी हो या कन्नड़ जो भी एक बार सुने मन गदगद हो जाता हैं। कई इंटरनेशनल एवं नेशनल कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी प्रस्तुति देकर लोहा मनवा चुके जयस जी टीआरपी के मामले में भी भारत मे नंबर वन हैं। फिलहाल अपने मम्मी पापा के साथ दिल्ली में रहते हैं जहाँ उनके पिता जी सॉफ्टवेयर कंपनी में काम करते हैं वहीं उनकी माता जी हाउस वाइफ हैं। जयस बिहार के गया शहर से मध्यम वर्गीय परिवार से आते हैं। इनका भी बिहार से उतना ही लगाव हैं लेकिन बिहार से बाहर माता पिता जी के शिफ्ट होने की वजह से यहाँ आना जाना कम लगा रहता हैं फिर भी परिवार के बाकि सदस्य बिहार में ही रहते हैं जिनमे इनके बड़े पापा अशोक कुमार श्रम विभाग में अधिकारी हैं। बातचीत के क्रम में जयस अपने नाना की जिक्र करते हैं जो समाज कल्याण विभाग में कार्यरत थे,मूलरूप से भागलपुर के ही रहने वाले हैं जिनका साथ प्यार दुलार की जिक्र एवं उस पल का भी बात बता रहे थे जब सारेगमापा के मंच पर वह नाना नानी, दादी एवं मम्मी पापा के साथ मौजूद थे। पूरे देश मे लोकप्रिय हो चुके जयस को बिहार सरकार के कला एवं संस्कृति मंत्रालय के माध्यम से आमंत्रित कर बिहार में उनके कार्यक्रम का मौका देना एक बिहारी के लिए गर्व की बात होगी,साथ ही अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए बिहार सरकार जिस तरह आइकॉन के रूप में प्रोजेक्ट करती हैं उसी तरह बिहार के एक बच्चे को हौसला अफजाई के लिए बिहार सरकार को एक बड़ी कदम उठानी चाहिए क्योंकि जो बच्चा 6 वर्ष की अवस्था में अपनी पूरी दुनिया मे डंका बजा चुका हैं उससे पूरे बिहार वासियो की उम्मीद हैं कि कला के क्षेत्र में अपनी उल्लेखनीय योगदान के माध्यम से वह बिहार का सर और गर्व से ऊंचा करेगा। ●

कोईलवर में लगाये गये तीन हजार वृक्ष

● रामपाल प्रसाद

बीते 2 मार्च को माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार द्वारा चलाये जा रहे जल जीवन हरियाली कार्यक्रम के तहत आज ब्राडसन कमोडिरीज प्रा. लिमिटेड, हिमांशु कम्प्लेक्स, कोईलवर के द्वारा परेव ग्राम स्थित अब्दुलवारी पुल के उत्तर पेट्रोल पम्प के पास वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त अवसर पर डॉ. अशोक कुमार, निदेशक, ब्राडसन ने कहा कि आज तीन हजार 3000 हजार पेड़ लगाये गये जिसमें आम, पाकुड़, कटहल, नीम, शिशम, कदम, पीपल आदि प्रमुख वृक्ष हैं। इस तरह के कार्यक्रम इस क्षेत्र में निरंतर चलाये जाने की योजना बनाया जा रहा है। प्राकृतिक के साथ छेड़छाड़ होने से संतुलन बिगड़ती है और इसे संतुलित करने में पेड़ लगाने का काम इसके चरण की हली सीढ़ी है। उन्होंने इस कार्यक्रम में उपस्थित ग्रामीण भाईयों से अनुरोध किया आप सब लोग भी अपने-अपने घरों के पास कम से कम एक पेड़ अवश्य लगायें। इससे दो काम होंगे। एक तो आपके पास हरियाली होगी और दुसरा राज्य सरकार की योजनाओं एवं विकास में आपका सहयोग होगा। उक्त अवसर पर बिहार सरकार के खान एवं भूतत्व विभाग के निदेशक श्री अरूण प्रकाश एवं सहायक निदेशक, श्री सुरेन्द्र प्रसाद, जिला परिषद्, पटना के कार्यकारी अध्यक्ष, ज्योति सोनी, भोजपुर (आरा) सक्कडी के मुखिया श्रीमती श्वेता सिंह, वरिष्ठ समाजसेवी श्री रामेश्वर सिंह एवं जिला खान पदाधिकारी ने भी पेड़ को लगाया।

बिक्रम विधान सभा क्षेत्र परेव के समाजसेवी श्री जीवन कुमार, पूर्व विधायक श्री अनिल शर्मा, समाजसेवी श्री कृष्ण मोहन सिंह, श्री संजय सिंह, श्री सुभाष प्रसाद यादव, श्री शत्रुध्न प्रसाद फरीद हुसैन खाँन, श्री असीमुद्दिन एवं श्री सुदामा ठाकुर ने भी बढ़-चढ़ कर पेड़ लगाया। उक्त अवसर पर समाजसेवी श्री जीवन कुमार ने कहा कि जल जीवन हरियाली के तहत परेव ग्राम के चारो ओर योजना बनाकर वृक्ष लगायी जानी चाहिए और इस गाँव को हराभरा बनाने में अग्रणी बनायी जाय। ऐसी सोच मैं रखता हूँ और इसे साकार करने की दिशा में शीघ्र कार्रवाई की जायेगी। ●

सेवा मेरी पहली प्राथमिकता- रितेश

बिहार के जहानाबाद के मखदुमपुर नगर पंचायत के उप मुख्य पार्षद अपने कार्यकाल में अपने नगर पंचायत के विकास को निरंतर गति देते हुए अपनी जनता एवं सहकर्मियों के बीच सामंजस्य के साथ कार्य कर रहे हैं और उनके उन्हीं कार्यों को प्रकाश में लाने के लिए पत्रिका प्रतिनिधि **नवीन कुमार रौशन** एवं **वेंकेटेश कुमार** द्वारा मखदुमपर नगर पंचायत के उप मुख्य पार्षद **रितेश कुमार (चुन्नु शर्मा)** का साक्षात्कार किया है। प्रस्तुत है इसके प्रमुख अंश :-

★ रितेश जी आप एक सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में प्रस्तुत किया है और आशा की जाती है कि आप निरंतर आगे बढ़ते रहें इस संदर्भ में मैं आप से यह जनना चाहूँगा कि आपका प्रारंभिक पारिवारिक और शैक्षणिक जीवन कैसा रहा?

देखिए शैक्षणिक जीवन की बात करें तो मैं पोस्ट ग्रेजुएट की डिग्री हासिल किया, लेकिन उस शैक्षणिक काल हमें संघर्ष का जीवन भी बिताना पड़ा, पोस्ट ग्रेजुएट इन मैनेजमेंट एण्ड पोस्ट ग्रेजुएट फोरन ट्रेड डुयेल कोर्स किया-जहाँ तक सामाजिक कार्यकर्त्ता की बात रही तो मेरे अंदर बचपन से ही सामाजिकता का जन्म हो गया था। दूसरी ओर मैं धार्मिक कार्यों में भी काफी रूचि लेता हूँ, परंतु धार्मिक रूचि का मतलब यह नहीं कि मैं कोई कट्टरपंथी विचारधारा से ओत-प्रोत हूँ। हम नगर पंचायत के उपाध्यक्ष के पद पर हैं तो हम सभी को साथ लेकर चलना पसंद करते हैं यानि कि समाज के सभी धर्मों के, सभी जाति के लोगों को साथ लेकर चलते हैं।

★ एक सामाजिक कार्यकर्त्ता का जीवन निरपेक्ष एवं पारदर्शी होना चाहिए इस संदर्भ में आपको क्या कहना है?

देखिये आपका जो प्रश्न है, एकदम सही है, पारदर्शिता एक सामाजिक कार्यकर्त्ता की पहचान है। इस पहचान में मैं अपने आपको अग्रणी रखता हूँ और हम अपने निर्णय में यह ध्यान रखता हूँ कि जो भी मेरा निर्णय होता है, उसमें सभी लोगों के हित की बात करें चाहे वो किसी धर्म के लोग हो।

उप मुख्य पार्षद रितेश कुमार का साक्षात्कार करते पत्रिका प्रतिनिधि वेंकेटेश कुमार

★ अभी आप नगर पंचायत मखदुमपुर के उप मुख्य पार्षद हैं अपने नगर पंचायत के सर्वांगिण विकास के लिए कोई स्पन संयोग रखे है क्या?

इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि मैं नगर पंचायत मखदुमपुर के सर्वांगिण विकास के लिए स्पन संयोये भी रखे हैं और जो स्वप्न मैंने देखा है उसे मैं जमीन पर उतारने का काम कर रहे हैं। इसके पहले मेरी माँ नगर पंचायत के अध्यक्षा हुआ करती थी, मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं होगी कि माँ के कार्यकाल में मैं अपना विचार रखता था, उसे माँ भी स्वीकार सोच-समझकर करती थी। उसी का परिणाम हुआ कि मैं जब नगर पंचायत में कदम रखा था तो उस समय पुरा अराजकता का माहौल था कोई अनुशासन जैसा चीज नहीं था, दफ्तर नहीं था ये सब बातों से ये मत समझिए कि हम किसी पर आरोप लगा रहे हैं, जो वस्तुस्थिति थी उससे अवगत रहा हूँ। पहले वस्तु ही थोड़ी सी काम हो पाई थी, लेकिन जब हमने पहला कदम रखा तो, केवटार जाने के क्रम में हमने समझा कि यह गाँव कहीं से भी पक्की सड़क से जुड़ा नहीं है, तो हमने पहला कार्य पक्की सड़क से जोड़ने का कार्य किया। उसी क्रम में पलया गाँव में एन.एच. 83 से अपने गाँव तक पी.सी.सी. का कार्य संपन्न किया। मखदुमपुर का गाँधी मैदान को हमने मिट्टी भराकर उसे ऊँचा किया ताकि पानी नहीं लगा है, बहुत सी योजनाएँ यहाँ किया है उसे देखने समझने के लिए पूरी सूची देखनी पड़ेगी। ये सभी कार्य माँ के अध्यक्ष पद पर बने रहने का है। जब हम खुद उपाध्यक्ष बने तो लाइट लगाने का कार्य, वाजितपुर रोड जो आजादी के बाद बना ही नहीं था, उसको हमने बनवाने का कार्य किया।

★ क्या सामाजिक सेवा के दौड़ में कोई आदर्श है?

अभी तक हमने सोचा ही नहीं है किसी का नाम हम नहीं ले सकते। आदर्श की बात करें तो हमारे समझ से मेरा कार्य ही मेरा आदर्श है। हम जो कार्य करते हैं, उसे ही हम अपना कर्म समझकर आदर्श मानते हैं।

★ आज तक के अपने कार्यकाल में आपने नगर पंचायत मखदुमपुर के विकास के लिए कौन-कौन से कार्य संपादित कर चूके हैं?

इसके पहले की योजनायें आप देख सकते हैं कि एन.एच. 83 से पलया आने वाली रोड में जो हण्डर है उसे हमने घाट का निर्माण कर चूके हैं और पार्क निर्माण कराना बाकी है, उसी जगह पर सार्वजनिक शौचालय का भी निर्माण होना है, लाइट तो हमने लगवा चूके हैं, प्याऊ की भी व्यवस्था रहेगी और साथ में 1 करोड़ 24 लाख की लागत से लडौआ में कार्य होना है। 62 लाख की योजना है। हमारे पास प्लानिंग है उसी के सोच के साथ मेरा कार्य चल रहा है। हमने सोच रखा है कि पुरे नगर पंचायत का हम एक रोड से घूम जाएं अर्थात एक रिंग रोड पूरे नगर पंचायत का है, जिससे पुरा नगर घुमकर अपने कार्य को संपादित करता रहूँ।

★ क्या अपने आपको किसी राजनैतिक पार्टी से संबंध बना रखा है? अगर हाँ तो उस पार्टी में आपको कौन सी विशेषताएँ नजर आती है?

हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा सेक्यूलर के सदस्य एवं राष्ट्रीय सचिव के पद पर मैं कार्य कर रहा हूँ। इसके पहले में काँग्रेस युवा अध्यक्ष पद पर कार्य सफलतापूर्वक किया, और लोगों के द्वारा हमें समर्थन एवं सहयोग भी मिला। माननीय जीतनराम माँझी जो हमारे पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं वो एक इमानदार स्वच्छ छवि एवं सरल और सहज स्वभाव रखने वाले हैं और सबसे खास बात यह है कि वो समाज के सबसे निम्न वर्ग से आते हैं और आप उनका भाषण भी सुनते होगें वे कहते हैं कि जबतक समाज के सबसे निचला वर्ग को उठाया

नहीं जाएगा तब तक हम न तो बिहार का विकास कर सकते और न हीं राष्ट्र के विकास कर सकते हैं। इसलिए उनका विचार व्यक्तिगत रूप से मुझें अच्छा लगता है। जब बिहार में कुछ दिनों के लिए उन्होंने बिहार का सत्ता सौंपा गया और तो जो उन्हों विकास का कार्य किया उसे विकास कहा जाता है। आज तो नीतीश कुमार जी को सुशासन बाबु का तगमा जबरदस्ती उनके नेताओं एवं कार्यकर्त्ताओं के द्वारा दिया गया है। सुशासन काल तो आदरणीय जीतन राम माँझी का कार्यकाल था। इसलिए सुशासन बाबु का तगमा हकिकत में आदरणीय जीतन राम माँझी जी को लगना चाहिए।

★ आगामी बिहार विधान सभा का चुनाव लड़ने की मंशा आपने पाल रखी है क्या?

जी हाँ बिल्कुल बना रखी है और इसके लिए हम मेहनत करने के लिए भी तैयार हैं इस पर हमें लगता है कि पार्टी का हमपर पूर्ण भरोसा भी है और साथ में जनता भी हमारे छोटे-छोटे कार्यों से संतुष्ट हैं। इसलिए अगर हमें पार्टी मौका देती है तो हम जरूर मैदान में उतरेंगे और हमारे पिछले कार्यों के प्रभावित होने वाली जनता हमारे लिए प्रचार प्रसार का कार्य करेगी।

★ रितेश जी दलित पीड़ित उपेक्षित अभावग्रस्त मानवता के विकास के प्रति आपकी क्या योजनाएँ है, नगर पंचायत के स्तर पर इस क्षेत्र में आपके द्वारा कौन-कौन से कार्य किये गये हैं?

हमने इसके लिए दो तीन योजनाएँ बना रखी है, जिसमें सबसे प्रथम तो है प्रधानमंत्री आवास योजना जो लाभुकों तक नहीं पहुँच पा रही है, क्योंकि उसे उसको अपना जमीन नहीं मिल पा रहा है, इसमें मेरा कहना है कि जो 25-30 वर्षों पहले इंदिरा आवास दी गयी वह जर्जर स्थिति में आने के बाद पुनः अपने झुग्गी-झोपड़ी में रहने को विवश है। क्यों नहीं इंदिरा आवास योजना के सर्वे करवा कर उनलोगों को उसी जमीन पर पुनः प्रधानमंत्री आवास योजना दी जाए। यह बात हमने बिहार सरकार के प्रधान सचिव की बैठक में हमने रखा था, परंतु इस बात को कितना तरजीह दिया जाता है ये मैं नहीं जानता हूँ।

दूसरी बात नगर पंचायत के होल्डिंग टैक्स से है, होल्डिंग टैक्स तो सभी से लिया जाता है। परंतु हमने उनलोगों को होल्डिंग टैक्स से मुक्त करने की बात सोंच रहे जो दलित, पीड़ित, असहाय हैं। इसके लिए हम एक सर्वे भी करायेगें और आगामी बोर्ड के बैठक में इस बात को रखेंगे कि ऐसे क्षेत्रों से सरकार कोई टैक्स नहीं लें और सरकार भी जीतनी भी योजनाएँ आयेंगी उसे मैं सही तरीके से उनके लाभुकों तक पहुँचाने का कार्य करेंगे।

★ आपके नगर पंचायत के बहुत से ऐसे वार्ड भी है, जहाँ तक सरकार द्वारा घोषित योजनाओं का लाभ लोगों तक शायद नहीं पहुँच पाया है, उस संबंध में क्या कहना चाहेंगे।

शायद ये आप ये कह रहे हैं तो बात हो भी सकती है, लेकिन हमारे हिसाब से ये पहले की बात है लेकिन आप इसकी समीक्षा कर सकते हैं। विगत सालों में जो हमने कार्य किया है, तो आप पायेंगे कि सरकार द्वारा जो भी घोषित की गयी योजनाएँ हैं, उसको हमने पूर्ण रूप से सभी वर्ग के लोगों तक पहुँचाया है इसी का परिणाम है कि हम दूसरी बार भी चयनित हुए और साथ में हमें नजता का भरपुर समर्थन भी प्राप्त हुआ। साथ में हमें सभी पार्षदों का भरपुर सहयोग एवं समर्थन मिलता रहा है तभी तो मैं नगर पंचायत मखदुमपुर का विकास कर पा रहा हूँ। मुझे निर्विरोधा चूना गया है। 19 वार्ड पार्षदों का हमपर पूर्ण भरोसा है। सभी का एक प्लानिंग है उसी के अनुरूप में कार्य हो रहा है। मेरी पहली प्राथमिकता सिर्फ सेवा है।

अपराधियों पर नकेल मुख्य टारगेट : अशोक मिश्र

● **श्रीधर पाण्डेय**

अपराध अपराधियों एवं शराब माफियाओं पर काल की तरह बरसने वाले राजधानी पटना के नगर एसपी पश्चिमी अशोक मिश्र ने पुलिस सप्ताह के अवसर पर फिर एक बार सुर्खियों में आये। जहाँ कई पदाधिकारी द्वारा इस मौके पर खेल प्रतियोगिता या कोई अन्य कामों की जागरूकता दिया जा रहा था वहीं एसपी पश्चिमी ने अपने अनुभवों को बच्चों के बीच बताया। उन्होंने सरकारी विद्यालय के बच्चों के बीच अपनी अधयापक के तौर पर एक दिन का वक्त गुजारा। वास्तव में यह क्षण बच्चे के लिए बहुत ही प्रेरणादायी रहा होगा क्योंकि एक शिक्षक के रूप में अपनी जीवन को नई दिशा की शुरुआत करने वाले शांत स्वभाव, मृदुभाषी एवं तीखे तेवर वाले अशोक मिश्र ने आईपीएस बन अब समाज के लोगो की सेवा के साथ ही साथ सुरक्षा एवं जागरूकता पर भी विशेष फोकस दे रहे है। सिटी एसपी पश्चिमी बनने से पूर्व उन्होंने आईपीएस ट्रेनी के रूप में सहायक पुलिस अधीक्षक दानापुर में लगभग डेढ़ साल योगदान देते हुए यहाँ की बारीकियों को समझा एवं अपराध एवं अपराधियों ,शराब माफियाओं पर नकेल कसने के साथ साथ आम पब्लिक के लिए भी एक विश्वास बनकर उभरे।जब एसपी के रूप में प्रमोट हुए तो राजधानी पटना के पश्चिमी एसपी बनाया गया जिसमें दानापुर अनुमंडल में पहले से कार्य करने का अनुभव आज के कार्यो में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दे रहा हैं।

राजधानी पटना का यह इलाका अपराध ,अपराधियो एवं माफियाओं के लिए एक सुरक्षित जोन के रूप में रहा हैं,क्योकि मिश्रित आबादी एवं शहरी का बढ़ता प्रकोप आपसी रंजिश का बढ़ावा पुलिस के लिए काफी चुनौतीपूर्ण रहा हैं लेकिन एसपी पश्चिमी के रूप में योगदान के पश्चात श्री मिश्रा ने अपनी कर्मठता,दक्षता योग्यता एवं अनुभव के दम पर अपराधियों पर त्वरित नकेल कसते हुए पटना पुलिस का लोगो के प्रति भरोसा जितने में सफल हो रहे है। कम्युनिटी पुलिसिंग पर जोड़ देने वाले एसपी अशोक मिश्र ने बताया पटना पुलिस हमेशा से आपके साथ रही हैं, आप पुलिस के प्रति भरोसा बनाये रखे एवं किसी भी सूरत में कानून को हाथ मे न ले, पुलिस अपराधियों के कमर तोड़ने में सक्षम हैं, किसी भी सूरत में अपराधियों का मनोबल आप न बढ़ाए, वह पुलिस के लिए चुनौती के साथ साथ आपके लिए भी खतरे की घण्टी हो सकती हैं क्योंकि अपराध करने वाला किसी का नहीं होता जिसे अपनी भविष्य बनाने की फिक्र नहीं हैं वह दूसरों को क्या साथ दे सकता हैं। किसी भी तरह की परेशानी हो हमारा नंबर, सीनियर पदाधिकारी का नंबर हमेशा आपके लिए खुला हैं,किसी भी तरह की सूचना एवं समस्या से आप अवगत कराएं और हमसब मिलकर आपकी त्वरित समस्या निष्पादन की कोशिश करेंगे, भरोसा दिलाता हूं।●

सांस्कृतिक कार्यक्रमों से बच्चों ने मचाया धमाल

रामकृष्ण परमहंस विद्यालय ने मनाया वार्षिकोत्सव

● नवीन कुमार रौशन

पिछले दिनों जिले के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान रामकृष्ण परमहंस विद्यालय ने अपना वार्षिकोत्सव धूम-धाम से मनाया। इस वार्षिकोत्सव में विद्यालय के शिक्षकों ने विद्यालय के शैक्षणिक इतिहास विकास की चर्चाये की, वहीं छात्रों ने अपने सांस्कृतिक कार्यक्रमों से धमाल मचा दिया। जिला मुख्यालय के राजाबाजार स्थित अपने विद्यालय प्राँगण में आयोजित इस समारोह का उद्घाटन तरेत् पाली स्थान के महंत स्वामी श्री चक्रपाणि जी महाराज ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच दीप प्रज्ज्वलन से किया। इसके पूर्व आगत अतिथियों का स्वागत विद्यालय के चेयरमैन चन्द्रभूषण शर्मा उर्फ भोला बाबू ने अंग वस्त्र व स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया। कार्यक्रम के उद्घाटनों प्रांत सभी अतिथियों ने समेकित रूप से माँ सरस्वती व स्वामी रामकृष्ण परमहंस के तैल चित्र पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि भी दिए। शैक्षणिक इस दरम्यान विद्यालय की छात्राओं ने सरस्वती वंदना व नृत्य प्रस्तुत कर पूरे वातावरण को भक्तिमय कर दिया। इस अवसर पर विद्यालय के चेयरमैन चन्द्रभूषण शर्मा ने अपने तत्कालीन एकेडमिक वर्ष की उपलब्धियों पर चर्चा के साथ-साथ विद्यालय के इतिहास विकास पर भी चर्चाएं की।अपने पूर्वति छात्रों की चर्चा करते हुए कहा कि विद्यालय के लिए यह गौरव की बात है कि यहाँ से निकले हुए छात्र देश के विभिन्न उच्चस्थ पदों पर आसीन होकर अपने अभिभावकों के साथ साथ विद्यालय का भी गौरव बढ़ा रहें हैं। कार्यक्रम के उद्घाटन करता स्वामी चक्रपाणि जी महाराज ने स्वामी रामकृष्ण की चर्चा करते हुए कहा कि समाज मे आज रामकृष्ण परमहंस जैसे गुरुओं की कमी है।यही कारण है कि आज

समाज मे स्वामी विवेकानंद पैदा होने बन्द हो गए है। कार्यक्रम को जिले के एस.पी.मनीष ने सम्बोधित करते हुए कहा कि ज्ञान अर्जन के लिए शिक्षा का कोई रास्ता शॉटकट नही हो सकता। शॉटकट रास्तों से चलकर डिग्रियां तो ली जा सकती है काबिलियत नही। कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने तथा विद्यालय में शैक्षणिक उच्च गुणवत्ता का परिचय देने वाले छात्रों को सम्बोधित करते हुए एसडीओ निवेदिता कुमारी ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों के आयोजनों से था इसमें बच्चों की सहभगिता से उनका सर्वांगीण विकास होता है। जो पढ़ाई के साथ साथ आवश्यक है।

शबनम, आरुची तथा शिवानी ने अपने सहेलियों के साथ मिल कर सरस्वती वंदना गा कर नृत्य पस्तुत किये वहीं सागर अजित तथा रौशन ने देश भक्ति गीतों पर डांस कर धूम मचा दिया।बच्चों ने रंगीलो तेरो ढोलना पर भी नृत्य प्रस्तुत कर लोगों का मन मोह लिया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इनके अलावे वेदप्रकाश, दिपांशु, प्रकाश, अमित और गौरव ने देशभक्ति नाटक का मंचन कर खूब वाहवाही लूटी। इस कार्यक्रम को विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव सब जज मुकेश मिश्र ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ठ कार्य कर रहे लोगो को सम्मानित भी किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से भाजपा नेत्री और जिले के जाने माने शिक्षाविद राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित इंदु कश्यप, एस एस कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ चन्द्रभूषण शर्मा, भाजपा जिलाध्यक्ष सुरेश कुमार, जेडीयू के वरिष्ठ नेता इबरार अहमद, जेडीयू जिलाध्यक्ष चन्देश्वर बिंद, रालोसपा जिलाध्यक्ष पिंटू कुशवाहा, के अलावे वाल विद्या मंदिर के निदेशक अक्षय कुमार, संत कोलम्बस स्कूल के निदेशक राकेश कुमार पूर्व मुखिया सुभाष शर्मा आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे। ●

संस्कृत से भेद-भाव क्यों?

● विकाश कुमार/संतोष कुमार मिश्र

संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है। संस्कृत भारतीय उपमहाद्वीप की एक मिट्ठी भाषा है, जो सबका मन मोह लेती है। संस्कृत कई भाषाओं की जननी है जैसे आधुनिक भारत में हिन्दी, बंगला, मराठी, सिंधी, पंजाबी और नेपाली भाषाओं की उत्पती संस्कृत से हुई है। हिन्दू धर्म की कोई भी पूजा संस्कृत में ही होती है। फिर संस्कृत से भेदभाव क्यों? बिहार संस्कृत प्राथमिक सह माध्यमिक शिक्षक संघ, जहानाबाद के जिलाध्यक्ष उपेन्द्र कुमार ने एक बैठक में कहा है कि दिनांक 01/09/2015 को बिहार के मंत्रीमंडल द्वारा 609 मदरसा तथा 69 संस्कृत विद्यालयों की मंजूरी दी गयी थी। लेकिन 69 संस्कृत विद्यालयों को जॉच के नाम पर वेतन नहीं दिया जा रहा है। जबकि 609 मदरसा को दिनांक 01/09/2015 से ही बिना जॉच पड़ताल वेतन भुगतान ही नही, बल्कि उन्हें 25 फरवरी 2019 को वेतनमान भी दे दिया गया। दूसरी ओर 25 फरवरी 2019 को मंत्रीमंडल के निर्णय द्वारा अधिसूचना संख्या- 230 दिनांक 05/03/2019 द्वारा प्रस्वीकृत 2459+1 पुराने तथा 205 एवं 609 कोटि के नये मदरसा को दिनांक 25/02/2011 के बाद नियुक्त नियोजित कर्मियों को पुनरीक्षित वेतनमान भी दे दिया गया। जबकि प्रस्वीकृत पुराने 531+1+34 एवं 609 मदरसा के साथ प्रस्वीकृत 69 संस्कृत विद्यालयों में 15/02/2011 के बाद नियुक्त नियोजित कर्मियों को वेतनमान् से वंचित कर दिया गया है। क्या यह भेदभाव नही है। जबकी मदरसा और संस्कृत दोनो एक ही कोटी के है। इतना ही नही उनका कहना था कि आजादी के समय से सूबे के सभी पुराने जिलों में जिला स्कूल एवं राजकीय संस्कृत उच्च विद्यालय खोला गया था, लेकिन उनमें बिहार में 9 राजकीय संस्कृत विद्यालयों के शिक्षक शिक्षा सेवा के अधिकारी हो गये। अब उक्त राजकीय संस्कृत उच्च विद्यालय लिपिक और आदेशपाल के भरोसे संचालित है उसमें शिक्षकों का नियुक्ति के अभाव में बन्द की स्थिति हो चुकी है उदाहरण के तौर पर राजकीय संस्कृत विद्यालय गया। जिलाध्यक्ष का कहना है कि 20 वर्ष पूर्व सरकार का निर्णय था कि जो सुविधा अल्पसंख्यक विद्यालयों को दी जाती है वही सुविधा संस्कृत विद्यालयों एवं मदरसा को दी जायेगी, लेकिन संस्कृत विद्यालयों की समस्या को देखने वाला कोई नही है। संस्कृत संस्थानों के छात्रों का लालू शासन काल में पॉच साल तक मध्यमा की परीक्षा नही लेकर संस्कृत विद्यालयों का अध्ययन-अध्यापक का कमर तोड़ दी गयी थी। वही हाल एन0डी0ए0 सरकार में एकबार 2 साल 2010 एवं 2011 की मध्यमा परीक्षा 2012 में ली गयी थी तथा दूसरी बार 2016 से 2018 तक मध्यमा परीक्षाफल बोर्ड के पुनर्गठन के अभाव में लम्बित रहा है। इनका कहना है कि आखिर कौन अभिभावक अपने बच्चों का भविष्य खराब करने हेतु इन विद्यालयों में नामांकन करायेगा। तो फिर लालटेन युग और सुशासन बाबु के सरकार में क्या अंतर है। वही जिलाअध्यक्ष का कहना है कि सरकार एवं सरकार के पदाधिकारीगण कई बार इस तरह के ब्यान दे चुके है कि संस्कृत विद्यालय में पढ़ाई नही होती है। जबकी सच्चाई यह है की सरकार द्वारा आज तक संस्कृत विद्यालयों के आधारभुत संरचना के लिए एवं पढ़ने वाले छात्रो के लिए सामान्य विद्यालयों की भाती कोई सुविधायें नही दि गई है। इस लिए सरकार को चाहीए की संस्कृत के सभी विद्यालयों को मजबुत बनाये एवं छात्रों को सभी सुविधाये प्रदान करें, तभी इन विद्यालयों तथा छात्रों का विकास संभव है। केवल अध्यापकों पर आरोप लगाने से विकास संभव नही होगा। यहॉ तक की संस्कृत शिक्षा बोर्ड द्वारा नही कभी मध्यमा का परीक्षा समय पर ली जाती है और नही कोई कलेण्डर जारी किया जाता है। वही बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष डॉ भारती मेहता ने औरंगाबाद महाविद्यालय भवन के उद्घाटन के मौके पर कही थी कि संस्कृत प्रचीन भाषा है, जिसकी आज रक्षा करने की जरूरत है। संस्कृत से ही अपनी संस्कृती बची हुई है। संस्कृत भाषा सिर्फ मंत्रोच्चारण के लिए नही,बल्कि संपूर्ण ज्ञान के लिए है। शिक्ष मंत्री कृष्णनंदन प्रसाद वर्मा ने विधानसभा में नियोजित शिक्षको जो हड़ताल पर है उन्हे कहा कि शिक्षक हड़ताल नही करते, तब भी सरकार उनकी बेतन बढ़ोतरी करती। फिर संस्कृत शिक्षको ने तो कोई हड़ताल नही किया फिर इन्हें बंचीत क्यो किया गया। क्या यह दोयम दर्जो कि नती नही है। 03 मार्च 2020 को उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने विधान परिषद में कहा कि यह बिना आंदोलन के ही सबका ख्याल रखने वाली सरकार है। फिर उपमुख्यमंत्री को संस्कृत विद्यालयों पर नजर क्यो नही पड़ रही है। जबकी संस्कृत भाषा देश की सांस्कृतिक एकता, विज्ञान और सभ्यता के विकास की आधारशिला है। इससे भेदभाव करना अपराध है। इसी प्रकार संस्कृत पढ़ाने वाले अध्यापकों के साथ भेदभाव करना विकास की जड़ काटना है। संस्कृत की पढ़ाई करने वाले पंडित कभी बेरोजगार नही होते है। संस्कृत को बढ़ावा देने से बेरोजगारी भी दूर होगी। आधुनिक विद्वानो के अनुसार संस्कृत भाषा का अखंड प्रवाह पॉच सहस्त्र वर्षो से बहता चला आ रहा है। आज भी सभी क्षेत्रों में इस भाषा के द्वारा ग्रंथनिर्माण की क्षीण धारा अविच्छिन्न रूप से वह रही है। आज भी यह भाषा,अत्यंत सीमित क्षेत्र में ही सही, बोली जाती है। पंडितजन इसका परस्पर वार्तालाप में प्रयोग करते है। हिन्दुओं के सांस्कारिक कार्यो में आज भी यह प्रयुक्त होती है। ●

भ्रष्ट अधिकारियों एवं सफेदपोशधारियों के लिए एस.सी./एस.टी. एक्ट बना हथियार

● अनिल कुमार मिश्र

बिहार राज्य के औरंगाबाद जिले के किसी भी थाना में अनुसूचित जाति /जनजाति के साथ अत्याचार के वास्तविक कारित घटना एवं जारी जुल्म के मामले में प्राथमिकी दर्ज नहीं हो रहा है। अन्य थाना की बात ही छोड़े यहाँ तक की एसी एसटी के हित, रक्षा व सुरक्षा के लिए बिहार राज्य के जिला स्तर पर गठित एसी /एसटी थाना में भी प्राथमिकी दर्ज नहीं हो रहा है। वहीं सफेदफोस धारियो, बिचौलियो तथा दबंग लोगों के इशारे पर किसी भी थाना में एससी/ एसटी एक्ट के तहत समाज के हितैषियों, शुभ चिंतको तथा निर्दोष लोगों के विरुद्ध धड़ल्ले से प्राथमिकी दर्ज हो रहा है और सभी बातो को जानते हुए भी अनैतिक धनोपार्जन की चाहत मे उदेश्यों से भटक चुके तथा बदले व दुराग्रह की भावना से ग्रस्ति अधिकारियों द्वारा एससी एसटी एक्ट के तहत झुठे मुकदमा को भी सत्य करार दें दिया जाता है,जिसकी सुनवाई कहीं भी किसी स्तर पर नहीं हैं जिससे समाजिक नफरत फैल रहा है तथा आपसी भाईचारे की माहौल बिगड़ रहा है।

उक्त बातें अनुसूचित जाति/ जनजाति अनुश्रवण सह सतर्कता समिति समाहरणालय कल्याण शाखा औरंगाबाद (बिहार) के सदस्य सह वरीय अधिवकता मधेश्वर पासवान ने कही है। अधिवक्ता मधेश्वर पासवान ने प्रेस विज्ञप्ति के समर्थन में एक वीड़ियो जारी किया है और अनुसूचित जाति जन जाति अत्याचार निवारण अधिनियम को लेकर समाज मे फैलते अफवाह तथा भ्रांतियो पर मीड़िया को संबोधित करते हुए न्याय विद मधेश्वर पासवान ने कहा है। एक्ट का दुरूपयोग तथा अनुपालन के मामले को लेकर मीडिया को आगे आना होगा और मीडिया के आवाज को सशक्त बनाने के लिए सभी वर्ग के लोगों को मीडिया को साथ देना होगा तभी प्रशासनिक व राजनीतिक स्तर पर जारी जुल्म रूक पायेंगे और सभी के साथ समान्य रूप से न्याय संभव होगा। एस सी / एसटी एक्ट तथा अनुसूचित जाति के विरूद्ध अनुसूचित जाति का दुरूपयोग पर न्याय विद मधेश्वर पासवान ने राज्य देश व समाजहित में चिंता व्यक्त की है और जन संदेश में कहा है कि इससे सामाजिक नफरत फैलेगा और हिंसा बढ़ेंगे । अनुसुचित जाति एवं इनके सुरक्षा हेतू बने एक्ट का दुरूपयोग पर प्रशासन को प्रशासन को सख्त होना चाहिए और दोषी हो पहचान कर जो भी दोषी हो अविलम्ब सख्त व कठोर कार्रवाई करनी चाहिए। अध्यक्ष जिला पदाधिकारी एवं समाहर्ता औरंगाबाद के अनुसूचित जाति जनजाति अनुश्रवण सह सतर्कता समिति समाहरणालय औरंगाबाद (बिहार) पद नाम आवेदन पदेन सचिव कल्याण पदाधिकारी औरंगाबाद को 11. 02. 2020 को हस्त गत कराया गया है जिसकी प्रति मीडिया को भी दिया गया है। जिसमे जिले में गैर अनुसूचित जाति के लोगों द्वारा अनुसूचित जाति के विरूद्ध अनुसूचित जाति का खड़ा कर अनुसूचित जाति के सदस्यो के साथ जारी जूल्म व अत्याचार की ओर ध्यान आकृष्ट कराते हुए लोक सेवकों पर कड़ी प्रतिक्रिया ब्यक्त किया गया है तथा लोक सेवको द्वारा कानून की अनदेखी तथा इनके क्रिया कलाप व कार्य शैली तथा वरीय पदाधिकारी के आदेशों का अवहेलना पर राज्य समाज व देशहित में चिंता ब्यक्त किया गया है और जन संदेश मे अनुसूचित जाति/ जनजाति अनुश्रवण सह सतर्कता समिति समाहरणालय कल्याण शाखा औरंगाबाद (बिहार) के सदस्य सह अधिवक्ता मधेश्वर पासवान ने कहा है कि लोक सेवकों को अनुसूचित जाति जन जाति अत्याचार निवारण अधिनियम 1989 नियमावली 1995 के उपबंधो एवं बिहार काश्तकारी अधिनियम 1885 धारा 49 (च) एवं (ज) की जानकारी नहीं है। अधिनियम का दुरूपयोग से समाज में अशांति व आराजकता फैलने की आशंका है। अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम की मामले में दोषी को समुचित सजा दिलाने तथा घटनाओं की पुनरावृति पर रोक लगाने के जगह संबंधित लोक सेवक समाज के हितैषियों तथा निर्दोष लोगों को वेवजह परेशान कर रहे है। अनैतिक धनोपार्जन की चाहत में उद्देश्यों से भटक चुके लोक सेवक एक ओर सरेआम अनुसूचित जाति /जनजाति अत्याचार निवारण की धारा 02 का उपधारा अपप का अपराध कर रहे। तो दुसरी ओर लोक सेवको द्वारा संरक्षित गैर अनुसूचित जाति के दवंग लोग अधिनियम की धारा (f), (g) जी का अपराध कर रहे है। पुलिस द्वारा आपेक्षित कार्रवाई को नहीं करना अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम की धारा 4 की उप धारा (I) का अपराध है तथा लोक सेवा का परिभाषा आईपीसी की धारा 21 में परिभाषित है जिनका संबंध अपराधिक गतिविधियों से है।

अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम का दुरूपयोग कर रहे लोगों की पहचान कर कार्रवाई करने का का प्रावधान सी आर पी सी की धारा 02 की उप धारा (iii) मे है जिसका उपयोग नही होने से समाज में अराजकता और अशांति महौल है। सी आर पी सी की धारा 02 की उप धारा (पपप) का अनुपाल की आवश्यकता है, किन्तू ऐसा नहीं हो रहा है जिससे समाज में एससी एसटी एक्ट के प्रति लोगों में भ्रांतियां फैली हुई है और भाई चारे का महौल भी दिन-प्रतिदिन बिगड़ते जा रहा है फलस्वरूप समाज के चितक भी अब दबंगो द्वारा अनुसूचित जाति के साथ कारित घटना में वास्तविक पीड़ितों को न्याय दिलानें में सहयोग नहीं कर पा रहे हैं। एससी एसटी एक्ट के प्रति दबंगों द्वारा समाज में फैला फैलाए जा रहे भ्रांतियों पर न्याय विद मधेश्वर पासवान ने कहा कोई भी एक्ट दुसरो को रक्षा व सुरक्षा तथा अपराध पर नियंत्रण के लिए बनाया जाता है जिससे किसी भी समाज के लोग भय व आतंक मुक्त जीवन जी सके किन्तू समाज के ही कुछ स्वार्थी व लालची लोग किसी भी समाज को चौन की जिंदगी जीने नहीं देते है और अपने फायदे एवं अपने विरोधी या किसी दुसरे को परेशान करने अथवा किसी के जमीन को हड़पने की आशय से अनुसूची जाति के लालची व लोभी को खड़ा कर या मुखौटा बनाकर अथवा आगे कर लोगों को परेशान करते हैं। जिससे आपसी भाई चारा का महौल बिगड़ते जा रहा है और एससी एसटी एक्ट के प्रति लोगों में भ्रांतिया फैली हुई है। गैर अनुसूचित जाति के अधिकांश दबंग लोग ही इस एक्ट के दूरूपयोग में शामिल है जो सर्वथा निंदनीय हैं। पत्र में एससी/ एसटी एक्ट तथा गैर अनुसूचित जाति के लोगो द्वारा अनुसूचित जाति के विरूद्ध अनुसूचित जाति का दुरुपयोग पर गहरी चिंता व्यक्त किया है और जन संदेश में कहा है की औरंगाबाद जिला के अंतर्गत सभी अंचलाधिकारी एवं थानाध्यक्षों को अनुसूचित जाति जन जाति अत्याचार निवारण अधिनियम 1989 नियमावली 1995 के उपबंधो के कार्यान्वयन हेतू दिशा-निर्देश की आवश्यकता

है। पत्र मे कहा गया है कि संविधान आदेश 1950 खंड 3 में सूचीबद्ध अनुसूचित जाति संरक्षित है जिसका संरक्षक राज्य के प्रतिनिधि अंचल में अंचलाधिकारी एवं थाना में थानाध्यक्ष है। बंदोबस्त जमीन जिसकी जमाबंदी कायम है उसे रैयति अधिकार प्राप्त है। सीपीसी की धारा 05 के अंतर्गत सिविल न्यायालय का अधिकार नहीं है कि बिहार सरकार की जमीन को किसी को स्वामित प्रदान कर दें। स्वामित उसी का है जिसे सरकार ने बंदोबस्त किया है। अधिनियम संविधान से बड़ा नहीं है , फिर भी संरक्षित काश्तकार बेवजह परेशान है और गैर अनुसूचित जाति के दबंग लोग अनुसूचित जाति के विरूद्ध अनुसूचित जाति को आगे कर दो पक्षो के बीच भूमि विवाद बताकर लोक सेवको को गुमराह कर रहे है।

पत्र में न्यायविद् मधेश्वर पासवान अपने पत्नि किरण देवी के साथ गैर अनुसूचित जाति द्वारा अनुसूचित जाति को आगे कर कारित घटना का हवाला देते हुए कहा है कि गैर अनुसूचित जाति के दबंग लोग अज्ञानी, अशिक्षित अनुसूचित जाति के लाचली लोगो को आगे कर बंदोबस्त धारी को मकान बनाने में व्यवधान डाल रहे हैं, जबकि मेरे पत्नि किरण देवी अनु जाति के सदस्य को 03 डिसमिल जमीन अंचल रफीगंज के पौथू थाना क्षेत्र अंतर्गत पौथू बाजार में बंदोबस्ति से प्राप्त है जिसका सीमांकन भी हो चूका है इसके वावजूद भी गैर अनुसूचित जाति के संजय कुमार उर्फ संजय सिंह एवं चोकन सिंह द्वारा अनुसूचित जाति के महादलित पिंटू डोम एवं सुदर्शन डोम को आगे कर बंदोबस्तधारी को मकान बनाने मे बाधा डाल रहे है और तंग एवं परेशान करने का काम करते आ रहे है। जबकी पिंटू एवं सुदर्शन डॉम से बंदोबस्त धारी किरण देवी का कोई लड़ाई नहीं है । फिर भी अनुसूचित जाति के महिला के साथ जारी जूल्म व उत्पीडन की घटना का निवारण मे लोक सेवक आज तक अक्षम साबित होते आ रहे है और लोक सेवक गैर कानूनी हरकतो को रोक नही पा रहे हैं। पत्र मे कहा गया है अनुसूचित जाति जनजाति परिवार के साथ उत्पीड़न की वास्तविक कारित घटनाओं में राज्य की बदनामी होने का डर से कम से कम प्राथमिकी दर्ज हो रहे है। हमे लगता है कि राज्य के बदनामी के डर से कम से कम प्राथमिकी दर्ज करने का निर्देश भी कहीं ना कहीं अप्रत्यक्ष रूप से पदाधिकारियों का है जिसका नाजायज फायदा संबंधित लोक सेवक उठाते आ रहे हैं। एससी एसटी अत्याचार निवारण अधिनियम के मामले में पर्यवेक्षण पुलिस उपाधिक्षक को करने का प्रावधान है। वही एससी एसटी अत्याचार निवारण अधिनियम के मामले में पर्यवेक्षण पुलिस अवर निरीक्षक कर रहे हैं जिन्हें अधिनियम की जानकारी नहीं है। फलस्वरूप जमीनी विवाद कह कर अंतिम प्रपत्र दिए जा रहे हैं यह गलत हो रहा है। पुलिस को सीआरपीसी की धारा 02 की उप धारा (पपप) में बिना वारंट गिरफ्तार करने का अधिकार है। एससी एसटी अत्याचार निवारण अधिनियम की धारा संगीन हैं क्योंकि अधिनियम आईपीसी से निर्देशित होते हैं जिसकी पुष्टि अनुसूचित जाति जन जाति अत्याचार निवारण अधिनियम की धारा 06 करती है फिर भी अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण के मामले में सीआरपीसी की धारा 41 की उप धारा (1) के अंतर्गत बंध पत्र लेकर अभियुक्तो को पुलिस छोड़ रही है और इसकी नजायज फायदा उठाते हुए अभियुक्त भय मुक्त पुलिस के संरक्षण मे अनुसूचित जाति के पीड़ितो के साथ जूल्म करते आ रहे है । एक ओर पुलिस पदाधिकारी 07 साल की होने वाले सजा में आरोपितो सीआरपीसी की धारा 41 की उप धारा (1) का हवाला देते हुए बंध पत्र पर छोड़ रही है तो दुसरी ओर 03 साल की होने वाले सजा में आरोपितों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा रहा जो सर्वथा अन्याय है। ऐसा प्रतित होता है की अपने कर्तब्य के प्रति राज्य सरकार जबाब देह नहीं हैं। माननीय अनिल किशोर यादव आई जी कमजोर वर्ग के अपराधीक समीक्षा प्रतिवेदन को अध्यक्ष करते हूए अनुसूचित जाति के साथ अत्याचार के मामले में एसपी औरंगाबाद द्वारा सभी थानाध्यक्षो को निर्देश देने की आवश्यकता है। अधिवक्ता मधेश्वर पासवान ने कहा जिले के रफीगंज अंचल के पौथू थाना अंतर्गत मेरे पत्नि किरण देवी के नाम 03 डी समील जमीन बंदोबस्ती से प्राप्त है जिसे गैर अनुसूचित जाति के दबंग लोग कब्जा करना चाहते है जब मनसा सफल नही हुआ तो अनुसूचित जाति के विरूद्ध अनुसूचित जाति के दो डोम को खड़ा कर दिया गया है और उसके आड़ में गैर अनुसूचित जाति के दवंग लोग एक अनुसूचित जाति के महिला को बेदखल कर बंदोबस्त जमीन पर कब्जा करना चाहते हैं, जिसमें दर्जनों प्रशासनिक आदेश संबंधित अंचल अधि कारी रफीगंज तथा पौथू थाना एस एच ओ को प्राप्त है।

अनुसूचित जाति - जन जाति अत्याचार निवार अधिनियम का अन्देखी तथा उक्त मामले में वरीय पदाधिकारी के आदेश की अवहेलना , लोक सेवक के संरक्षण में अनुसूचित जाति के सदस्यों के साथ जारी जूल्म तथा घटनाओं की पुनरावृति पर रोक लगाने हेतू यथोचित विधिसम्मत कार्रवाई करते हुए जूल्म व उत्पीड़न के शिकार अनुसूचित जाति के एक महिला को न्याय एवं अधिकार दिलाने की मांग किया गया है। फिर भी जुल्म जारी है। ●

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

शराब माफिया के तांडव से दहल उठा तेलहारा

● अनिल कुमार मिश्र

अम्बा थानाध्यक्ष हिजड़ा हैं के नारो से अम्बा थाना क्षेत्र के अम्बा चौक 05 मार्च 2020 को गुंजता रहा तथा पुलिस प्रशासन मुर्दाबाद के नारे लगते रहे। देखते ही देखते थानाध्यक्ष अम्बा के विरोध तथा मृतक के परिजनो के समर्थन में सैकड़ो लोग रोड़ पर उतर गये और अम्बा मुख्य चौक को जाम कर दिया । प्रदर्शनकारी थानाध्यक्ष अम्बा विरेन्द्र पासवान पर कार्रवाई तथा हत्यारो पर प्राथमिकी व गिरफ्तारी का माँग कर रहे थे। अम्बा बजार का मुख्य चौक कई घंटो तक जाम रहा और कुछ लोग मामले की लिपा पोति मे भी लगे हुए दिखे। आखिर हत्या की मामले में प्राथमिकी दर्ज कराने, हत्यारो की गिरफ्तारी, अपराधकर्मियों तथा शराब माफिया को पकड़वाने के लिए जनता ,मृतक के परिजनों, समर्थको को सड़क पर क्यों उतरना पड़ रहा है और संबंधित अधिकारी क्या कर रहे है। थाना को सूचना के बावजूद भी बेलगाम अपराधकर्मी तांड़व कैसे मंचा रहे है यह लोगो के समझ से परे हो गया है और हर लोग मीडिया से सवाल करते दिख रहे है।

अम्बा थाना एस एच ओ विरेन्द्र पासवान के संरक्षण मे बेलगाम अपराध कर्मियो एवं शराब माफिया का ताड़व अम्बा थाना क्षेत्र में सर्वविदित है फिर भी पुलिस संरक्षण में हमले व हत्या तथा खुलेआम शराब विक्री अंतिम प्रकाष्ठा पर है। जन शिकायत के वावजूद भी अलाधिकारी आखिर मुकदर्शक क्यों है और थानाध्यक्ष के विरूद्ध कार्रवाई क्यों नहीं हो रहा है, इसका जबाब किसी के पास नहीं है। जनता का यह आवाज मीडिया को भी झकझोर कर रख देता है और सभी दबे जुबान कहते हैं थानाध्यक्ष का लापरवाही व कर्तव्यहिनता तथा गैर जिम्मेदाराना हरकत के कारण लफुओ द्वारा कारित हिंसक घटना ने अंतत: बहन के विवाह में एक भाई का जान

ले लिया और थानाध्यक्ष हत्यारों से माल बटोरने में लगे रहे। विश्वस सुत्रो एवं भीड़ की बात मान ली जाय तो थानाध्यक्ष अम्बा विरेन्द्र पासवान के संरक्षण में शराब माफिया सह गाँव के लफुआ बाहर के एक सहयोगी के बदौलत अम्बा थाना क्षेत्र के तेलहारा गाँव में एक बेटिया के विवाह में तांड़व मचाते रहे और थानाध्यक्ष फरियाद सुनने के जगह मुकदर्शक रहे।

सूत्रो की बात मान ली जाये तो थाना को सूचना देने के वावजूद भी अपराधकर्मी खुलेआम हथियार लहराते हुए घुम रहे थे और अम्बा थाना के पुलिस के सामने शराब माफिया मृतक युवक को बेरहमी से पिट रहे थे फिर भी पुलिस युवक को बचाने का प्रयास नहीं किया और न ही हमलवारो को पकड़ने का प्रयास किया। अंतत: पिटाई से युवक का ईलाज के दौरान मौत हो गया। घटना 02 मार्च 2020 की है गिरफ्तारी की बात ही छोड़े, अम्बा थानाध्यक्ष विरेन्द्र पासवान ने प्राथमिकी भी दर्ज नहीं किया है। बताया जाता है कि अम्बा थानाध्यक्ष ने तेलहारा निवासी धर्मेन्द्र साव के बेटिया का शादी तो करा दी परन्तू उत्पात मचाने वाले शराब माफिया के बचाव में जुड़े रहे और उन्हें यह उम्मीद भी नहीं था कि हत्यारो का बचाव इतना बड़ा हंगामा का रूप धारण कर बैठेगा। ऐसे भी मैनेंजमेंट गुरू के नाम से विख्यात अम्बा थाना एस एस ओ के लिए यह झटका सबक लेने का दिन है परन्तू विभागीय खामियों का फायदा थानाध्यक्ष उठाते आ रहे है और दौलत कमाने के चक्कर में कमजोर लोगो पर जुल्म ढाहते आ रहे है, जिसकी सुनवाई कहीं भी नहीं हो पा रहा है। फलस्वरूप अम्बा थानाध्यक्ष कानून को अपने हाँथो का खिलौना बना चुके है। पुलिस अपराधी विचौलिया गठ जोड़ का तांड़व देखना है तो श्री मान आप भी बिहार राज्य के औरंगाबाद जिले का अम्बा थाना क्षेत्र में आ जायें, जहाँ हर लोग पुलिस संरक्षित गुंड़ो के आतंक से कांप उठते है और अम्बा थाना मे प्राथमिकी तक भी दर्ज नहीं होता है आखिर क्यों? ●